

कंचन करत खरौ

ब्रजभाषा-उपन्यास

गोपाल प्रसाद मुद्गल



राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी,

नो-267 भाभा माग, तिलक नगर, जयपुर

सम्पादक
डा विष्णुचन्द्र पाठक
अध्यक्ष
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी

प्रकाशक
सचिव
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी
सी 267, भाभा मार्ग तिलक नगर जयपुर

।

लेखक
गोपाल प्रसाद मुद्गल

आवरण
सन्त गोस्वामी

पता सस्वरुप 500 प्रति
मार्च 1990

मूल्य 50 रु मात्र
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी

मुद्रण-स्थान
श्री ३३३ प्रिन्टर्स,
आर्य नगर जयपुर-४

जिनकी नेहिल भाव गरी दिव्य प्रेकसने
सैं " अंचन कृत खरो, दिरो गये"
एहे तेजसी रिखि श्री तेजाईंजी कुं
दादर समर्पित ।

गोपालयुक्त

विसै सूची

पृ० स०

प्रकासकोय	1
उपन्यास के ताने बाने	3
साँची साँची बात लेखक की कलम ते	13
1 छारी राजस्थान की	1
2 चिंता	13
3 दीर धूप	23
4 सकल्प	23
5 विरोध के सुर	41
6 परित्याग माम की	63
7 बँधे दोऊ बँधन म	70
8 बज्रपात	78
9 उमग की रग	91
10 ऐसी करनी कर चली	113
11 परिसिष्ट —उपन्यास पै प्रतिक्रिया	133



प्रकासकीय

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी की स्थापना राजस्थान सरकार के सदप्रयत्नन ते जनवरी 1985 मे भई। अकादमी की स्थापना के सगई आधुनिक साहित्यिक ब्रजभाषा गद्य की सुरआत भई है। अकादमी ने अपने पाँच बरस क कायकाल मे ब्रजभाषा गद्य के छत्र म आधुनिक विधान प अपनी मुख पत्रिका 'ब्रजशतदल' के मच सौ कई नई परपरा स्थापित करव की किंचित प्रयास कीनी ह। राजस्थान क अग्यात कवि अ क, मारवाड अ क, हड़ौती ब्रज अक आदि विभिन्न अकन के द्वारा समीक्षा के क्षेत्र मे ब्रजभाषा गद्य की स्थापना करी गई अरु याके सग ब्रज सस्कृति अ क ब्रज कला अ क अरु नाथद्वारा अ क के मच ते राजस्थान क विभिन्न भागन म फली भई ब्रज कला सस्कृति कू पली दर्फे एक स्थान प लिखिबे की प्रयान कीनी गयी। याके सग कहानी अ क, कवयित्री अ क, रेखाचित्र अ क एकाकी अ क अरु उपन्यास अ क के द्वारा गद्य की आधुनिक विधान प ब्रजभाषा म लिखिबे की प्रयास कीनी गयी। अपने या कायकाल म अकादमी न चार सी पता की राजस्थान की मरुभूमि मे फली सरस ब्रज कला सस्कृति ब्रज कला अरु सस्कृति' ग्रथ म समेटवे की प्रयत्न कीनी है। याके सगई अकादमी ने आधुनिक ब्रज गद्य विधा प रचनात्मक साहित्यिक बभव कू उजागर करवे बारे तीन सी पत्रान की 'आधुनिक ब्रजभाषा गद्य ग्रथ ऊ प्रकासित कीनी है।

ब्रजभाषा म उपन्यास शिल्प की अभाव ही। याते पूव वृदावन के शरण विहारी गोस्वामी की पछरी की लौठा अरु श्याम सुन्दर शर्मा की 'मनसुखा लघु उपन्यास प्रकासित भये है। अकादमी द्वारा प्रकासित उपन्यास काल त्रम की दृष्टि सी ब्रजभाषा उपन्यास जगत की तीसरी रचना है। आकार अरु आधुनिक जन-जीवन के सघपमय डगर एव भूत वतमान अरु भविष्य के सगम प मानव जीवन के करनीय की यथाय व्याख्या उपन्यास क मच ते ब्रजभाषा म अबई तानू देखवे मे नाय मिली ही। विद्वान लखक श्री गोपाल प्रसाद मुगदल ने 'कचन करत खरी उपन्यास म उपन्यास कला की सपूण विससतान कू ब्रज अचर की सीधी साधी कथा मे समटव की प्रयत्न

कीनी है। कचन करत खरी उपयास साहित्य जगत मे जेऊ प्रमानित करगो के आधुनिक जन जीवन की क्या अरु मानव मूल्यन की स्थापना के आलोक मे, सामाजिक जीवन के विकास के भावन कू प्रकट करवे की ब्रजभाषा की शक्ति काऊ तरियां ते कम नांय।

कचन करत खरी म आपकू अधुना राजस्थान के ब्रज क्षेत्र के सामाजिक अरु पारिवारिक जीवन की मटीक शाकी ऊ मिलेगी। ब्रज के गामन मे आधुनिक जन-चेतना के सुर जद्यपि धीरे धीरे फलवे लग है परि आजऊ ह्यां के निवासी अपनी सस्कृति की परम्परान कू धरोहर की तरियां अपन जीवन म धारन करे भये हैं। पुराने अधबिसवास अरु रूढिबादिता ते अवई ब्रज अचर पूरी तरियां मुक्त नाय भयी है। भोरे परि स्वाभिमानी ब्रजवासी निघनता अरु उपक्षा क सनास म पिसते भयेऊ अपने फटेहाल मेई मस्ती के आलम मे जीवे के कसे थभ्यासी बन गये है याकी यथाय लेखीं जोखी उपयामकार की लेखनी ते या उपयास मे निसरत भयी है। साहस सक्ल्प अरु कम निष्ठा की त्रिवेनी के सगम पै लेखक ने सफल जीवन के प्रयाग को निर्मान कचन करत खरी म करे जन जन कू सफनता को रहस्य प्रकट कीनी है। स्वात ब्रज क नारी जगत कू लेखक ने जो सधमसील पूजनीय आदश या उपयाम म टीनी त्रितक जात पूव ब्रज के साहित्य के क्षेत्र नाय लिया गयी।

आशा है ब्रजभाषा अकादमी की 'कचन करत खरी' उपयाम प्रकाशन की प्रयाम ब्रजभाषा गद्य विद्या कू आगे बढाइने मे सफल हायगी ऐसी हमे आसा है। तिहारे मुयाव अरु मागदमन की हम स्वागत करे हैं।

डा० रामप्रकाश कुलश्रेष्ठ
मन्चिव
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर

या उपन्यास के ताने बाने

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी अपनी स्थापना के चौथे बरस में आपके हाथ में निम्न ब्रजभाषा में 'कचन करत खरी' उपन्यास भेंट कर रही है। ब्रजभाषा में गद्य में वृद्धि और सौंदर्य भरी सुगंध और वचन वक्रता भरी वाग्बद्धता की भीनी-भीनी रमणीक शक्ति भरी पड़ी है जो पद्य में है। यही प्रमाण आपको भैया गोपाल पसाद मुद्गल के उपन्यास कंचन करत खरी में मिलेंगे।

वचन करत खरी ब्रजभाषा में राजस्थान की धरती पर प्रकाशित पैला उपन्यास है। या उपन्यास में राजस्थान के ब्रजभाषा भाषी भूभाग की कथा को मूल आधार बनाया गया है। नारी प्रधान कचन करत खरी उपन्यास में लेखक ने तीन पीढ़ी की कथा को समसमय के प्रससनीय प्रयास कीनी है। समाज के भुजन में नारी की महत्व और उनके समसमय जीवन में निकरे भये चेतना के सुर कस टूटे भये परिवार के निर्माण की शखलान को एक-एक करके जोड़े हैं याकी साचो खातो या उपन्यास को मूल केन्द्र बिन्दु रहीं है। सधय के आलोक में ई सच्चो कम की पथ दीखे है। मानव जीवन में अनेक उतार चढ़ाव आये है। भीतेरे कष्ट होंय, अध विस्वास और रुद्धिवादिता के कारण भीतरी पीडा शैलीनी पड़े, समाज के नये विचार, प्रगति की नवीन धारा की घनघोर विरोध करे है। परम्परा और नवीनता में टकराव होय है। ई आज की नाय हर युग की कथा है। पर समाज में ऐसे लगनशील और कमठ व्यक्ति होय हैं जो परम्परा की आदर करते भये नये विचारन की उवरा भूमि को अपने कमठ कम की सक्ति त जोत क बाय नवीन चेतना के अनुकूल बना देय है। 'कचन करत खरी' के नायक चणोर और चंदा याई तरियाँ के पात्र हैं। कम की निष्ठा इन दोनू पात्रन की चेतना की मूलबिन्दु है। एक समे तो ऐसीऊ भाव है जब चंदा अकेली रह जाये है। जीवन के स्थान स्थान पर बाय एक त एक असहनीय दुख चलने पड़े है। लगे है कि वू अब सदा सर्वदा को टूट जायगी, पर निरासक्त भाव में कर्म के प्रति निष्ठा चंदा को जीवन निर्माण की एक नयी रास्ता आलोकित करे है। आखिर में जीत कर्म निष्ठा की होय है। नायिका प्रधान कंचन करत खरी उपन्यास में नारी के महत्व को समाज और परिवार की प्रगति के सम उपन्यासकार ने बखूबी त दिखायवे की प्रयाम कीनी है।

कर्म की निष्ठा की आराधना के संग सग 'कचन करत खरी' उप-यास म ब्रजभूमि के जीवन की अनूठी प्रस्तुतिकरन करिबे की लेखक ने उल्लेखनीय प्रयास कीनी है। ब्रजभूमि के गाम की रीति रिवाज, उत्सव, पारिवारिक जीवन व उतार-चढ़ाव के सग सग भौरे ब्रजवासीन की सिगरी जीवन शैली लेखक ने बखूबी या उप-यास की घटना अरु पात्रन के परस्पर वातालाप म उतारी है। ब्रजभूमि के पारिवारिक अरु सामाजिक जीवन मे बालक व जन्म ते लक वाकी मृत्यु पयत तक की परिस्थितीन म कहा कहा उतार चढ़ाव आमे ब्याह सादी क औसर प बिचौलिया कैसे द्वै मिलत भय परिवारन कू ईसबिस छण्ड छण्ड करिबे की प्रयत्न कर है। य सिगरी ब्रजभूमि की जीवन सली अरु बिनकी मर्यादान के उतार चढ़ाव व संघर्ष की कचन करत खरी उप-यास मे लेखक की बलम ते सटीक बनन भयी है। सतोसी मस्त मोला ग्रन्थवा भिमारी ब्रजवासी के जीवन की सिगरी विससतान की निचोड 'कचन करत खरी' उप-यास की एक एक घटना म प्रतिबिम्बित भया है।

'कचन करत खरी' उप-यास मे विद्वान उप-यासकार ने औप-यासिक शिल्प की आँखी पात निर्वाह कियी है। उप-यास शिल्प की रक्षा करत भये लग्नक न बडी सादगी अरु सरसता के सग करनीय कू याम प्रस्तुत कीनी है। तीन पीढी की कथा म एक नारी के सघस कू उजागर कर उप-यासकार ने सामाजिक अरु पारिवारिक जीवन के सच्चे रचनात्मक विकास म निरासक्त कर्म के महत्व कू मनाहर ढग ते प्रतिपादित कीनी है।

औप-यासिक शिल्प व 'निकप पे कचन करत खरी' की विवचना प्रस्तुत करनी चाह है।

कचन करत खरी कथा की डगर —

कथानक ब्रज अंचर की है। सिगरी कथा भरतपुर डीग अऊ गामन व आस पास की है। उप-यास की कथ्य संक्षेप भयी है —

बोहरी खोलेलाल अरु बाकी बेटी चदा —

भरतपुर की चामेलाल कम ब्याज प बोहरगत करती। भली आदमी ही। गरीब भुरगान व ताई भलाई की सोचती। बाकी भई इकतीती बटी "चदा। बोहरे की छारी ठाठ बाट सी रहैई। समे नै पलटा जायो। कई साल अकाल रह्यो। याने बाकी कमर तार दई। बू हर साल अपने आसामीन की झोरी भरती रह्यो। चाए अपन घर चलाय व लाले पर गए। इत बाकी छारी सोनह बरस की है गई। बाकी मैया अचो अरु बाकी बहू बाए छोदि छोदि न छाइ जा रही व छोरी व पीरे हाय कर जाए। चांगे तहा कहू जानी म्हाई लैन दन मोलभाय काम ए बिगार देती। चदा रूपवती पढी लिखी ही। सब काम म हुस्ियार पर माली हालत बिगर जाव त नोज हु नाय करती। चदा की कई बर दिवारो भयी पर माटी मड नई चड़ी।

चदा अरु चकोर

अखीर मे चदा नई हल निमासी । बाकी एक परिचित वालेज की साथी ही चकोर । वाद विवाद में हमेसा पहली के दूसरी नम्बर पाती । चदा ऊ वाद विवाद मे भाग लेती । 'दोनोन की जान पहचान है गई । एक पोत दहेज के विरोध मे चकोर नै वाजी जीत लई । बडी बाह्याही मिली । चदा न बाते पूछी, 'दहेज के विरोध मे जो बात होठन सी कही है बू होठन तकइ रहैगी के जीवन मे उतारो जाइगी ?' ता समे चकोर नै कही ' या बात की उत्तर तो समई देगी पर हाँ मास बू अपनी बात की धनी होनी चइए । इन बातन की याद दिबावे के ताई चत्ता नै चकार की नब्ज टटोरी । चकोर चन्दा सौ प्रभावित तो हतई ही । चदा के घर की गिरी हालत ने चकार के मन मे और सहानुभूति जगा दई । चदा नै ईऊ बता दई क बू जाति ते बाढई वामन है । चकोर तो गुन की गाहक ही । बाने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया ।

पोरे हाय चदा अरु चकोर के —

चदा नै अपनी बात चिट्ठी के माध्यम सौ पिताजी सौ बहनी चाही । पाती त्रिखिके बिनकी डायरी म धर दई । रात बू पाती पढी और राधा बू सुनाई । सबरे राधा नै गिगरी बात पूछी तो चदा नै मिया बू सतोस दिवा दियो । इतकू चकोर चन्दा ते तो हाँ करगो पर गाम मे पहुँचते ई नथिया ए अतरजातीय ब्याह की बात पसद नइ आई । धान चकोर बू समझायो पर चकोर नै तो कलमाई नई भर्यो । बाके अच्छे अच्छे ढोक लगा रहे पर चकोर तो बात की धनी ही । चकोर के अतर जातीय ब्याह की बात गाम बारेन बू नागवार गुजरी । चकोर अपनी बात पे जमो रह्यो । गाम नाराज हो ती गयो । तबई एम ए की रिजल्ट आयो । चकोर नै एम ए टोप कियो । बितकू चदा नैऊ बी ए पाम कर लियो । चकोर अतर जातीय ब्याह कर रह्यो है या बात बू लक अऊ गाम म पचायत भई । किसोर सरपच, मूला पच, परमान लम्बरदार नै नथिया ऊ समझाई पर बात बैड गई । नथिया की सग देवे बारो बाकी घरम भैया बहोरी ही । नथिया अरु बहोरी के घर छेक दिये । बात हाँ तकई नाय रही । चकोर की मढया प पत्थर बरसबे लगे । एक रात तो छप्पर म आग लगा दई । मिया बेटा बच तो गए पर गाम बारे नै हमदर्दी क बोनऊ नई बोले । जब बे अऊ छोटिके चलवे सग ता चकोर की लकचरारी की बागज भरतपुर ते आयो । मिया बेटा दुखी दुखी भरतपुर पाँच । भरतपुर मे चकोर के यार राजेन्द्र न बाकू बसायबे मे पूरी मदद करी । भरतपुर पाँचत ही चदा अरु चकोर की ब्याह आय समाज मंदिर मे साइगी सौ भयो । चौखे राधा जस्ट अची नै चदा के पोरे हाय बरके चैन की सात लई ।

बनी घोडा टूटो —

ब्याह पाछ, चकोर के भाग्य नै जार मारी । बू आर ए एस भयो अरु जी डी ओ है के डीग म ई आयो । चोरे दिनान मेई बू चारो और पुजगो । एक दिन अऊ गाम बारे सकोच के सग मापी मागवे आए अरु बाए अपने गाम बुनाबे की मोती

गए। चकोर नै अपना पुरानी बर भाव उठावके ताव म रछ दियो। सब गाम बारन सी बू प्यार सी मिल्यो अरू दूसरे दिना अऊ पौच गयो। म्हा खूब जलता भयो। जब बू डीग बू लीट रह्यो। तबई एकसीडट है गयो-अस्पताल म धान दम तोर दियो। बाई सभै चंदा के छोरा भयो। नथिया ने अपने बेटा के मरवे की सुनी नौ बाकी हाटकेल है गयो। बूच चल बसी। रह गई चंदा अरू बाकी गोद म एन दिना की छोरा। राजेन्द्र राधा अरू चोये चंदा प छाती दके परे रह। चंदा बू सोसल एजूकेशन आफिसर की नौकरी दिवाय क राजेन्द्र नै दम लई। राधा चंदा बू डीग मे सम्हारनी रही। चाहे अपनी मैया बू भरतपुर म सम्हारनी रह्यो। चंदा न अपन बेटा दिवाकर बू पढायो लिखायो। पिलानी म बी ई करवायो। पिलानी मे दिवाकर चुनावन मे अध्यक्ष चुनो गयो। बाप कातिलाना हमला भयो पर जान बच गइ। चंदा न म्हा जाइक अपन ब्योहार सा सबको मन जीत लियो। एक अच्छी मैया की उत्तम ब्योहार देखिक सब चंदा क भक्त है गए। सबक प्रेम की पाठ पढायो।

सघष अरू स्रजन की सुग ध —

दिवाकर भरतपुर आयके फेक्ट्री में इंजीनियर बन गयो। बाकी ब्याह सादगी सी रजनी के सग भयो। रजनी धार्मिक विचारन की महिला ई। एन बरस पीछे रजनी के छोरा भयो। नाम रखी गयो प्रभात। घर म खुसी छा गई। थोर दिना पीछे जनम जाठे आई। घर मे ब्रत राखी। रात बू प्रसाद लब दिवाकर अरू रजनी मन्दिर बू गए। अचानक रजनीत नगर के चौराहे पे एकसीडेंट है गयो। दुरभाग्य सी दोनू मारे गए। चंदा पे ओर ब्रजपात भयो। का करती सहनो परी। हां चंदा न हिम्मत नई हारी। प्रभात कू लैके अऊ गाम पौची। अपनी पेंशन ग्रेचुटी की धन एक फारम बनायब म लगा दियो। एक खाली छोरीन की स्कूल। आवासीय स्कूल बाकी पढाई सेवा भाव देखिके सब दग रह गए। दूर दूर तक नाम है गयो। प्रभात दू होनाहर निकस्यो। बान स्कूल मे प्रथम प्रायक खूब नाम कमायो। एन पोत बान एक सुटरेन के गिरोह बू पकडवायबे म कमाल कर दिखायो। बाबू राष्ट्रपति पुरस्कार मिल्यो। चंदा सतुष्ट है गई क प्रभात कचन है गयो है। या तरिया सबकी सेवा करती रही। चंदा कू एक रात लकुआ की अटक भयो चंदा नऊ जान लियो पछी उठनो चाहे। बान सब इकट्ठे किए ट्रस्टीन क प्रभात सौप के कही याकी सादगी सी ब्याह कर दीजो प्रभात ते कही जब तुम आए जगत म जग हासी तुम रोइ। ऐसी करनी कर चलहु तुम हासी जग रोइ। इतनी कहके चंदा सदा कू मोन है गई।

कथा के ताने बाने अरू दरपन पात्रन की

या कथानक म यो ती अनीख किशोर मूला परमाल रगी बहारी राजेन्द्र दिवाकर, बनूआ प्रभात भरत जादि पुरुष पात्र है पर चनोई प्रमुख है। चनार की मत्यु के पाछ दिवाकर अरू प्रभात उभर के आए हैं। बीच बीच म राजेन्द्र बहारी भरत जम पात्रन क माध्यम सी कथानक आम बढी है महिला पात्रन मे चन्दार् प्रधान है

राधा, अची नथिया सहयोगी स्त्री पात्र है। पात्र धरती व अपने बीन के है। बिनव त्रिया कलाप अपने जैसेई त्रियावलाप है। जैसे समाज मे देखो है बसोई पात्रन के माध्यम सो ज्या की ज्यो उतार दियो है।

दूसरे की बहनुदी कू देखिके जरबे, अरू बुढवे बारे रगो जस पात्र हैं। बनेंती भजनानदी है, पर मुख मे राम बगल म छुरी बिनकी धरम करम है। चढी छान उतारवे मई बिनै मजा आव। बिनते कोऊ छोरान के नाते गोते पूछवे की सहयाग माग ता सूधे म्हीं बात नाय करे। सो सो एहसान दिखावे। अनीखे जसे पात्र हू है जा यसेष्णा व मारे भए है। अपने मित्र चोखे की मदद तो करे पर यसेष्णा के भूखे हैं। कबऊ कवऊ द्वाद के झूलान मऊ झून। बदनामी की सुनिके हिल जाए। छोरा छोरी की ब्याह जच्छी है जाय ती चेहरा प चमक आ जाय। किशार, मूला परमाल जस सरपच अरू पच हैं, जो लकीर के फरीर है के नई बातन न अपन गर नाय उतारें। जब चकार बी डो मो है जाए तो भय क मारे बिनकी आख खुले। राजद्र जस यार आजऊ मौजुद है जा शहर म नवयुवक मडल बनाय के दहत्र व विराध म धुजा ऊची करे। बदलाव व तई नई मायतान कू स्वीकारे। अपनी कतय निभाइब म जीवन की सार समझे। चकार क मर जावे व पीछे अपनी भाभी चंदा कू नोकरी दिबाय कई दम ले।

दिवाकर की चरित्र बडी सतुलित अरू आदसमय है। बू पिलानी म अपने मानधीय गुनन सो सबन की है जाए। सब वाके है जाय। अपने बुद्धि कौसल सो अपनी अरू अपन कालेज की नाम करे। याही तरिया प्रभात दिवाकर सो हू आगे निक्स जाए। बू मधावी दयालु सवाभावी निर्भोक् बालक है। अपनी जान जाधिम मे डार केऊ सवा कर अरू नाम बमाव याही सो राष्ट्रपति पुरस्कार पावे।

चोखे या कथानक मे प्रारभ सो ई दिखाई पर। भलमानसहन बाकी रग-रग म बसी है। तबई तो घर की घन्मा करके किसानन की मदद कर। रुपिया डूब जाए पर बू काऊ प जोर न जनाब। काऊ व खिलाफ नालिस डिगरी नाय करावे। दुखन नै देखे अरू झेले। समाज म, बिन पइसा सब सूने जब देखे तो अबल दुरूस्त है जाय। घर म दिन रात मैया भरू बहू के कुचरके सुने। सो सो ताने सुन। हिम्मत नाय हार। परिस्थितोन सो जुझ। बू दकियानूसी नाए—नएण ए स्वीकारे। नई पीढी सो मल करके चल। चकोर या उपयास की प्रमुख पात्र है जो कम के पय पै सबटन बू झेलिके आग घड़। बू बूसाग्र बुद्धि तानिक नुसल बबता, बमंठ सहनसील समाज सवी, उदार हृदय, मिलभायी, मधुर भासी है तबई तो सबके हृदय की हार बन जाए। गाम के घपडेन बू सहतीभवो अग्यात अघवार मे निक्स परे अपन हाथ पामन व बल प। एक दिए भरू तूपान की सो बहानी दिखाई पर। बान हिम्मत हारके बठनो तो सीघो ई नाए। नए बिचारन की युवन अवस्मात चल बसे ई र जाने बीनसी विडम्बना है। ई समझ सो परे ह। जा सबके हित म रत ह बाकी जीवन याही चसो जाए ई रहस्य बनी रहो है।

नारी पात्रन म च'दा प्रमुख है। उपास की नायिका बूई है। कथानक के सिगरे जाने बाने बाई व और ढीरे बुने भए हैं। जसी वहे बयार पीठ तब तैसी दीज क अनुगार ठाठ बाट सी रहवेबारी च'टा धीखा आते ई सादगी सों रहे। मकट के समे स्वय हल निवासवे बारी सकट म सीना तान कं ठ डी हैय बारी गुनन की 'दान है। लज्जा सी विभूसित, समाज सेविका सहयोगिनी कमसीनता सवेदनसील आदि श्रेयाचित गुनन सों रची पची है। समाज म महिलामडल बनायकं वाल विवाह, मौमर दहेज, बहु विवाह आदि की विरोध कर समूह विवाह जरू गा'गी सी विवाह करायकं आदश उपस्थित करे। युगानुरूप नए नए कामन म रुचि ले। छोरीन कू आवासीय पाठशाला, पाम, घरेलू आमीण उद्योग खोलिकं मसीन के युग मे आत्मनिभता की पाठ पढावे। जो बाऊ माके सपक म आगे बाड कू क चन बनाय दे। सही मायने मे च'दा पारस है। राधा अरू अची सामाय नारी है। बेसुख म सुयी अरू दुख म दुखी लिखाई परे। ज ची अपनी परम्पगत बिचारधारा सों प्रसित है। कबऊ-कबऊ धुरपट्टीन मुनायकं त्रायबेली खडी कर दे। राधा हू नीछ रहवे बारी नाए। बू चोखे नी चोखी खबर ले। नथिया नारी पात्रन मे दया की पात्र है जो जीवन भर गरीबी मे रही है। मेहनत मजुरी करकं छोरा लायक बनायी है। गाम बारेन ने बू दुत्कारी तऊ गाम की मोह नाय छोडी। गाम बारे जि'नै घर मजारो जब बाके पास आए तो बू खिल उठी रोम रोम नाच उठी। बाय देत्री की सग्या दे तो कोई जतिस्थोक्ति नाय। या तारिया सों जितकऊ पात्र ह वे समाज के लोगन की प्रतिनिधित्व करवे बारे हैं। नई पीढी अपने आप साचेगी कं किन पात्रन की अनुसरन करे। किनकू छोडे।

बातचीत की आकपन —

कथानक कू आगे बढ़ावे बारे मवाद याकी जान है। 'ब'भापा मे कहै कं इनकू लाक बोनी मे कहै। जसी पात्र बसेई सवाद। धारे मे घनी बात कहव बारे। गागर मे सागर की नाई। कहावत मुहावरेन मी भर पूरा एक उदाहरन देखी-चोखे न रगो ते पूछी —

अंजी बोऊ और छोरा बतायी ।

'चा नइ जचो ?

अजी जचो ती खूब पर तेते पाम पसारिये जेती लाबी गौर ।

'अरे ताला यो कह ज्यो ज्या गोह मोटी होय त्यो-त्या विल सकरी होय ।'

ठेठ ब्रजभाभा के ठाठ सम्वादन मे विखरे परे है। चकोर जब अ तरजातीय व्याह के नाई नक मोह खान दे तो लोगन के तरिया तरिया क कथन दखी—

“हमारीई बिल्ली हमसी म्याऊ कर । कल परसी कौ छोरा हमारी सामनी करे ।”

“अजी राठ की माड है रह्यो है ।

“लाला ऊपर वू मत धूके ।’

‘बेटा गाम मे रहबी भूल जाइगी ।’

“अगर हमे मालूम ती होती एसी कौघई नई हीन दैत जाप आज मक्खी भिना भिना रही है ।’

‘बेटा ज्वानी मे अली मत बन । ज्वानी हमपेऊ आई । आगी पीछी मौचले ।

इन कथना मे स्वामावित्ता अपन आप आ गई है ।

सामाजिक परिवेस —

दोम काल अरु वातावरण की परिधि मे ई उप-यास आजादी क, पीछे घटनान वू समट भए है । अज अ चर माहि सन् 1948 के पाछे सयाज म का परिवतन आयी है । गामन म पुरानी लकीर पीटव मे अबई तक लोग चून बाधके पीछे पर जाय । पचायत बैठे ओर कहर डहावे म अबऊ पीछे नाप रहे । नए युग की लहर सी अबई दूर अनकन रुद्धि मे वधे भए ह । यास तीर सी दहेज के भूत सी सबई सताए भए है । तौऊ आसा की किरन नई पीढी की बुलद हीसली दिखायो है । आजादी क पाछे पचायत समिति, महिला मडल, नवयुवक मडल नई रोशनी लाइवे वू है ।

उप-यास जैसी वातावरण बसी ज्ञानी अनकन ठोरन पे बिखरी है । अऊ गाम म पचायत को सएप देखा—

“गाम क मन्दिर म पचायत जुरवे लगी । गाम के लोग अपने अपने फँटान ने बाध के; इकठोरे है गए । सब अपनी-अपनी मौछन पे हाथ फेरिबे लगे । गाम की इज्जन के ताई म्यान म त निकसवे लग । दा समे एसी लगी के राम के धनुस तागव पे विराधो राजा बोखला क कह उठे होय, का धनुस टटवे तई म्याह मारइ है जान दिगें ।’

याही तरिया होरी की त्योहार मनाते समे की वातावरण चित्रित कियो है “सत्रन नै मिलिके पहल धुन्डी की उत्सव मनायो । धूल धक्कड सी हठिके रग गुलान की खूब होरी खिली । अज के खूब रसिया गाए । ढप डोन चग लँके नवयुवक मडल भरतपुर की मलीन मे निकम परी । ‘आज बिरज म होरी रे रसिया होरी गामत-गामत हारी के रस मे डूब गए । सबन के चेहरा रग अरु गुलाल म एम रग गए क पहचानब

मऊ नाय आय रहे। सब एक् दूसरे के गर सग रहे। होरी की मिलन सवन के मन क मेल कू दूर कर रह्यो। दुपेर तक घब के सब घूर घूर है गए।”

याही तरिया आय गमाज म ब्याह क समे की चित्रन देखी—“पंडित लक्ष्मीराम ने मुंदर बेदी की रचना करी। चारों ओर हरनी, गुनाल, मूंदी घाटी अरू कई रगन की अल्पना मानी गई। बेदी के चारा और मुंदर मडप बनायी। बेरा के पात चारा बोलनेन प लहरा रहे। बेदी के चारा और पत्तारन प गामग्री सजा कई गई। एक और ध्यो की पात्र रखी गयी, जामे खुधा परयो। ब्याह के ताई मिगरी तयारी है गई।

बानगी के रूप म तीनो उदाहरन मुक्तरे हैं।

ठेठ ब्रजभाषा की ठाठ —

या उपयास की भाषा ठेठ ब्रजभासा है। सरस अरू सरस। सनी अपनी अनूठी है गई है बहावन मुहावरेन के प्रयोग से। बहावत मुहावरेन ने याके मिठास में और रस घोर दियो है। कई एमो पना नइ होयगी जाम बहावत मुहावरे नई आए होय। कहु कहु ब्रजभाषा के सग उद् क शब्द आ गए हैं बिना भाषा का माध्यम बढायो है घटायो नाय। देखी चार लार्दन—‘चाहे ने जब चकोर की बडाई सुनी तो बाछ खिल गई। सोचिबे लगी अघे के हाथ बटर लग रही है। बाए ईक परसाकला याद आयो मेव मरी तब जानिए जब चालीसा होय। बडे बूटे वह गए हैं हरी खेती गवावन गाय जब जानो जब म्हीतर आय। बाऊ ने आधरी ते कही तेरो भया भ्रायो है। बाने कही भाग कहु तो भीत रही ह पर जब भुजा भरके भेट लुड गो तब मानू गो।’ सोई चीखे ने कही माटी मड लग जाए तब है। मसखरान प ते भस चौख लई जाय तब है। और देखो दो लाइन मुहावरेन भरी—“अपनी करनी प बे अपन आप गढे जा रहे। पर अब पछताए होत का जब चिडिया चुग गई खेत। सब कानाफूमी करते यार हमने अपने पामन आप कुल्हाडी मारी है। अब ती जसी करनी बेसी भरनी है। याही तरिया चित्रावन उपयास में ठौर ठौर प दिखाई पर। रेखाचित्र की शलक देखी चंदा के रूप बरनन म— बाकी आखिन में डल खोल की गहराइ, गालन प सेवन की ललाई, सासन म सालीमर अरू निसात बाग की गघ अरू वाकी देह माहि बेसर की शलक वाण कस्मीरन समझिबे कू भीतई।”

सदेंसो उपयास की—

या उपयास की उद्देश्य कम अरु भाग म कम प्रधान है यही सिद्ध करके दिखायो है। हम माने ग्यान सर्वोत्तम है। पर ग्यान की चरम सीमा कम सन्यास है जो गीता की मंत्र है। कमयोगी की तो हर कम लोक कल्याण के ताई हाय। चकार अरु चंदा के माध्यम से तथ्य कू उजागर किया है। कम करते भए वस्तु क उठाने परे,

तो उठान चइए । दुनिया म बई पुर्ज जो कर्म के पथ पे मर मिटे । चकोर नै नीतिपथ पे चलके कम की पत्नी नाय छोडी । सफलता अपने आप चरन तर आ गई । चंदा नै जब सौं होस सम्हारो तबई सौ 'चलबे की है नाम जिदगी मत्र वू आचरन मे डारो । याही सौ बू पारस भई । याही सौ बानै जाकू छुप्रौ बाई कू कचन बनायो । समाज म फेली कुरीतीन मे दहेज प्रथा वू दूर करबे के ताई भासन नाय दिए । चंदा अरू चकोर नै आदश रूप प्रस्तुत करके बतायो । या उपयास को एक उद्देश्य है ब्रज सस्कृति की याकी प्रस्तुत करिबो मस्तमौला प्रकृति के लोग ब्रज सस्कृति कू सजोए भए है । लगन व्याह के शीसरन पे गाइबे बार गीत सुनाई परे तो होरी प मस्ती भरे गीतन की गूज सुनाई पर । नई पीढी वू ऐसी करनी कर चलहुं तुम हासौं जग रोई' अध्यात्म की सदेस दे । बदलाब के ताई व वैग्यानिक दृष्टिकोन के ताई उपयास रचो गयो है, जासो जीवन मे नए आयाम खुलै नई राह खुलै, नई मजिल दिखाई परे । हा ध्यान ई रखो है के अपन पुरान अच्छे वू छाती त चिपक'य के राखे गले सडे कू काटे छाट । नारी के तीनो रूप बेटी, पत्नी अरू मां, प्रस्तुत किए है चंदा के माध्यम सौ । अबला सौ सबला रूप दरमाया है या उपयास म । थपेडे पे थपेडे हू सहके नारी को रूप निखारो है या उपयास म । सवा समपण अरू धम के पथ प चलके जीवन की सफलता अरू साथवता सिद्ध करी है या उपयास म ।

साथकता सीसक की --

एक बात उपयास सीसक प कहनी है । लेखक ने याकी सीसक सूधम सट्ट "चंदा" रखबे की सोची । फिर विचार बनी उतार चढाव भरयो जीवन जीबे बारी चंदा की चित्रन है यासो 'उतार चढाव रखो जाए । फिर विचार आयो ऐसी करनी कर चलहुं सीसक रखै, चीके अखीर मे चंदा ने ई बात प्रभात सौ कही है । पर बात 'कचन करत खरो' पे ठहरी । बात साधी है । चन्दा नै कठिनाई झेली । भवरन मेते नया निवासी । मेहनत सौ बान समस्या हल करी पर चन्दा यहाँ तक नाय रही बान समाज मे अलख जगायो गाम गाम घूम के । महिला मडल बनाय के बान अपनऊ कचन बनाए अरू दूसरे याही सौ 'कचन करत खरो नाम दियो गयो है ।

राजस्थान मे ब्रजभाषा की जि उपयाम गद्य को पैली प्रयास है । अनेकन कमी हु गी । भाषा दोसऊ होयगी । एक सब्द के दोऊ रूप मिलिगे । विभक्तिन केऊ दो रूप-मिलिगे पर अपनी भाषा है इस्न कहेया के मुख सौ निकसी वू भाषा है जामे कहेया नै मचल मचल के माखन मिसरी मागी । फिर ई ब्यो नई अच्छी लगगी । ऐसी ब्रजभाषा अपनी आत्महत्या बरले कौन कू अच्छी लगगी ? नई पीढी यासो वनित है जाए । या ई भाषा अजामबघर मे धर दई जाय यामे बोन सौ भली है । अपने अचर की भाषा की हत्या त बडके कौन पाप होयगी । हम देखत रहे अरू याकी हत्या है जाए ई कहाँ

कचन करत खरो

तब ठीक है। आप सोचा, अपनी मीया बीत नू प्यारी तांय लग। मेरी चाह है नं ब्रज माधुरी की बरसा याने पछ में होय अरु याकी गछ आज की गमस्थान नू सुरमावे न ताई अपने ओज नू उतारे। सबगी बढी बात है, इ नई पीढ़ी नू अतगाव भरु नटकाव मौं हटाय वं नह की डारी न जाई।

डा० विरणुचन्द्र पाठक
अध्यक्ष
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी

चैत्र प्रतिपदा न 2047
27 मार्च 1990

साची सांची बात लेखक की कलम ते

'सायाग सौं मोय जुलाई 1961 मे बर जानी परी। बिन दिनान मे डा रांगेय राषव बंग मे ई रह रहे। स्कूल सौं छुट्टी पायके बबऊ-बबऊ सांस कू बिनके घर पौंच जातो बे बडी आवभगत करे हे। शिक्षण खोलिबे कू यारवासी बी सौ ब्योहार करे हे। बिनकी सुभाव ही पेरना दब बी। लिखिबे की प्रेरना। एक दिना बातई बातन म "भाइयो" पाध्य लिखिबे क ताई भिगरी रूपरेखा बनवा दई। बातन के दौरान बे उपयास लिखिबे की बनाव ममसायी कर ह। धरती मेरा घर' उपयास बिन दिनन में छोरान कू पढानी परतो। बामे आंचलिकता की पुट मन कू चाघ लती। मन उपयास मे रम जातो। 'बब तक पुकारू?' उपयास के नामकरण की जय बिन रोचक प्रसंग मुनायो तो मन कू औरऊ ध्यान द आयो। एक दिना बार बनबामते भए तिन ऊपर धरपे मुनी क नट मागवे के ताई पुकारतो पुकारतो हैरान है गयो है। अखीर म बान (नट) कही बब तक पुकारू? बस याही कू लके लिख मारी बिन "बब तक पुकारू" उपयास? डा माहव न बतयो के ब्रज अचर मे इतेव सामग्री बिखरी परी है कोऊ सम्हारवे बारी नाए। कम बिनकी प्रेरना भरी बातन न मन म एक बीज बो दियो। मैंने हू बिचार किमी ब्रज मस्वृति कू एक आचलिक उपयास मे उभाऊं। ई बीज भीत तिनान तक अघेरे मे परी रह्यो। न जान या बीज प कितेक पन चढ गई।

सम आयो सन् 1983 मे। 28 फरवरी कू कामा मे राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर ने समारोह करायो। या समारोह मे ब्रजभाषा अकादमी बनाव के ताई राजस्थान सरकार के सामई एक प्रस्ताव रखी गयो। ता समे श्री जुगल बिशार चतुर्वेदी ने एक बात कही ब्रज भाषा म पद्य लिख्यो जाय सके गद्य नाय लिख्यो जा सके। मैंने ता समे बिनमता सौ कही 'गद्य कू नकारनी सरलता की और बढ़यो है। ब्रज भाषा मे पद्य लिख्यो जा सक गद्य नई ई तो बुई बात भई, आट की पूरी तो बन सक रोटी नई। हूं गद्य लिखिबे मे जोर जरूर पर। कौन जोर उठावै। कविता लिखी। पढ़ी। बाहवाही लूटी अरू लिपाके लके चल दिए। यासो काम नाय चल सके। अपन अचर की बात अपनी भासा मे लिखिबो सरल है मक। अपन मन की बात अचर की भाषा मे अच्छी तरिया कही जा सके। या बात कू सुनिके चतुर्वेदी जी चुप लगा गए बिनकी महानता है, पर मैंने बाई तिन सबरूप ल लियो ब्रजभाषा गद्य मे आचलिक उपयास लिखिबे की।

ता दिना मैंने विचार कियो—जय गुजराती अरु मराठी की गद्य गुजरात अरु महाराष्ट्र के घर घर में ठौर पा सक तो ब्रजभाषा गद्य तो जरूरई सुन्यो अरु पढ़्यो जाइगी। हा इतेक जरूर है ब्रज गद्य लिख्यो जाय आधुनिक समस्यान पे। जाम आधुनिक बोध होय। बरफ तोरिबे बारे हाथन कू दुनिया नमन करती रही है। सम्राटी तोरिबे की काम करवो एव साहित्यिक पुण्य है। याके ताई बठोरता बादी रख छांडिक उदारतावादी रख अपनानी जरूरी है। समै के सग घली जाय। जिन सम्बन्ध कू दूसरी भासा सी ल सब बिना पचायके चलन में बुद्धिमानो है। भाषा तो प्रवाहमान है युग के सग नए शब्द गठनऊ परे। लेखक की काम तो सम्बन्ध में प्रवाह में डारिबे की है—सम्बन्ध में दम होगी तो तैर सकिगे नई तो नयी उठावक बिना बाहर फँक देगी।

मैं मनई मन विचार करती रह्यो विसरू नए लन चइएँ ? समाज में बिन कुरीलीता न अडडो जमा लियो है ? इन्हीं कैसे उखारो जाए। बालेज में का राजनीति चलै ? समाज में का का तरिया के लोग बिछरे भए है ? का का विचारधारा के लाग हैं ? बिनकी चित्रन करवो लग खतर ते खाली नाय। मैं जानबूझ के दुस्साहस कियो है। नामन में थोरो सी उलटफेर करव अपनी धरती की बधा उठाई है। एक अबला कू सबला सिद्ध कर्म के ताई प्रयास कियो है। समाज के कल्याण के लय में बरिबी ई धम बसायो है।

छपके सौं पहलै उपयास कू श्री मोहन लाल जी मधुकर ने पूरी तरिया पढी। सशोधन कू सुचाव दिए। श्री तजसिंह जी ने सिमरो उपयास धय सौ सुनी अरु अपने अमूल्य विचारन की समावेश करायो। श्रीमती द्रोपदी देवी ने लोकगीतन के नमूना प्रस्तुत किए। याही तरिया डा बी सी पाठक श्री हीरालाल सराज, डा राम कृष्ण शर्मा डा दाऊ दयाल गुप्ता श्री राम शरण पीतलीयज श्री महावीर प्रसाद कुमावत जैसे सहयोगजन की प्रोत्साहन या उपयास कू सभारव में मिल्यो। इन सबन के सहयोग के प्रति हृदय सौ आभार। अंत में मैं स्व श्री हरिशंकर जी पाराशर कू नमन करूँ जिनकी प्रेरणा मोय सदा मिलती रही।

उपयास आपके हाथन में है। आपकू भाव अरु नई पीढी कू वछू प्रेरना दे सक ती मैं अपनी छम स्वय सफल मानगी।

— गुणदा देवी

चाहे न अपन जीवन म सन्तान के नाम प इकलौती बेटी चन्दा ई पाई ।
वाके पीछ न छोरा भयो न छोरी । याके ताई वान आस-पास पूज दौड धूप करी ।

डीग मे हती एक धूपा दाई । यो तो नू जान की क्रोरिन ई । बडी मली
कुचेली रहती पर जच्चा बच्चान क मामले मे अ द्वे-अच्छे डाक्टरन न चारा घाने चित्त
लाती । असम्भव कू सभव कर देती । वान ना तो बहू बोज पढ़ाई पढ़ी ना बहू
ट्रेनिंग पाई पर अपनी सास के सग रहवै जो अनुभव पायो बुई काम देती । दिवाबट,
वनावट सजाबट, फिलाबट ते वासन दूर, पर करताउस्ताद होय । सन्तान क इच्छुन
वाके पास दूर दूर ते अपनी बहू पेटीन न लव जाते । बु जहा हाथ भारती घाली ना
जाती । थोरे पईसान म हजारन कौ काम करती । वान चोखे कू भरपूर उपाय बताए
पर बात नई बनी ।

भरतपुर नगर के नामी बीछ रमस क सामई चोखे नै अपनी दुखडा रोयो ।
एमे नामी गिरामी रमस नऊ चोखे कू दवाई दई पर भंसाता के अवन न कौन
मिटा सकै । डीग म मनीराम पडित की नाम चोखे कू बाऊ न सुझायो ।
वाके यस कू मुनि के चाख मनीराम के पास खिचो चली गयो । अ धे कू
आँख अरु मरते कू सजीवनी चइए । चोखे नैऊ अपनी दुखडा मनीराम के आगे रोयो ।
मनीराम न बाऊ कू उपाय बताए पर फल बुई निक्सी जो पानी क बिलोवे प निक्ख ।

चोखे न या तरिया अनेकन स्पाने-भोपन की दहरी की धूरि सई । अनेवन
गडा ताबीज कराए, अनेवन जन्तर मन्तर कराए अनेकन जादू टाना कराए, अनेकन
दई देवतान की मनौती मनाई पर कछु हाथ नई आयो । हार पछमार क सन्तोष
कर लियो । निपुत्री हैवे के दोस त तो बची भयो है । नगर म अनेवन ऐसे हैं
जिनके छोरी हू नाए । परीस म प्रकास जन के पास जमीन ज्यादा सब बछू हती
पर विचारे की बहू क मरी भूसरी हू नई भई । मास अपने त नीचे के मानसन नै
देख तो वाए सवर आ जाए । ऊपर बारेन न देखें तो पछताव । दुख पाव ।

सुख दुख तो आदमी क मन की बात है । मन की उपज है । काऊ नै
कहो है, 'मन के हार हार है, मन के जीते जीत,' "और मन चगा तो खटोटी म
गया । मान्स चाहे तो दुख म हू सुख को अनुभव कर सक । सुख दुख तो अपने
हाथ की बात है हल्की करल चाहे भारी करल ।

जब चोखे अरु वाकी बहू राधा नगर क छारा बारेन नै देखते तो छाती प
स्पानि मी लाट जाती । दोनो जन करमन न फोर क रह जाते । विधाना की विधि कू
मान क जीवन कू दाते । पर जब ई विचार आती क कु भी पाक नरक म जाइवे त तो
बच जाऊ गो तब बाए बसई सन्तोस होती जस पपीहा कू स्वाति जल की बूँद से
होय ।

मुत्र दुष्ट के झुलान न झूलते भए चाहे चंदा की मुख सुविधा नो पूरी ध्यान रखती। हव तो बू घालीस बरस को पर अनुभव साठ को सो। पुरानी विचारधारा की पर मुग की नई बातन बू जीवन म उतारिय म पीछे नाओ। एक आर तू चंदा कू पवावे की होन लिए रहतो तो दूजी ओर बाए नठोर अनुशासन म रखती। कजूस जस धन प आत्र लगाए रहे ऐसीई चंदा प चौकती रखती।

चौकसी रखवे ती मतलब ई नाजा के चंग बंदी के रूप म रहती होय। चंदा मालेजह जातो अर मन्दिरन म हू जाती। मेले तामस हू जानी, बाजार हाट कू हू जाती पर जाती देव रेख म ई। ऐसी नाय के खुती छूट होय। चोखे न दुनियाँ देखी। समाज म छोरी छोरा पा तरियाँ सीं विगरे रहे हैं, याकी चोखेलाल कू छूब अनुभव हो। दही बारी गली में एक वामन की छोरी धोबी व एक कार बलूटा छोरा के संग भाज गई अर बिट्ठी लिच के धर गई प्यार किया तो डरना क्या ?' याही तरियाँ समाज म आए दिन के विगरे भय हालात कू देखि व चोखेलाल फूँकि फूँकि क नदम धरती। बिटिया प आँख रखत भए या बात कोऊ ध्यान रखती व चंदा तहूँ कठोर दबाव म टूट नइ जाए। बाप या बात की अनुभव हू नई होय व बाप निगाह रखी जाए रही है। याकी ऐसीई ध्यान रखती जन नागरि अपन सिर प धरी पानी की गागर को ध्यान रख। चोखे कू भोजन, भजन अर व्यवसाय प त जो सम मिल ओ बू सब चंदा की बढती के ताई जाती। चंदा के लाभ कू ई अपन हौं ती। राजा दिलीपअर याकी रानी नैं ती नदिनी की सेवा करी होगी पर चंदा की बढ़ोतरी कू दोनी पति पत्नी ने कोई कोर बसर नाय छोडो।

चिंता

लाड चाव म परी चंदा सोलह बरस की भई। जीवन की देहरी प दखके बाके मया बापन कू बाके ब्याह की चिंता लगी। राधा चोखे कू कुचरके लगायब लगी। उठते बठते सोते-जागते चंदा के ब्याह की चरचा करती नाय थकती। चोखेलाल की मया स ची जो साठ के आम पास ही जुई चाई ई, के चंदा ने पीरे हाथ बाके सामई है जाएँ। पुन्य हाथ लग जाए। बूढी सासन की का पतौ कब निकस जाएँ ? पकी आम हवा व झौंवे त कब टपक पर। नदी व दिनारे की पेड कब खिसक पर। आज मरी कल दूजी दिन होय फिर ची नई नातिनी की ब्याह कर क सुरग म ठोर बनाई जाएँ। बुढापे म मोह हू कछू बढ जाए। मोह के ताने जाने इतक पुर जाएँ के बु बिनम ते निक्स ही नाय पाव। बु हू अचक अचक, डरती डरती चंदा के ब्याह को

बात चोखे के कानन म सरवाती रहती । या तरिया राधा अरु अँची नै चाखे के दिन क भोजन अरु रात की नीद हराम कर देई ।

चोखे लाल अब तानू अँची अरु राधा की वातन कूँ, या कान सुनती अरु वा कान निकास दती । पर अब अनसुनी अरु अनदेखी करबौ बाके बसकी वात नाइ । चन्दा की उठती भयो हाड बाए दीख रह्यौ । बाकी साहूकारी की काम इतेक फल रह्यौ जासी बाए फुरसत नाथ मिलई पर अब वान जान लई नै फुरसत निकासनी परंगी । दूसरे चोखेउ कोऊ पत्थर की तौ हत नाओ जाप पानी की बू दन की काऊ असर नई होती हाथ । अब तौ चोखेलाल वा माटी के तरिया हौ जो पानी की बू दन सौ तर बतर है जाए । भीतर ई भीतर बाए चित्ता ब्यापवे लगी ।

चोखेलाल की लेन देन भरतपुर ते बाहर गावन मे ई । सोऊ किसानन प । कातिक की फसल पानी के जभाव म सूख गई यात किसानन प विपदा के बादर गहराय रहे है । आसामी चोखेलाल कूँ चारा ओर ते घेरे रहत । बसाख की फसल के ताई रुपयान की जरूरत इ । चोखे की हिसाब किताब कौरवन की सना की भाति अरु रावन के कुनवा की नाई बढ गयो । बू हू जानती रुपया त रुपया कमायो जाए । याही मौँ बू खुले मन ते रुपया द रह्यौ । बू या बात कूँ हू जानती क बसाख की फसल के ताई रुपया नई दियो गयो तो पिछली रुपया डू डूब सक । मास, पुत्रेष्ना सा हार मान बठ पर वित्तेशना अरु लोकेष्ना कूँ नाथ छोडि सक । या कारन सो अपने आसामीन की सुओ साधवे के ताई बक सौ बीस हजार रुपया निकास लियो । पोस्ट आफिस म कुल पन्द्रह हजार रुपया हौ । बू हू निकास लियो पर तौऊ बू अपने आसामीन की ओरी नइ भर पायो ।

चोखे नेधीरै धीरै हाथ खीचवौ प्रारम्भ कियो पर आसामीन नै जब भौत ज्यादा बीनती करी तौ चोखे कूँ झुकिनी परी । चोखे ने अपनी घरवारी अरु मया की मान मनुहार कर क बिनकी सिगरी जेवर जाँठी ल लिया । बा सबकूँ गिरवी रख क आसामीन की माँग पूरी करी । चाखे जो अब तक बौहरी हो अब बू कजदार है गयो । पू जो जब गाँठ म ते निकस जाए तब बाकी हालत कितक पतरी है जाए याए बू हौ जान सक जानै याकी अनुभव कियो हौ । जाके पाँपन की बिबाई नई पटो हाथ बू बिबाई फटवे क दुख कूँ का जान सक ? या सम चोखे की बसी इ हालत है गई जस गुब्बारे म ते हवा अरु पखाल म त पानी निकस जाब प गुब्बारे अरु पखाल की हालत है जाए ।

चोखे नै आसामीन कूँ ध्रुव समझा दियो क बाकी छोरी ब्याह लायक है गई है । बाकी ब्याह करनी है । एसो नई होय क ब्याह क सम सब आँध दिखा जाएँ । ता नम सब आसामीन न छानी ठोक ठाक क, मौछन न मरोर-मरोर क घरती प धणो

मार मार कै, ऐसी दिलासा दिवाई, ऐसे दिल्ली के धंसेरा मारे, क चोखे फूल के कुम्पा है गयो। बाए या वात की सतोस हो क वान आसामीन कू रूपया देकै अपनी प्रतिष्ठा बचा लई है, अपनी सरूप किरकिरी नाय हीन दियो।

आसामीन सी छुट्टी पाय कै वान च'रा के ताई वर डू डूवे की निहच कियो। राधा ती बाके पोटुआन मांस नौचिब म लगी रहती। जब मया हू बाक पीछ पर गई। वान चोखे कू समझायो—

'बेटा नौकरी अरु ब्याह के ताई कछू ना कछू उसीला चइए। बिना जान पहिचान के सम्बन्ध नाँय होम। फिर घर बठे ती वर काहू न पायो नाए। यासी परीस के रगो ते मिलनौ चइए।

चोखे, रगा की नाम सुनते ई ऐस विधकती जस काऊ बिझुकाए देखि क कोऊ सांड विधक। रगो कू देखते ई चाखे नाक भौ सिकोरती। बाकी नजरन म रगो दी कौडी को मान्य हो। मैया जब हठ पर गई ती चोखे कू रगो के पास जानौ परी। अपन घर ते रगो के घर जात समै रगो के अनकन चित्र बाकी आखिन के साँमई धूम गए।

रगो रग की कारी हतई हो। वात ज्यादा मन की कारी हो। सरबडा सी, गाल पिचके भए। बडे ढोंग ढपांग ते रहती। देखिबे मे भजनानन्दी लग औ। पर मन की कपटी हो।

सिगरी बातन नै जानते भए हू चाखे रगो की बठक माऊ बढती गयो। जस रोगी भयकर रोग के निवारन के ताई कडवी ते कडवा दवा कू आँख मीच क मन कू करी करके लवे कू तयार हे जाए ऐसई रगो अपनी मैया की बात मान क रगो क दरबज्जे म पहुँचई गयो। ई जान कै क काम परे पे गधा हू बाप बनायो जाए वान रगो की बठक माहि पाँव धरे। राम राम करी। चोखे कू देखते ई रगो सब समझ गयो पर अनजानो सी है क बोली—

'आआ मैया चोखे आओ। आज खूब आयो। वही राजी खुसीती हो।

"हाँ आपकी किरपा है।"

फही कस आईयो भयो ?

चाखे नै अपनी बिटिया की बात साँमई रखी। रगो मूढा प बठी भयो, या बात कू सुनिकेँ गहन विचारन म डूब सी गयो। चोख बाए एस दयती रही जस जवाल क सम किसान आबान माऊ देख। फिर धीरे धीरे गभीर बानी म वाली—

‘चोखे या काम के ताई मेरे पास आयी है। कहाँ राजा भोज कहाँ गू तेली ? कहा राम-राम कहाँ टाय-टाय ? आकास पाताल की अंतर है।’

‘अजी ऐसी बात चो करी, हमकू तो आपको ई सहागी है।’

‘चोखे भया, तू आयी है ती तरी अनुरोध का टारी जाए पर सम भौत बुरी आ गयो है। बेटा बारे म्हाँ फार। वारह बारह मनके है क वठे है। हाँ-ना की जवाब छ छ महीना मे देंम हैं।

‘पडितजी कछु होय, विटिया के पीरे हाथ तो करने ई हैं।’

‘अरे लाला ! पीरे हाथ चो करन हैं। विटिया की ब्याह खूब धूम धाम ते कर। अकेली बेटी है। जनम भर कमाओ है। चोखी बाहरगत चल रही है।’

‘अजी दूर के डोल मुहावने लगें। खर, कोऊ छोरा तो बताओ।’

‘भाई, कसो लडका चइए ?

‘कसो ?

हाँ कितेक पढी लिखी होय ? कितेक तक की बतायो जाए ? अरु याहू बात कू जान ले लडका देखवे ना जाए। बजार म जसे धन सौ चीज खरीदी जाए याही भाति समाज की हाट मे छोरा खरीद जाए। इन्जीनियर, जे ई एन, ए ई एन, डाक्टर प्रोफेसर, वकील भाव के अनुसार लए जाए। छोरान के हू टडर भरे जाए अन्तर इतेकई है या सौदा मे अधिक की टडर स्वीकारी जाए।

रगो की बातन कू सुनिक चोखे कू झुंझर आ रही। रगो उल्टी सीधी बात कर रह्यो पर मज बावरी होय। दयी विल्ली मूसेन प कान कटाव याही सौ चोखे रगो की सब बातन कू सुनि रह्यो। बु अपन कू म्म्हार क कसो छोरा होय ? कितेक पढी लिखी होय ? कितेक तानू की हाय ? या विस म अपनी राय प्रकट करता रह्यो।

अधीर म रगो अपने दोनो घोटून प हाथ धरिक मूढा प ते उठो। अलमारी खोली। एक पुरानी डायरी निकासी। डायरी दिव्याय क तारीफ के पुल बांधे। कछु चोखे क पल्ले प बछू भूमरि म पानी की बु दिवान की भाति तोष है गए। डायरी देखिबे के ताई रगो न टीन की पुरानी सडूक म त एक डडी की चस्मा निकासो। चस्मा चढ़ाय क पापल म्हाँ त अगुरिया प धुक लगाय क डायरी क पन्ना बडी तावधानी सौ पलट तो मर जिंदा झीगुर मनयो आदि निकसप र। जखार म एव पन्ना प बाकी नजर ठहरी, अख मढ़ाइ। कछु साब समय क गरदन जंची करी बरु गाबिगढ़ क एक छारा की बात कही छोरा की नाम भगवती, एम ए तक पढ़ी ह।

पूरे पचास हजार ब्याह मे चाह रह्यो। फिर बान दो चार पत्ता अरु पलट। डींग मे करकल्लो पटवारी को नाती ही बाके बिसे म बतायो क, “करकल्लो न अपनी छोरी के ब्याह मे चालीस हजार नकद दिए, बरात की ऐसी खातिरदारी करी क धौलपुर बारे मान गए। इतेक सामान दियो क सबन की आँख फटी की फटी रह गई। चारो ओर हल्ला मच गयो। ब्याह का कियो लट्ठ गाढ दियो। ऐसी ब्याह तो करनी परगो ई।’

या बात कू सुनिके चोखे कू पसीना आ गयो। या सम चाखे की गाँठ म कानी कीडी ह्न नाही। सिगरी पूँजी आसामीन म बट चुकी। बक अरु पोस्ट आफिस की पास बुक खाली है गई। सिगरो गहनो गाठो गिरवी रखके आसामीन के आँसू पँछे अरु अब पचास हजार साठ हजार की बात। आसमान के तारे दिखाई पर रहे। चोखे ने म्हो लटकाए, मन मारे रगो ते कही,

‘अजी काऊ और बताओ।’

‘चौ नई जँचो ?’

‘अजी जँचो तो खूब पर तत पाँव पसारिए जेती लांबी सीर।’

‘अरे लाला यो कह, ज्यो-ज्यो गोह माटी होय त्यो त्या बिल सकरौ होय।’

ऐसी बात नाए पडित जी।’

‘एसी बात नाए तो चौ पीछे हट रह्यो है। छोरा इजीनियर बनगो। हजारन म देखिबे दिखावे लायक है। घर जस बर दोनू जोरदार है। दरबज्जी छोरा ने दिए उठगो।’

‘साँची कह रह ह्यो, पर इतेक बोझ उठायबो मेरे बसकी बात नाए। काऊ सहर के छारा को कोऊ अतो पती होय त्री बताओ।’

सहर को नाम सुनते ई रगो तन गयो। आत्राज म कराई आ गई। वासी कढी मे उफान आ गयो। बोली—

‘सहरिया सब दिखावटी होय। बिनत मालवे जानी तो देखन ई कन्नी काटें। भूल चुक ते मिल जाए तो नानी सी मर जाए। कहाँ त आए हो? कब जाभोग? जस सवाल करवे लग जाए। बिनवे धीरे-धीरे कपडा घर बिकनी चुपडी बात इ समझो। प्रेम भाव तो गधा के सींग की नाई समझो। बिटोरा इ समझो। ऊपरान के नाम तो ढोल म पास है। भया पहार दूर त ही अच्छे लगें।’

बान अपने मथुरा क एक नातदार को एसी नक्सा खचो क चामलाल इचतो ई रह गयो। रगो फिर मथुरा के नातदार की बजान करवे लगे।

“रघु हमारी खास नातेदार है बाकू हमारी मन ब्याही है। वू हू बिनक सग रहकें सहारिया है गई है। एन तो हम बबऊ बाके यहाँ जाए ई नाए बबऊ मधुरा म जाधिरी बस निबस जाए अरु रुबियो ऊ पर जाए ती बडौ सकोच हाय। नीठन त दो रोटी मिल पावें। नहू म्हाँ ते निबस जाए कँ भय नाए ती फिर रात कू भूयो ई मोनो परें। यासो सहर की रासगी माऊ पाव रघवे ते पहल पूत्र जच्छी तरियाँ सोच समझ लीजा। अरु देख याऊ बात बी ध्यान रघियो सस्ती रोव वाग गार अरु रो रावे एक वार। छोरी कू जनम भर सुयी देखनी चाहे ती जी करी अरु हाथ डीली करनी परंगो।”

चोखे रगो की बातन नै मुनिव' ज रामजी की बरकें चलवे लगी ती रगो न कही “चोखे मेरी समय म कोऊ ओर छोरा घायो तो बताउगी पर समै समै पे मिलितो रहिया।” तेरो दुख मेरो ई दुख है। ई ताई प ना बीत रही समय प बीतती जाई है। चोखे ‘अच्छा कहक चल दियो।

रगो नै मनई मन म वही, बडी फूनी पूनी खाई ह। माठूराम कू अब सब पती चल जाइगी। अब तानू बमायो ई बमायो है। जब खन बी बात आई है तो साच विचार कर रह्यो है। चोखे न अब तानू काऊक तरुमा नाय सराए। काऊकी सल्ला चप्पा नाँय करी, पर या समै गज गावरी है रही। वान अपन अनुभवन व सग जोरन क अनुभवन की लाभ उठानो चाही। बाए इ पती क परोस म एक जन न बिना पूछे ताछ अपनी भन को ब्याह कर दियो। छोरा कुपत्तो निबसो। वान बाकी भन कू छोडि दियो। वू बिचारी पीहर म अपन दिनान न फोर रही है। दुखी जीवन कू ढो रही है। आज हू बाए देखि देखि क बाके मैया बापन की छातो धधक रही है। ऐसे उदाहरनन कू देखि देखि क चोखे बी मन रो परतो। पढी लिखो समझदार मान्स अपन पान की टोच के उजरे म आगे के पथ कू देखिनी चाई। देख ना सक ती अनुमान ती लगाव ई है। चोखे चंदा के भावी जीवन के मुख के सपने सजोए घर माऊ बडौ जा रह्यो। बाकी नजरन मे सहर भा रह्यो। बाकी धारना ही क ‘सहर बसन्ता देवानाम गाव बसता भूतानाम।’ चोखे गाव बारेन के जीवन सी मली भाति परिचित हो। बाके पास ती आए ल्पिना गाव के मान्स आते रहते। ना व खाइवो जानै ना पहरिवो। बिनक घर जाय क देखतो ती गूदरे ही गूदर दिखाइ परने। साऊ मैले कुचले। तफाइ ते रहवो बिर्न सीखोई नाय। दिन रात गावर करे ते मायो मार। गाव को पूरो नबसा चोखे की आखिन के सामई धूम गयो। ऐसे बमेल चौखटा मे अपनी चंदा सी तसबीर बस लगाई जाय सक। वाने अपने मन मे पक्की निहच कर लियो क वू चन्दा कू गाव म नई। याहवगी। इन विचारन मे खोयो खायो डगमगाते पायन त धर पहुँच गयो। घर पहुँच कँ दरबजी खटखटायो। राधा समझि गई नाजि क दरबजी खोली। चाखे क लटक मए चहरा कू दखिक समझ गई पर तीऊ पूछी कछू बात बनी ?

चोखे दरबरायो। बूडौ खूसट मूख है। पुरान नमाने की बात कर। दा छोरा बताए। एक गाविन्दगढ की अरु दूसरी डीग की। गोविन्दगढ गाव जसो है। नल बिजली

आ जावे ते गाव, सहर थोरई है जाए। काऊ नै वही ह गधा गगाजी म नहा ले तो गया थोरई है जाए। गाव मे बहू चदा थोरई दई जाए। गाव के गमारन ते कौन मूड मारगो। मोन सी बेटो, थोरे से लोभ के ताई नरक मे ढकेली जाय का ? धन काऊ की मया-वाप नाए। हाय को मेल है। बडे बूडे बहै, धन तो चलती फिरती छाया है। आज कहू तो बल्ल कहू। धन बात कू क स्वाद कू होय ।”

लम्बे चोरे भासन ए मुनिकै राधा ताहने मारते भए बोली घर ते निकसवे मे तो सरम लग। दिमाग जासमान कू छ रह्यो है। काऊ बिचारे न छारा बताए तो बाकू गारी गुप्ता कर रहे हो। घरे पराए की मानो नई आप जानी नही। गाठ मे हत नही। ब्याह वरीदन के मामले यो ई थोरई त हाय। कुली म गुड थोरई फोरी जाए। दो बात कही जाए तो दो बात काहू की सुनी ह जाए। याम बुरी मानवे की का बात ह। दूसरे उमर तो काऊ को बाट देख नाए। हमारी चन्दा उजेर पच्छ के चदा की नाई दिन दूनी मर रात चौगुनी बढ रही है। इक्लोती छोरी है ताप तिहारो ई हाल है। कहू चार छ होती तो चारो कौन चित्त आते।’

चोखे नै मुट्ट खंच लई। राधा न कुरेदते भए फिर पूछी, ‘हां डीग कौऊ तो छोरा बतायो है डीग तो गाव नाए चोखो कस्वा हू। म्हा तो जलमहल है, वाग है मरोबर है। दुनिया भर के सलानी डीग आवैं। फोटू खच-खच कै ल जाव फिर भरतपुर ते डीग आइवे जाइवे के चोखे साधन हैं।’

या बात कू मुनिकै चोखे बरस परो “अरे डीग की बात तो बहू दई, पर बेटा चारे की बात हू पूछी है। बाने अपनी छोरी के ब्याह मे पचास साठ हजार रुपया लगाए है। हमारी का चिसात है जो पचास साठ हजार की बात करे। अब या समैं तो गाँठ माहि कानी कौडी हू नाय। डीग वारे नै जितक खच करे हैं, वु वाते ज्यादा की आस लगाए बठो है।

राधा नै समझाते भए कही, ‘या समे तो नाय पर का ऐसीई समे रह्यो ? कछू दिना की बात है फिर चादनी रात आवगी। बरसात होयगी। नई फसल आवगी। आसामी रुपया चुकाइ गे।

चोखे कू झूझर जा रहीपर बू मुट्ट खचरयो। जस विसकी पोटरी निकस जावे प माप फन पोट के रह जाए, ऐस ई धन की पाटरी निकस जाइवे प चोखेलास झूझर खाय के रह गयो। समझदारो सी काम लियो। मन ई मन घुटती रह्यो। बस समझातो फसल नई आई तो सब गुड-गावर है जाइगो।

अची दोउन की बात कू कान लगाय के सुन रही। सब समझ गई तीऊ बिनके बीच मे आइके बोली,

“बी चीखे कहा रही ?”

‘मया, रगो ते काम नई चलगो ।’

‘अरे बेटा, कंसी बात करे । रगो बडौ सुरज्जी भयी है । खेला खायो ह ।’

‘मैया, पुराने जमाने की बातन कूँ कर । छोरी का गाव म दर्ई जाए । ऐसे ते का राय लई जाए ?’

बेटा तू का समझ कल्ल की छारा है । वाने दुनिया देखी है । तरे बाप के सग को है । तरे तो का विसात है तेरो बाप तो बाते पूछे बिना कछू करती ई नाथी । ऊब-नीच की जितेक बाए ध्यान है बितेक अच्छे अच्छे न नाय । जकल तो उमरते जाव । बोहरगत करिवी और बात है, सगाई सम्बन्ध जीर बात है । सम्बन्ध के मामले बडे सोच समझ के तै किए जाए । रगो इन बातन म पूरी तरी भयी है ।

चन्दा सिगरी बातन न बगल के कमरा मे बठी बडे ध्यान त मुनि रही । आख सामने की किताब पै टिकी पर कान म्हाई लगे ।

चोल अपनी मैया सौँ पिंड छुडाय के कमरा के बाहर जायो । पूरव म मूरज बाँसन ऊपर उठ आयो । धूप वरामदे म फल रही । चिरया वरामदे मे घाँसला बनाइव म लगी । तू चिरौटा ते काम ल रही । चिरैया चिरौटा दोनो काम म लग रहे । चीखे न हू साँची बूह अपने काम मे लगौ रहे । घरवारन ते चीँ मूँड मार । मुननी सवन की चइए पर करनी अपने मन की चइए । वान सोच लई कोऊ कितेकऊ कहे, पर तू अपनी चंदा को ब्याह सहर तेई करेगो । अब तक वान जो ढील दे राखी वा ढील कूँ छोडि देगो । वाके सामई या समै अथ वौ सकट हो, पर बाए विसवास हो क नई फसल आवगी । रुपया लौटेगो । खूब धूम धाम ते ब्याह हायगो । कौन कौन कूँ बुलानी है ? कौन कौन सौ चीज कहाँ सौ इकठौरी करनी हैं ? कौन कौन ते कहाँ मदद लेनी है ? इनई विचारन म खोयो खोयो घूमती रह्यो । तवई पोस्ट मेन ने ‘चोखेलाल आवाज लगाई । चोखेलाल ने लपक क एक लिफाफो ल लियो ।

लिफाफे कूँ एक सग खोली गो चन बी सग लई । लिफाफे मे चिट्ठी व सग दा छारान के फोटो दखि के राहत मिली । बिगट गरमी म धक राहगीर कूँ ठडी छौह मिली । फाटो के सग नाते गोते लिख भए । नात गोते मिलाए । नात गोत बच गए । चिट्ठी पढ़ी तो चीखे कछू गभीर सौ है गयो । एक फोटो वकील को पर दूजवर हो । घर छामतो पीता । बाके एक लडवा ही चाख कूँ बू नई जखी तो राधा अरु मैया कूँ कस जखेगो । चन्दा हू दूजवर कबहू नही चाहेगी । चाय न वा फोटू कूँ सात व छारा की नाइ उपेच्छा सौ दखी ।

दूसरे छोरा गो ब्योरा पढ़ी । छोरा वी नाम निरजन हो । निरजन वी बाप एव नामी वकील ही । तू दो साल पहल हेजा म चल बसी । पर वी सिगरी भार

निरजन प ही । वाकी तीन बवारी भन ही । फाटो ते लग्गो रग उजरी है, बडी-बडी आँख, पतरे पतरे होठ, चिरमा म्हों, गनुघा भारी भारी । सनल सूरत त भलो लग रह्यो । चोखे कू जँच गयो । वाके देखिय के ताई मन म विचार बना लियो ।

ताही सभै राधा ने दु पर न भोजन के ताई चोखे को ध्यान रँची । चोखे ने आँख उठाई तो देखी, राधा की त्पौरी चढ़ी भई है, वानी म घरघरौपन अरु चहरा प चिन्ता की रेखा झलक रही । बोली, ' भोजन करोगे कै यो ही बठे रह्यो ?'

जरी परमेसुरी भोजन कू कौन मना कर, में तँवार हू ।'

लोटा म त पानी लकै हाथ म्हों धोय कै, चोखे भोजन करवे लग्यो । म्हो यत्र के समान चल रह्यो मन कहू और हो । याही सौं भाजनन मे वोज स्वाद नाँय आ रह्यो । राधा गरम-गरम रोटी परोमती भई वाली ' चिट्ठी कहा ते आई है ?' चाखे न चिट्ठी की सिगरी व्योरा राधा कू द दियो । बोझ हल्को भयो । दूजवर की नाम सुनिक राधा नाक भी सिकोरव लग्यो । दूसरे छोरा की हालचाल जानक राधा कू जानद नई आयो । जा घर मे छोरा पइ सिगरी भार होय । तीन-तीन बवारी भन हाय । वा घर मे चढा कस दिन निकालेगी । पलोयन पीटते-पीटते मर जाइगी । राधा छोट परिवार की पच्छधर ही । लम्बे चौडे परिवार कू देखिक बाबो मनुआ घवराव ओ । जीती मक्खी बँस निगल सबई । या बात कू चोखे हू जानती । घर चोखे ने भोजन बरव जागर वारे वार की पाती एक पीत फिर पढ़ी । ता पाछे निरनय लियो क वार के ताई चिट्ठी लिखी जाए । वान कलम-दवात निकारे जइ अपने मन की घुटन कू हलकी या तरिया कियो-

भरतपुर

30 9-48

प्रिय अनोखे,

तिहारी पाती पाई । मन कू तोस मिल्यो । ज घे कू जाँख मिली । भूखे कू भोजन मिल्यो । प्यासे कू पानी । आपने जो दो छोरान की विवरन भेजो है बिनमे ते हम निरजन जँची है । बाए देखिय के ताई में इतवार कू आ रह्यो हू । मोय भरोसी है कै आप घर प ई मिलीगे । सम्बध करवे की मोय जल्दी है । आप लडका सौं बातचीत बरलै । बाकी का माँग हैं जान ल । आप रुचि ल कै या वाय कू पूरो करवे को प्रयास कर । कष्ट के ताई छमा । किरपा के ताई धन्यवाद । बाकी मिलवे प ।

जापकी

चावेलाल

श्री अनोखेलाल 9/120 बेलन गज आगरा

कचन करन खरी

पाती लियी क चाखलाल नै कपडा पहरे अरु पोस्ट ऑफिस कू चल परी । इतते जाते समै जर उतते आते समै जनक विचारन म डूवती उतरती रह्यो । विचारन की ताता लहरन की नाई आती जाती रह्यो । सोने रह्यो-दुनिया म रोय राय क जीवन कोन बिहानी चाहै पर परिस्थितीवस वाए रोनी झीकनी पर । मुख म मुखी अरु दुख म दुखी हर एव दिखाई पर । एस तो विरले ई हैं जो दुख मऊ म्हीं प उदामी नाय लाव । चोख हू घर घर बाहर की समस्यान सी जूझ रह्यो । घरबारी घर माहि जक नाय लन त्ती । बाहर छोरावारे म्ही पार ह । चाखे दो पाटन के बीच पिस रह्यो । यही साचती फिरतो घर आयक अपने कमरा प निहाल हू के परि गयो ।

राधा नै आते ही व्यग्य बान छोडवो प्रारम्भ कियो । चोमे न अपन कू सम्भारत भए राधा कू समझायो पर जो बन्द विचार किए बठे हाय विन्न कोन समयावै । राधा प समझाइवे बुझाइवे को कोऊ असर नई परी । बोली

“ब्याह की चरचा चलते इ तिहारी ई हाल हू गयो हूँ । आग जान का हाल होयगी ?”

“भाई, आजकल की ओर मोहलत द द ।”

“अजी तिहारी आजकल की सुनते सुनते में तो तग आ गई हू । तिहारे वस की बात नाए तो घर बठो मै इ निक्स के जाऊँ ।”

अर । सबर तो रख अवकी इतवार खाली नइ जाइगी ।’

“राम जान तिहारे इतवार कव आवगी । तुमकू ना गढ ना डूव । दुनिया कितेक नाम धर रही ह याकी कछू ध्यान ह ।”

चोखलाल नै खून की सी घूँट पीके कही-

जन्ठो परमेसुरी, अब साझ ह रही हू दोना खन मिल रहू है । दियो बती कर । भगवान की नाम ल । दो नाम मोऊ कू लन द । में जवक इतवार प जवखि-जवखि जाऊगी । तू के नी तिरवाचा भर दऊँ अरु देख याहू कू जान ल करवे धरवे वारी तो कोऊ और हू हम तुम नोन हाय ।’

इतवारऊ आयो जा रह्यो हू’

माए कहक राधा सझा बाती क चली गई । सूरज डब रह्यो । अज वामें तेज नाओ । सिदूरी फलाव के पाछ कारी पगछाई चली आ रही । चाख या समै सिमटो सिमटो सी प्रकृति के या सरूप कू देख के सोच रह्यो क समै सदा एक सी नाय रह । उवार-चढाव आते इ रहे । सूरज या कथा कू राज दुहराव । समझदार याए समझ । ना समझ या प ना सांन ना विचार । गुनीजन कहे अकलवद कू इसारी अरु अहमक कू फटकारो बराबर होय यही सोचती सोचती चाखे कबहू इतवार कबहू आगरा, कबहू निरजन की अनजन कल्पनान म खाती-खोती सो गयो ।

दौरधूप

चोखे इतवार कू जनोखेलाल के ह्या आगर पहुँची। जनोखेलाल चोखे की वाट देख रह्यो। बाके पहुँचते इ दोना निरजन कू देखिबे बाके घर जा पहुँचे। निरजन न अपनी बठक भलीभाति सजा राखी। आधुनिब ढग की फरनीचर नगी भयो। सागौन की सोफा सट जाप इनलप की गद्दी लगी भई बीच में सटर टेबिल प अखवार धरे। एक कौन म रडिया सजी भयो। एक जोर तख्त प गददा बिछी भयो ताप साफ चद्दर बिछी भई। करीने ते मसनद लगे भए। कमरा के दोनू दरबज्जेन प रगीन परदा लटक रहे जा पखा की हवा में फरफरा रहे। निरजन की उमर तो नई पर बात सूझ बूझ भरी। सामाजिक व्यवहारिक सम्बन्धन के उतार-चढ़ाव सौ भली भाति परिचित हा। याही सौ बाने बठक ऐसे सजा राखी जैसे काऊ सफल दुकानदार अपनी दुकान कू सजाय कै राखी।

निरजन नै बड़ी विनम्रता सौ चीन अरु अनोखे की स्वागत सत्कार कियो। चोखे कू निरजन पहली झलक म ई जच गयो। रंग गोरी बल लम्बी कटारदार मूँछ, बारन म बल पर रह। निरजन चन्दा के अनुरूप लग रह्यो। बाने ऐसी अनुभव कियो के मंदिर और देवता दाना ई दिव्य अरु भव्य है। चाखे मन म साचिबे लगी या मीके कू नइ छौडिनो चइए। चोखे कू सब कछु चोखी इ चाखी लगी। राजी खुसी पूछ के चाखे नै सम्बन्ध की चरचा चलाई। निरजन न सुनक नैन नीचे कर लिए। थोरी देर म मौन तोरी अरु वही बसे कर्ता घर्ता तो हमारे मामा हैं पर अम्मा पहले छोरी देखिबे की कह रही है। चोखे नै छोरी की सुन्दरता की बात छाती ठोकके कही। छोरी दिखायबे की बात हू स्वीकार कर लई। तेन देन की बात साफ नइ है पाई।

चोखे कू तो चट्ट भगनी पट्ट व्याह की लग रही। बाने निरजन सौ कही के अपनी अम्मा सौ पूछिक छोरी देखिब की तिथि बताव। निरजन अपनी अम्मा सौ पूछिबे भीतर गयो। या बीच म चाख नै अनोख त, छोरा पसन्द आबे की बात कही। अनोख की छाती फूल गई। चेहरा प चमक आ गई। अपनी जस सुनिके कौनसुस नाय होय। बू चोख ते बोली, छोरा का है लाखन म हीरा है। देखिब दिखाब लायक है। अपने बाप कू गयो है। याको बाप इतक मिलनसार व्यवहार कुसल, हंसमुख, सहयोगी अरु समाजसवी हा क एक पात जा काऊ बातें मिल लती बाई की है जाते। निरजन न हू अपने ध्यौहार अरु मुनन त पिता की छवि कू और निखार दिया है।”

निरजन को गुनगान सुनिकेँ चोखे नै, पूछी, “निरजन की सगति कसी है ?

अनोखे नै फिर अपनी बात प्रारम्भ करी जसै पोस्ती कूँडी के इतकूँ क बितकूँ याही भाति निरजन, क तौ बालेज, क घर । सम मिल तौ नागिरी प्रचारिणी सभा जरूर जाए । म्हा साहित्यकारन वौ जमघट लगै । साहित्य सौँ निरजन को लगाव है ।’

इतेक म निरजन सलाह सूत मिलाइ क जा मथौ । दोनोन की बात रुक गई । दोनोन वौ ध्यान निरजन के हीठन प पौचौ । निरजन न धीरे सी कही, ‘अम्मा यो कह रही है, आप कही तवई हम चल दें ।

अनोख वाली, “छोरी देखिबे की बात तौ तव होय जब तेन देन की त है जाए ।

निरजन बोली ‘मथुरावारी पारटी पचास हजार रुपया लगाइव की कह रही है । धौलपुर बारे साठ हजार रुपया की कह रहे । एक भरतपुर बारे जीरक आए । विनेऊ पचास साठ हजार रुपयान की कही है ।’

या बात कूँ सुनिकेँ चोखे की चेहरा उतर गयी । अनोखे नै बाकी हाथ मसक क, म्ही बाके कान के पास लै जाइक हीलें ते कही ‘अर ! यार आजकल लडका देखे नाय जाए, खरीद जाए’ ।

हिम्मत बांध केँ चोखे नै निरजन सी कही, जो काम करनी है वामै देरी सौँ । तुरत दान महा कल्यान ! हम चाहे केँ छोरी देखिबे कूँ हमारे सग ई बलो ।

निरजन कूँ इतेक जल्दी की आसा नाही । वू हा कसैँ कर देंतौ एक पात फिर अम्मा ते पूछवे भीतर गयी । काम बनती दखि क चाख कूँ राहत सी मिस रही । साचिबे लगी, चलो चाखी है दर दर प ठोकर ई घानी परी घर बठे ई छोरी कूँ वर मिल गयी । ब्याह म का ए रुपया ई तो खच करने हैं । छोरा पनको भयो ना क जाधी ब्याह भयो ना । रुपया को हूँ का देखिबो । रुपया तो बात कूँ केँ स्वाद कूँ ।

अनोख हूँ ई सोच रह्या क बात बनती नजर भा रही है पर बिचौलिया की कबहूँ कबहूँ भारी ख्वारी होय । कबहूँ-कबहूँ दा पाटन क बीच म सावत बचो न काइ बारी बात है जाय । कबहूँ कबहूँ बेटीवार अथ बंटावारन क बीच म बिचतव्य विमूढ़ की सी नौरन आ जाय । चना क सग पुन पिस जाए । बात बन जाए तो छोरी को भाग प्रियर जाए तो बिचौलिया क पुनरा फजीत । इत माऊ गिर ती बुआ अह उत माऊ

गिर तो खाइ। थोरे दिना पहल बू भरतपुर के रामदत्त बेटीवारे अरु कोटा के वालकिसन बेटावार के बीच म विचौलिया की दुरदसा देख चुकौ। विचौलिया ने वटीवारे को हित चाही वितकू बेटावारे की कहनावत ई क छोरा को सम्बन्ध करायो जाए। छोरा के बडे भया नै लव मैरिज कर लई यासो छोटे छोरा के कोऊ दाँतऊ नाँय देख रह्यौ। विचौलिया नै सम्बन्ध तो करा दियो। सगाई हू हे गई पर सगाई पीछ बेटावार की ओर ते जो पाती आई बाए पढिक विचौलिया की भूख प्यास हराम है गई। पाती मे लिखी जा कपडा सगाई प दे गए व जीव जन्तून कू पहरवे जाग है क अजायब घर म रखने जाग है। विचौलिया न हू ऐसी ज्वाब दियो कि क बेटावारी तिलमिला गयो। कार लव सीधो विचौलिया के दरवाजे प आ धमकौ। विचौलिया न मना कर दई छोरा को ब्याह और कही कर लेओ ऐसँ निर्बाह नाय हायगौ तब बेटावारे की आख खुली। अखीर म काइली माकूली भई तब कहु जायके ब्याह भयो। ब्याह के सम बेटीवारी कच्ची खा गयो। बेटावारे की चढ बनी ता सम विचौलिया पै कहा बीती बुई जानै।

अनीखे विचौलिया बनके एक ओर आबेवारी बदनामी ते वचिब की साच रह्यौ अरु दुजी ओर सुख की हू अनुभूति कर रह्यौ तवई निरजनन आइक विचारन के ताने बाने कू तोरि दियो।

'अम्मा अरु भन सग चलवे कू तैमार हैं।' निरजन बाली।

तुमऊ तो चलौ' अनीखे ने कही।'

'मे हू सग चत्रू ?'

'हा, यामे का बुराई है।' अनीखे नै जोर दक कही।

थोरी देर पाछ निरजन, निरजन की मया, निरजन की भन, अनीखे अरु चोखे आगरा सौं भरतपुर कू चल दिए। आगरा सौं भरतपुर तब बस म बठे बठे अपनी अपनी तरिया साचते चले आ रहे। चोखे कू या बात की चिन्ता ब्याप रह्यौ, के घर कह क नाँय आए। घर बेढगेपने ते परी होयगौ। बही ऐसी ना होय के कुढग कू देखि के अंधे के हाथ ते वटेर निकस जाए। चोखे क मन म एक ई विचार आयी क घर पहुँचते इ मोहल्ला म हल्ला मच जाइगौ। याते ई ठीक रहैगौ क अपन यार के घर रनजीत नगर म सबकू ल जायो जाए।

निरजन की मया सोच रह्यौ छोरी पमद आ गई ती अ गूठी पहरानी परगौ। नई पसद आई तो कसे पिंड छुड़ायो जायगौ।

निरजन सोच रह्यौ क इकलौतो बेटो है लाड चाब म परी है। कहु दिमागनार भई तो घर को काम काज कस चलगौ? तीन-तीन भँनन को ब्याह करनी ह। जमी दायजी लियो जाइगौ बसो इ दनो परगौ। कौन सी गल निकासी जाए।

निरजन की मन अपने ढंग से सोच रही। भाभी की रूप रंग कमी होयगी ? नाक नक्सा कैसे हूँगे ? कसी मेहमानी होयगी ? वसी घर होयगी ? भाभी की मया कसी होयगी ?

अनोखे एक आर अपनी वाहवाही लूटवे की मुसी म मिहर उटंओ ती दूसरी ओर विचौलिया की ख्वारी हेवे की विचार आते ई हिल से जाती ।

या तरिया सब अपनी अपनी उधेड बुन म हैं । मोन होते भए हू आप आपते कहते, आप आपकी मुनते भए पाचा जने भरतपुर पहु च गए ।

चोखे नै भरतपुर उतरते ई अपने मन की बात अनोखे कू बताई—अपने घर ना चलक रनजीत नगर म रामसरूप के घर चल । म्हाई छोरी दिखाई जाए । चाव पानी कलेऊ सब म्हाई करा दियो जाए । छोरी पसन्द आ जाए ती घर लिवाय कं नाओ जाए । बात अनाखे के गरे उतर गई ।

पाचा तामे म सवार है क रनजीत नगर रामसरूप क घर पहु च गए । रामसरूप समझदार मांस ही । पलक अपकत ई सब समय गयी । बान अपनी वठक म निरजन निरजन की मया मन कू आदर से बठायो बितकू चडा कू मोटर साइकिल से बुला लियो ।

रामसरूप के कमरा मे सीलिंग फन लग रह्यो पर तीऊ एक टेबुलफन अरु लगा दियो । थोरी देर म ही सीरो पानी आ गयो । ता पाछ ठंडो सरवत अरु वाके लग भीठे अरु नमकीन की प्लट आ गई । निरजन की मया अरु मन कू पल पल भारी पर रह्यो । वे तो अपनी ध्यान दरवजे प लगाए बठी कब छोरी आब, कब बाए देखें ?

अखीर मे चंदा सज धज क कमरा म आई । चन्दा के जाते ई कमरा म उजेरी से छ गयो । चंदा काई, बान ती चंदा की कोर ती एसी रूपवान क तिन धरवे कू ठोर नाही । तीनी देखते ई खिल गए । मन भर गयो । छोरी लूली लगडी ती नाय याकी जाच के ताई चन्दा प भीतर ते पानी मगवायो । चंदा मोरन न झुकाय के गरदन नीची करके नाप नाप क डग धरती भई भीतर गई तब रामसरूप न कही, 'हमारे यार की छोरी चंदा तो चंदा ई है । घर म पहुचते ई घर चमक उठेगी सीतलता छ जाइगी । चन्दा पानी लक आई । निरजन की मया नै बावू अपने पास बठा लियो । छोरी गूगी ती नाय । तुतलाव ती नाए । दात गं दे ती नाए । अख नाक सही है क नाए । इन सब कू देखिभालके बातचीत करके सब तरिया सन्तुष्ट है क चन्दा कू छुट्टी दई ।

चन्दा जो कबळ निचावली नाय रहती आज लाज क मार अपनी पलकन नै मोरन नै नीच झुकाय क जगन कू सहेज क धीर धीरे चल दइ । धारी देर पीछे

राधा, अरु रामसरूप की बहू, निरजन की भया अरु भन के पास आइ गई । बिनते चन्दा की बडाई करवे लगी । रामसरूप की बहू वाली, “हमारी चन्दा के सब तरियाते ठोक वजायके” देख लेओ । काढवे बुनवे मे पारगत है । काऊ बात की कमी नाए ।” निरजन की भया बोली, ‘भैनजी ई बात तो चोरे म दीख रही है हाथ कगन कू आरसी का ?’

पर राधा तो ई चाह रही क बिनकू उत्तर मिलनो चइए । निरजन की भया कू छोरी तो पसद जा गई तीऊ बात साफ नाथ करी । कही, ‘हम घर जायके खबर कर दिने । मैं अपने भया सी और सलाह सूत कर लउगी ।’ वटीवारेन की आसा प पानी सी फिर गयो, फिरऊ ससार आसा प टिको है कही है—‘जब ली स्वासा तब ली आसा’ । चोखे नै आदर सत्कार अरु मान मनुहार मे कोऊ वसर नाथ छोडी जा तरिया सी बिनकू लिवाय क लायो, बाही तरिया सबन कू आदर सी विदा कियो । मन म सोचतो रहो कहुँ भौनी बिगर न जाए । पहले गस्सा म ई माखी नई आ जाए । चढी छान उतर नई जाय ।

हूँ भरो उत्तर नई मिलो तो चोखे के घर म उगामी छा गई । बेचनी वड गई । सबकू चिन्ता व्याग गई । कई दिनान तक तो चोखे निरजन की जोर सा बाट बाही तरिया देखती रह्यो जस—मार उमडत घुमडत-गरजत बादरन की माऊँ टकटकी लगाय क देखें ।

जागरे ते जब कोऊ उत्तर नइ आयो तो राधा नई चोखे कू जागरे पठायो । चोखे फिर अनौखे कू सग तक निरजन के घर पहुँचो । अनायास दोनोन कू देखिक निरजन सबपकागो । अबक निरजन की बैठक मे दू रानक नाई जो पहल लिखाई परी । सामान बरीने सी पहल जैसी नाओ । मिलवे म हूँ पहले जसी ललक नाई । कही करे लाड परीसा मे बगन आए ब्याह के लखन तबई पाए । बिनके हाथ भाव सी इ चोखे नै अनुमान लगा लियो ।

बात यो बिगरी क निरजन के घरवारेन कू चोखे की माली हालत की कच्ची चिटठा बाहू भाति हाथ लग गयो । बिन मालुम पर गई क चाखे ठन ठन पाल मदनगुपाल है । इन तिलन मे तेल नाए । हीग क काथरा म वासई वास है । चिकनाई के नाम प या हाडिया कू धूप म धरवे पै हूँ हाथ कछू नई लगगी । ब्याज पै सिगरी रुपया द राखो है । जेबर जाठी गिरवी रखके किसानन कू रुपया ब्याज प दियो है । बरसात भई नाए । रुपया लोटिबे के आसार नाए तो ऐसी ठोर कौन जु म खेल ?

आदमगत के पाछ मतलब की बात भई । निरजन नै अपन मामा की बहानी लके बात कू टारनो चाही ।

कचन करत खरी

‘मामा चाह रह्यो है के पहले मेन की ब्याह कियो जाए ।’

‘या बात कू जाप पहलई कह देते तो हम आपकू ची कस्ट दते ?’ खासत भए चोखे ने कही ।

‘का कर ? जम्मा की राजी तो हती पर मामा के भागै पेश नाय खाय रही ।

‘भाई मामा ते हम बात कर ।’

‘अजी मामा ने तो दो टूक मना कर दई । वसें आप चाही तो मिल लेघी ।’

‘भाई आए हैं तो मिल लवे म का हज है ? काजी याव नई करगो तो का घर हू नई आन दैगो ।’

‘आपकी इच्छा ।’

ता पाछ चोखे अर अनोखे, निरजन के मग आगरे के बेलनगज म वाके मामा के घर पहुचे । निरजन की मामा, घर नाजी । बू अपनी नोकरी प गयो । बाए लिवावे निरजन गयो । चोखे अर अनोखे दोना विचारे बैठे बठ बतराते रहे बेटा वारेन के बडे नखरे हैं । बडे दिमाग है । सूधे म्ही कौऊ बातई नाय कर । काऊ कितेकऊ सूधरी होय पर टेढी ई टेढी चल । बिल म हू सूधो नाय जाए । सब बारह बारह मन के भए बठे हैं । मुरसा की नाई म्ही फार । करकटा की नाई रग बदलै । बगुला भगत बनवै सिगरी मछला कू हडपनी चाहे ।

निरजन अर वाके मामा आए । जो बात निरजन ने कही बुई बात वाक के मामा ने दुहराई दई । घर के भीतर ल जाइके अनोखे ने भीतरी-भूतरी बात कही पर निरजन के मामा ने तो कलमा ई नाय पढी । लन दन की सफाई की बात करी पर बान तो हाथ ई नाय धरन दियो । बाए तो जेच गई क या बगुला म तो पाखई पाखन को डेर है । मास तो नामऊ कू नाएँ । जीमती माखी कैसे निगली जाए ? बाके पास चित्तई चित्त हो चित्त की तो नामऊ नाजी, याके बिना तो सब चारो खाने चित्त होय ।

हार झकमार के चोखे अर अनोखे जपनीं सो म्ही लैके बापिस आ गए । अनोखे कू भारी दुख भयो । निरजन पहलई मना कर दतो तो इतेक आइवे जाइवे अर खर्चा को भार तो बचतो । चाख के पान जब पइसा हती तब तो नाय ब्यापती पर जब तो मुरगी कू तनुआ को घाव ई भारी है रह्यो पर बान अपने होठन प ऐसे भाव नइ आमन दिए जिनमो अनोख कू धक्का लगतो । चोखे ने अनोखे ते कही या ? ओर देखियो पर पहन पक्की करक खबर करियो ।

अनीस बोली, "पनरी बरत" ई ती ई धर बरो नई ती पूरो घर छोटी देछिये भरतपुर काई नू जाती। ई ती बाद म वात बिगरी है। घाजल एसी ई है रह्यो है। ई ओघा तोई पे नाएँ चोग बढ़ती नई महुँगाई अरु बड़ते भए दहजा नें समाज म हाड पदा कर दर्द है। बार घासार घटव न नाएँ बढ़िये न ई ममती।

चाग उताम सौं म्हाँ सटबाए भरतपुर लोट आयो। जब बु घर पहुँची तो बाक सटव भय युग भए अगन स घुपरे नू दधिक घरवार समझ गए, दार म कछु पागो है। जब नाँ सारो राम कहानी सुनाई तो पल भर म पाँसो पलट गयो। ज चो अरु राधा न अपने अपने नरम ठोए। राधा म सखडान आगरे बारे नू अरु हजारन चागे कू सुनाई। चदा प ना बीती युई जानें पर बाक सपने चूर चूर हे गए। बु अपन दुख सौं बम दुखी पर अपनो मया-भाप अरु दासी क दुख सौं ज्याना दुखी हती। बाए या वात की और दुख हा के समाज म छात्री की परख एख कर जत बाऊ दोर की परख करो जा रही हाम। बान पूँछ, दात रग, रूप चाल ढाल सब देखें। तापाछ हू जो उत्तर मिल बु सन न हिएन नें हिलाद। सिगरे घर बारन की नूख, प्यास तीद उड गई। चदा परकट पच्छी पीनाई रात भर करवट थदलती रही।

चाख के सामइ रात भर सार चित्रन की रीन घूमती रही। दिन प दिन बीतत गए। न्गा सुनल पच्छ के चदा की नाई बढ़ती गई, पड़ चला न व्याह की पहुँ बाऊ हिमाव किताव नई बठी। जहाँ पहुँ पाव धरत, म्हाँई धरती खिसकती दियाई परे ई। चोखे की हालत घस्ता है गई है यात्री कहानी बाकी चेहरा मोहरा ई नाँय बहती बाकी घर कह दती।

बातिक की फसल क पीछ बसाव की फसल प दारमदार हो, पर बादरन नें आँख दिया दर्द। किसानन की बीज हू नई लोटी। चारा घोर अवाल गहरा गयो। चोखेलाल के आसामी आँख चुरावे लगे। चोखे काहू त कहती ती का म्ही ते कहती। बाकी आँखिन के सामइ ग्राहि ग्राहि मच रही। ग्राते पीत घरन म हू दो जन की राटी नाँय मिल पा रह्यो। डोर डगड गार न मार न्वारे तुज रह। पाके के पानी की पारी मिलत है रह्यो। अखवारन म गबर छप गई न पानी अब रासन काड सौ मिलगो। बजार म सब चीजन प भाव चढ़ गए। धी के दरसन दुरलभ है गए। साग सब्जी की टोटी पर गयो। ऐस म आनामीन की माऊँ देछिवी, अपनी गाँठ की खोवी हो। लोऊ चाखे नें अपने दो घर आसामीन कूँ परिचायक दयो। जिन जिनत बान बात करी बिनकी राम कहानी सुनिक चोखे की आँखिन म आँसू जा गये। आसामीन के घर की हुलिया बिगड़ गयो। बिनकी घर खुद रोमती सौ दिजाई पर जी। चोखे की हालत बिन दधिक कछु ते कछु है जाती। जब चाखे घर माहि आती तो बाकी हालत और खराब है जाती। बाकी मया पापले म्ही ते बहती 'चाखी है,

चोखे कूँ चोखी फल मिल रह्यो है। सब बड़ु जुरो जाठो ती आसामीन कूँ लुटा दियो अब घर कौ गाडो कमें चल ? चन्दा वी व्याह कैसेँ होय ?

अ ची साची कहती। घर म रूँपयान के दरसन दुरलभ है रहे। घर म दानेन के लाले पर रहे। चन्दा जो दिन म दस डूँ स बदलती जाके घर मे साज सिंगार कौ सब सामान भुसरा की नाई भरी रहती पाइवे पीव की कछु कमी नाई, म्हा मुसे ग्यारस कर रहे। बारन मे ती तल डारिवी दूर रह्यो छीकवे के ताई हू तेल नाँओ। दात अरु राटी मे वर पर गयो। चोखे ई बहक वाह छुडाती ना बताऊँ होम करते हाथ जर रहे हैं।

अकान की छाया म बाकी ही नाय, सबको बुरी हाल है गयो। अब बु काहू के आगँ हाथ पसारतो ती वा म्ही ते पसारतो। कोऊ या बात प हू विसवास करवे वागै नाओ कँ चोखे कौ ई हाल है सक। लोग समझते चोखे डोग रच रह्यो है। खँर काऊ तरिया चल्ही जर रह्यो। पर चन्दा के व्याह की चिंता चोखे के घर कूँ खाए जा रही। चोखे कूँ दिन ब दिन जरजर कर रही। चिंता की आग म बु दिन दिन तिल तिल जर रह्यो। बाकी कचन सी वाया सूख के वाटो हुई जा रही। घरवारी के दिन रात के ताहन बाकूँ और छेदत।

चोखे उक्ताय कँ एक दिना छारा देखिबे डीग जाय पहुँचो। डीग मे करकल्ली कौ घर चोखी मानूम परो। पूछताछ करकेँ करकल्ली की देहरी जाय ढोकी। करकल्ली म रामसिंह पहाडीवारी टेर लियो। हुक्का पानी की पूछताछ करक करकल्ली ने चाखे ते पूछी 'कहो भमा कस आइबो भयो ? चोखे ने अपनी किस्मा कहा। फिर काए नाते गोतेन कौ मिलान भयो। नाते गोते बचते ई रामसिंह करकल्ली की कहानी सुनावे लग्यो।

भया चोखे, इनी अबई अबइ अपनी छोरी कौ व्याह कियो है। व्याह की खातिरदारी अरु दन-सन जा तरिया कौ भयो है बु काउते छुपो नाएँ।

चोखे न कही ई बात मोय रगो ने बता दई है।'

फिर काए आप देख लेओ, सरूप के अनुरूप व्याह है जाए। माँगिबे ताँगिबे की बात तो हतई नाएँ आप ती नामी आदमी हो।' रामसिंह बोली।

अजी सरूप के अनुरूप तो है जाइगो पर पीछ खाल खिचाई नई होय। समधी तो बन प्यार जोरवे कूँ पर फिर प्यार म पाथर नई पर, याते दन लन की बात साफ है जाए तो चोखो है। चोखे ने चिरोरी करी।

चोखी सो कचन दरस ती पाथर चौँपरिग ?' रामसिंह ने हँसते भए कही।

धोरी देर म छोरा देखवे कूँ आ गयो । छोरा जयपुर म नौकर हो । वई ठोरन ते लोगवा पीछ पर रहे । चोखे न छोरा देखो तो वाकूँ पसद आ गयो ।

अब करवल्ली की बारी आई बू योली, “भाई चाखे दन लन तो डोम भाट की वाज है पर सबनो पहल छोरी सुदर अरु पवी लिखी चइए ।

‘वोहरेजी में अपनी छारी की बडाई अपन म्ही त कस बरू ? मालिन अपने बेरन न अरु हलवाई अपन दही कूँ कब छट्टो बताव । आप चलक अपनी आखिन सौं देख लेओ । मन भर जाए तो बात जान करियो नई तो तुम अपन पर अरु मै अपने घर । चाखे ने अचन अपनी बात सरकाई ।

‘ठीक है छोरी छोरा के अनुरूप है ती छोरा आपको है ।’

“तो छोरी वू देखवे की बात बताओ कब, कस अरु कहीं राखी जाए ?

‘अजी ऐसी जल्दी वाए आप हमारे विस म पूछताछ कर लेओ । बछू हमकूँ हू सम देओ ।

अजी हम का पूछताछ करिगे ? हम तो पूछताछ करक ई आपकी सरन म आए हैं ।

“अजी सरन तो भगवान की है, हम तो मान्त है । हाँ इतेक जरूर कह दें कि जब आपकूँ छोरा पसद है तो हम आपकूँ अपने आइवे की सूचना दें दिगे । चिट्ठी डार दिग । चोखे न मुवतेरे हाथ पाम पीटे पर करकल्ली लाटक विलया ल गए । छोरी देखिव की छेता दियो ई नई । अखीर मे चोखे मोह लटकाए भरतपुर लौट आयो । अर तो बाकी मह की सी बाट देख रही । छारी कूँ बहू छोरा मिल्यो वं नई याके काज अँची अरु राधा दरवाज की ओर जोख लगाए वठी । चोखे न घर पहुँच क करवल्ली की सिगरी बात सुनाई तो धोरी सौ धीरज आयो पर ओस के चाटे त का प्यास बुझे ?

चोखे ने करवल्ली की चिट्ठी की कई दिनान तक वाट देखी । रोज मुहल्ला म चिट्ठी रसाल आती । चोखा वात रोज पूछतो पर चिट्ठी नई आई । चोखा न जवाबी चिट्ठी डारी तब कहु जाइक चिट्ठी तो हाथ लगी पर सग म मिरासा ई हाथ आई ।

और छोरा देखिव के ताई चोखे न साहम बटोर के निगाह दौडाई । ईसुरी की सारी गोविन्दगढ म बतायो । चोखे ईसुरी कूँ लके गोविन्दगढ पहुँचो । याकी सूचना पहलइ द दर्ई । सयोग सौ छोरा अरु बाकी वाप गोविन्दगढ मिल गए । छोरा को वाप खूबसूरत है । याते ई चोखे सतुष्ट है गयो । सबनो पहल नाने गात बचाए गए फिर छोरा दिखाव की बात आई ।

चाखे न हँसते भए रुही, 'अजी साचो जच्छी तो खिलीना सहा होय । याम काई दूसरी बात नाएँ ।"

इतेक म मूलचन्द आ गयो । इकरो हाड, रग गोरो, लम्बी बेल, चेहरा महीरा चोखी । बात करबे म फरबट । बाए सामान्य ज्ञान कौ पच्छी ज्ञान हो । तबई ती प्राइपेट कालज म बाके पाव जम भए । खूब जखवार पढतो । बान्धन हू बाके हाथ मे अखवार लगौ भयो । चोखे बाकी बातन सी भीत प्रभावित भयो । घर वर दोनो बाकू जँच गण ।

लन दैन की बात करबे मे ईसुरी पतनछुरी ही । पेट म भीतर घुसक बात कू निकाम लातो । बान दोनो पच्छन सौ अलग अलग बात करके तालमल बठायो । छोरी देखिबे के ताई दूसरो दिना ई त कर दियो ।

दाना हँसते भए भरतपुर लौट आए । चाखे के घर म लुसी की लहर दौड गई । घर की सार सम्हार करी गई । घर खूब सजायो गयो ।

दूसरे दिना भगवनी परिवार दलबल के सग छोरी कू देखिबे न ताई आयो । चाखे न बिनकी खातिर म रुपया पानी कौ तरिया बहायो । जात धाते ई ठंडी सरबत दियो । कलेऊ म भाति भाति की मिठाई, पान धीडी सिगरेट सामई रख । चन्दा कू देखिके सब खुस है गए । बात पूरी तरिया तुल गई । गोविन्दगढ के मद अख बेयर एक कमरा म बठके विचार करबे लग । ईसुरी हू बिनके सग बँठी । आध घटा पीछ ईसुरी बाहर जायो । मन की घुडी खौली । जा पहले त करयो बामे और बढोतरी कर दई । याहू प गोविन्दगढ पहुँच क अपने जमाई त पूछके सुचना दबे की कह क चल दिए ।

या सम चोखे की मन बठ गयो । बान स्वीकारो क अथ बिना सब अनथ है । अथ ईसुर तो नाएँ पर ईसुर ते कमऊ नाए । अब बाए मालुम परी करगीन चित्रन क पीछे निरी सफेदी ई सफेदी है । दुनिया म हाथी क दाँत दिखाव के भीर हाथ खायिब क जीर हाथ । मन की बात कू साफ साफ नाथ कह । काऊ कर्ता-धर्ता मामा कू बतावै कोऊ जमाई कू बताव, कोई मौसा कू बताव पर ये सब टारब की ऊपरी बात हैं । पढे लिखे समाज सुधारक मचन प लम्बी चौडी बात करब बारे जात तो घूम बनाब खूब लम्बी चौडी हाक । आदसन न खूब बखार पर जब अपने प घाब तो सब फिमन जाएँ धुक के चाट ल । जा मम सम्बन्ध त करी जाए या सम बात और होय । सम्बन्ध के पाछ छारा कू नीकरी लग जाए ती छारा क भाव और बढ जाएँ । सही बात है सम सम क भाव है चौडी पर दाब है । बेटी वारे की भलमनसाहत, प्रतिष्ठा सवा लडकी की रूप सिच्छा सातीनता

सब धूर में मिल जाएँ। एक ओर ये सब दूसरी जोर धन की पत्नी हल्की भयो तो काँटो नई तुल पाव।

चोखे मन ई मन सोचती रहो। 'बर' कू वुही बात है कँ सुंदर सृष्टि बलिदान चाहे दूल्हे बुई जो मिलिबे म दुलभ होय। दुहिता बुई जा सात पीड़िन तक दोहन करै। इनई विचारन में चोखे ह्वतो उतरती रह्यो। सिंगरी घर सोच म पर गयो। चन्दा बिस की सी घूँट पीक रह गई।

सकल्प

कानिक की फसल गइ ती गइ पर बसाख की फसल कँ हू लाले पर गए। बसाख अपन नाम कू सार्यक कर रह्यो। नामइ वै साख। लोगन की इ सूखता है जो साख मानक चल। बाइ तरियाँ जस रगी भइ कू नारगी जमी भई कू आखरी सार कू खावा अह चलती भइ कू गाडी कहे।

बादर आते गरजते पर बरसा के नाम प आँख दिखाय रहे। चोखे के आसामी बसाख की फसल प आँख लगाय रहे। चोखे आसामीन माऊँ आख लगा रह्यो पर न चोखे की मनचाही भइ न आसामीन की। बछू किसान तो खेतन म बीजहू नई डार पाए। जो खपया करेजा करके लाए दू पेटन के हवाले है गयो। जिन धूरि म बीज डारी बू धूरि म ई गयो। चारी ओर भयकर अकाल परि गयो। चारा और बाहि नाहि मंच गइ। खेतन माऊँ देखिबे म हूँ आँख पघरावें इ। गरीबन कोइ नई अमीरन की जीवो दूभर है गयो। खेत की फसलइ नाय मारी गइ उगाइ बी फसल की कचूमर निकस गयो। साची है खेत म होय तो मंडी म आव। टकी में होय तो घर की मटकी में आव। चोखे कू चोरे म सब दिखाइ पर रह्यो पर बाके सामई चन्दा के पीरे हाथ करवे की सवाल है। चोखे के पास बछू नाय रह्यो या बात कू बछू मान्स इ जानत। ज्यादा मान्स इ समझते कँ चोखे क पास काऊ चीज की बमी नाय। लोगन न बिसवास इ नाय होतो। दूमरे चोखे नै अब तानू दियो इ दियो, लियो नाँओ। कबहू काऊ ते मागो नायो। यासी बाकू हाठ खोलिबी अखर रह्यो। जव जब चोखे ई अपने आसामीन कू टटोरो फजीते इ भए। जो लबे के छन हाथ जारते आत। नाक रिगडत आते अब दवे क सम आख दिखाय रहे। ठँ गा बतात। साची बान है —

काज परे कछु और है काज सरे कछु और।
रहिमन भँवरी के परे नदी सिराबत मीर॥

चोखे मन मार के रह रह्यो। माम बहते मरो हाथी विटोरा सी होय। दार विगर जाए तो काए साग की दर तो दइ है। डाररी मर जाएती पिंडन न वेलेइ है। चोखे कौन कौन कू कस समझतो क बू फापानद फरीर है रह्यो। जेवर जाठी गिरवी रख दियो है। वीन सी का म्ही ते कहना ? अब तो पट भरयो दूभर हे रह्यो अब चाखे की नजर अँची अरु राधा के हाथ पामन वे बचे खुच जेवर प हू गइ। बिनक सामई म्ही योलिवाँ कोऊ आसान नाओ। बिनक हाथ पामन म त गहना लगी, नाहर की दाढ म ते मास निकासवी समझो। चोखे कब लो मुट्ट खचतो। अघोर म एक दिना म्ही खोलनी ई परी। फिर तो राधा अरु अँची न धुर पट्टीन सुनाई। अची बोली, पहल खूब पहली, अपने ताइ कछू तो रख पर ता सम तो दान क चवूतरा प बठ गयो। अब फटहाल है गयो ना ? राधा न कही 'दुनिया दूर की साच क चल आडे सम के ताई बचाके राख पर ह्यया तो हरिस्चंद्र बन गए। अब चालनी म दूध काढिके करमन कू टटार रख हे।'

अची प फिर बोले बिना नइ रह्यो गयो अरे चोखे तोय गढ न हूव। छोरी सयानी है गइ जित भाऊँ तन हाथ डारो कछू हाथ नइ आयो। पता है चो ? बिना पइसा वे मानसन कू कोऊ दा कौडी कौऊ नाय पृछ। तन मुनी नाय जर है ती नर है नइ ती पछी वे पर है। बिना पइसान क जयपुर जमपुर है। गधा फिर बरम परी 'तब तो जासामीन के बडे बडे गीत गात अब जागी न बिनके पास जो बढि बढि के बात बनाते।

अची बीच म इ बरस परी 'चोखे, बुरे सम म काऊ काम नाय अब याही सी ती कही है बिचा क ठ की पइसा अट की।'

राधा नै पूछी, 'अब कहा गए वे निहोरे करबे वारे जो दिन रात घेरे रहते। जो इ कहते चदा हमारी बेटी नाय का ? कहा गए वे चदा कौ ब्याह धूमधाम ते करबे वारे ? अब बिनते जाय क कहो ना के वा सम का म्हीं ते कही ?

चोखे राधा अरु अची दोनान की सुनती रह्यो। सुट्ट एसी खच गयो मानी स्याप सूँघ गयो होय। कहलौ तो का म्ही ते कहतौ। बाते भूल है गई याकू चोखे अब जान रह्यो। पर अब पछताए हात का जब चिरिया चुग गई खेत। बू या बात कौऊ अनुभव कर रह्यो वँ जो बिटिया के पीरे हाथ करबे कू छाती ठोक क दम भर रहे बे अब बाके पीरे परे म्ही माऊँ शाकऊ नाय रहे।

चोखे हिम्मत बाध क बोली कौडी ती अच्छे दाव कू डारो पर का कर मव पट्ट पर गइ। चोखे जो छब्ये हैव की सोच रहे पर दुब्ये हू नाय रह। किया ती अच्छे कू ही कोऊ जुआ ती खेली नायो।

अँची भराय के परी, 'हा इ कमी अरु रह गइ है याऊ कू करल।

“धरी मया, गलतो है गइ पर अरु पेट कूँ तो रोज चइए, वहा ते लाऊँ, काऊ कुआ पोखर मे जा गिरूँ का ?” चौखे रघासी सी है कं बोली ।

राधा जरु अ ची ने जान लई अरु रबर ज्यादा ख ची ती टूट जाइगी । यासो दोनान न अपने पामन क खंडुआ उतार कं द दिए । आसपास बेचव मे ती घर की लाज जावे की बात ई यासा आगरा जाइके खहुआ बेचे गए तब कहू जाइके पेट कूँ दान जुरे । चंदा सिगरे तमास कूँ अपनी आदिन सी देख रही । बुद्धि ते समन रही । मन म विचार रही । समाज की कठोरता अरु परिवार की विवसता नं बाके जीवन म भारी परिवतन ला दियो । धरती प जाके पाम नाय ठहरते, अरु जसी बहै बयार पीठ तब तमी दीज के हिसाव ते सादा कपडा लत्तान म आ गई । पढी लिखी, यासो साफ कपडान प ती बाकी ध्यान हौ सफाई पै जरुर ध्यान द ती । वाने इ ऊ देख लियो क दुनिग म पइसा की बडी पूछ है । चंदा या बात सी बडी दुखी ई के छोरीन की ब्याह करवो हासी खेल नाएँ । ब्याह के ताई छोरीन की दिखारी होय । बनार म जस चीज पसन्द जा जाए ती ल लर जाए नई ती उठाय क फ क दइ जाए । न बहु ना सोच दुकान की चीज पमद ना आव ती बाके फंकेवे ते वा चीज प का असर पर वू ती निरजीव होय, पर छोरी कं ती बुद्धि होय वू मास की ही लोथग नाय, हियो हू होय । बाए जब उठाय कं फकं ती बाप का वीत वू ई जानै । छोरी के दिखारे के पीछ मोल तोल की ज्यादा महत्व है ।

छोरान की नीलामी सी होय । याम मान्स को मूल्य कम पद की पूछ ज्यादा होय । जितेक ऊँचे आसन प देवता बठो होय बितेकइ ऊँची चढ़ावो होय । एक ओर बात है—मोल तोल है जात्रे के पीछ मान्स बचन सी अरु फिर जाए । व इ ना देखा जा छोरी वूँ देखिबे आए हैं बाके मन प का वीतगी ? वू प्रिचारी अपनी सहेलीन के बीच बस म्ही खोलगी । बोलगी ती कसे बोलगी । मुहल्ला म बयरवानी कितक नाम धरिगी कइ जने देखि गए हैं । सम्बन्ध नाम है पा रह्यो जरुर, छोरी मे कछु कमी होयगी ।’ कीऊ कछू कहैगो, काऊ कछू । जितेक म्ही जितेकइ बात । कौन कौन की म्ही रोनी जाइगी । कौन कौन के सामइ असलियत खोल क रयी जाइगी । चंदा के मन म या तरिया के अनेक विचारन की तानी वानी पुरी रहती । दूसरी तरफ समाज के ठेकेदार अरु दहेज के लोभोन की ओर धरना के वीज बुव गए । निहचे कियो, “मेरी बस चलै ती या दाचे कूँ इ बदल दऊँ ।’

चंदा के दिमाग म इ बात पर कर गइ क दहेज लेवे वारे ऐसे डाकू है जा माया कूँ देखे न काया कूँ । अ गूठी कूँ नाय उतार आगुरी कूँ इ काट । वे मुरगी ते एक एक सोने के जडा लबे के पच्छ म नाएँ एक दिन मे ई मुरगी कूँ मारक सान क सिगरे अ डान न लबो चाहे । वे भैस समेत खोवा करवो चाहें । वे ऐस सामाजिक सिवारी हैं जो अपने स्वार्थ क ताई सिगरे छत्ता कूँ तोरिकं छोटी बडी मधुमक्खीन के छटपटावे पै हू नकहु नाय पसीज । चंदा कूँ या बात की सबसे ज्यादा दुख ही

क बाप पे कछू नाय रह्यो अरु वेटा वारे म्ही फार रहे हैं। ब्याह होय तो होय कसें ? फसल अच्छी आ जाती तो बाप को रुपैया आसामीन प त लौट आतो अब तो दानो फसल बिगर गइ। अब तो पूरो रुपया डूब गयो। एमे मु पार परिवी आसान नआ। चदा जब अपने वारे म अपने परिवार कू दुखी देखती तो हिल जाती। एक माऊ अपने जीवन पे खुलाहट हौनी तो दूसरी ओर दादी, मया अरु बाप की दमा कू देखिके रोइवी आती।

यासों चदा ी अपने मन म निरनय कर लियो। कॉलेज जीवन मे चन्दा एक छोरा सो भीत प्रभावित भई। छोरा को नाम हो चकोर। जब जब कॉलेज की वाद विवाद प्रतियोगिता होती तब तब छोरीन के कॉलेज ते चदा जीतक प्राती अरु छोरा न के कॉलेज ते चकोर जीत क आतो। कबऊ चदा जीत ज्ञाती कबऊ चकोर जीत जातो। यासो दानो एक दूसरे त भली भाति परिचित हे गए।

एक पोत 'भारतीय समाज मे—दहेज की दवाी सायक है।' वाद विवाद की बिस रह्यो गयो। कछू छोरा छोरी या पच्छ म हे क दहेज दियो जाए जासो बाप की सम्पत्ति म त छोरा न के सम छोरीन कू हे हक मिल। पच्छ या पच्छ म है व दहेज नई दियो जाए। चकार नै या पच्छ म जी तक दिए बिन मुनिके दहेज की माइ भरवे बार हक्का बक्का रह गए। इतक तारी वजा क सिगरी हाल गूँज उठी। चन्दा कू चकोर के तब भीत पसद आए। बाकी भासन पसद आयो। बाकी सुभाव पसद आयो। बाके ज्योहार प बू रीश गई। चकार कू जब बिज की घासना भई तो बाके चेहरा प कोऊ अभिमान की रेखा नाई उल्टे विनय के भाव दिखाई परे। सब हे फल पाइक वृच्छ नई हैं।

चकोर की बिज प चन्दा नै एव सवाल पूछो, दहेज के बिरोध म जो बात होठन सी कही है मु होठन तकई रहिगी व जीवन म हू उतारी जाइगी।

चकार बालो, या बात की उत्तर तो सम ई देगो। हा मान्त् कू अपनी बात की धनी हौनो चइए। काऊ न कही है बिन नीति न नीब धनी धरनी क।

चन्दा अरु चकार की बात या इ भई। चकार बी ए पाइनल म पढ रह्यो हतो। बु डीग के पाग अऊ गाम की रहववारी। इन्हैरे हाइ की रूग गोरो, चहरा प गम्भीरता झलकती। कम बालती पर जब बालती तो फूँट करे हे। मु विनम त नीचा जो अल्ल टल्ल भारत रहे। विरथा अपनी तावन कू पावें।

या: रहन सहन की कम बालिब की, साग जीवन उच्च शिचार जोदन म उत्तरव की ई फल निवगो व चकोर न मुनिवमिटा म पहली स्था पायो। चारो आर हल्ला हे गयो। एव गाँव क रहवया नै सहन क पड़वयान कू पठार दियो। सापरी महतन सी जात गई। अघवार वारे बाकी

इंटरव्यू लबे के ताई दीरि परे । दूसरे दिना अखवारन के पहले पना प चकोर की फोटू अरु वाकी इंटरव्यू छपी । चदा नै जब ई समाचार पढी अरु अखवार म फोटू देखी तो फूली ना समाई । बाए ऐसी लगी मानी वाके परिजन कू ई सोमाग्य मिल्यो है । चन्दा न एके पाती भेज के वधाई दर्ई । चोरोर कू वधाई सदेसन की अम्बार लग गयी पर चदा की वधाई सदेस ऐसी लगी मानी अपन परिजन की ई वधाई सदेस मिलो होय । वाने वू सबसे अलग छटक रख लियो । चकोर हू चदा के व्यक्तित्व पे मन सी मोहित हो । वू जानती क चदा एक अच्छे घर की छोरी है । बाप के पास खूब धन है तोऊ अभिमान की नाम नाएँ । फिर मन कू मन ते चन पर । मन की बात मन तक पहुँच । मन ई मन वात हाय । याही तरिया दोनून क बीच मन ई मन विचारन की आइवो जाइवो होयो रह्यो । अरु चकोर एम ए की छात्र ही अरु चदा बी ए की दूसरी साल म आ गई ।

एक दिना चन्दा नै चकोर सी अपनी समझ के अपने मन की ब्यथा बह दर्ई । चन्दा न कही क बाके घर की हालत खराब है गई है । चकोर ने चन्दा की राम कहानी सुनी तो चकोर की रुपान चदा माऊँ और बढ गयी । चकोर नैऊ आत्मीयता से चन्दा कू साहस बढात भए कही, ये ती आते जाते रह । देख जिनके नाएँ झापडे बिनके है गए घर । ऊसर है गए सर, सर है गए ऊसर । वाने चदा कू डाढस बँधाते भए कही । सोच नई वित हानि की, जो न होय हित हानि । धन ती बादरन की छाया है । आती जाती रहे ।

इन बातन त चदा कू बडो चन मिली । चकोर के मन म एक और सहायुभूति उमडी चदा की गरीबी कू देखके पर दूसरी ओर चकोर के पास बडे बडे लोगन के आफर आ रहे । अच्छे अच्छे अधिकारी अच्छे अच्छे धनी मानी चकोर लगा रहे । या वात कू सब जानते क चकोर गाँम की छोरा है गरीब घर की है पर जाइव वारे सभे मे ती ऊजरो पच्छ दिखाई पर रह्यो है । या ई सी घाए दिना बाके घर पे अच्छे अच्छे फिरकया लगा रहे । या समझी बटीबारेन १ बाकी देहरी की धूरि ल डारी ।

चकोर की मया ती चरखा कातती बाके पास दो बीघा जमीन ही । कच्ची घर ही । कोऊ आती ती बठाये के ताई कोऊ ठौर नाई । जो कोऊ घर देखती बूई नाक मोह सिकोरती । चकोर वित सबकी मनोदमा कू पढती पर मन की बात कह ना पातो । बाकी मया नै सिगरी भार चकोर पे ही डार राखी । ब्याह के ताई कह राखी 'जसी करनी चाहे कर मे तो नदी किनारे की रख हू ना जान कब बयार आ जाय अरु कब उखर क बह जाऊँ । काम तो तोय है जसी तू चाहे वैसी कर ।

चकोर कू सिगरी भार सोपि क बाकी मया निश्चित है गई चकोर

वात कूँ जानती। चरोर न साची वान मचन प दहज र विरोध म लम्प चौडे भासन दिए हैं अरु अरु दहज के ताई म्हीं फनायी तो नाग तान द द वें मार दिग। यासी वाने मन ई मन बछू त कर लिया। वारी ई निरनय चंदा क मन तय न जानै कस पहुच गयी? चंदा कूँ हूँ विसवात है गयी क चकार बाक प्रस्ताव कूँ स्वीकार कर लेगी।

चंदा अपन घर की विगरी हालत कूँ दख रही। हर चरम की सूया सों आमामीन की हालत खस्ता है गई। जा अपना पट नाय भर पा रह व बजाए कस चुकाते। चोखे की रुपया पूरी तरिया ह्व गयी। कयहु बहू त धारी भीत उगाई है जाती तो बाई त घर की ढर्रा चल रह्यो। धोरी उगाई पट की भेंट है जाईई। चंदा के पीरे हाथन की का चलई। पट त छुट्नी मिलती ता ब्याह की बात सूझता।

चंदा क ब्याह क ताई बाऊ हिल्लो नाय लग रह्यो। चाख अ ची अरु राधा एक ओर रुपया ह्व जावे त दुखी है ता दूसरी ओर चंदा के ब्याह की विया कसका दती। घर म सदा दुख की वातावरन छायी रहती। चंदा या दुख कूँ कव तानू देखती एक दिना वान अपन पिता कूँ एक पाती लिखी—
पूजनीय पिताजी

मै भीत दिनान सौ घर क वातावरण सौ घुटन को अनुभव कर रही हू। हाय माम की बनी हू। भावन की उठियो स्वभाविक है। आपन गरीबन कूँ करजा बाटिके अच्छी क्रियो है। बिनके प्रानन की रच्छा करी है पर का कियो जाए, कई वरस सों सूया परि गयी। मै देख रही हू आपका रुपया ह्व गयी है। किसानन की बधिया बठ गयी है। बे बिल्कुल टूट गए हैं। बर्जा कस चुकाव।

इतकूँ बिना रुपयान के मेरे ब्याह के ताई आपक सामई विकट समस्या ठाडी है। बिना रुपयान के घर की घरुआ है गयी है। बिना धन के मानस की पूछ नाय रहे। आप जहा कह जाओ म्हा त निगस है क लौटो। मोय कई बेटावारे देख गए हैं। मरी कई वार दिखारो है चुकी है। मेरे रुप रग गुनन की ओर ध्यान न दक धन की ओर ध्यान द रहे है। धन ते बिनके फटे म्हीन नै सीद ती भली भला है नही तो म्ही सूज जाए। याही सौ बात बनती भई टूट जाए। याकी आप प ती प्रभाव परई है माप हू प्रभाव पर। याए मै होठन सौ ना कह सकूँ न लखनी सौ लिख सकूँ।

आप देख रहे हैं समाज की माग बठ गई है। आदमी क दो दो चेहरा होय तोऊ गनीमत है पर अब ती कई कई चेहरा अपनी जेब म रखें जब जती जरूरत पर बगोई चेहरा लगा ल। जिनके म्ही लहू लग गयी है बे बा बिना कस रह सक। यह सब समय की बात है। जा देश म ब्याह की आधार गुनन की बात ई बा देस मे अब दहज ई आधार है गयी है।

पर अब आपकू' चिन्ता करवे की जरूरत नाए । मैने सावित्री की भाति सत्यवान को चयन कर लियो है । याम कोऊ व्यवधान नाय होयगो । जाप तो अनुभवो हो । आय ललना एक वार ई बरन करै । बिनके मन के तमचा मे तो एक ई गोती होय । मैने जो जीवन साथी ढूढी है, है तो वू गरीब घर को पर होनहार है । बी ए न प्रथम पास भयो है । एम ए म हू पहली ई स्थान पावगी । ई मोय विश्वास है गयो है । बाकी विचारधारा मो मै खूब परिचित हू । वू दहज बिरोधी है । माय जीवन साथी बनाइय म गव को अनुभव करगो ।

आप दुखी न हो । ई ना समर्थे क मै गरीब क घर जाऊगी । आप विसवास करै मै अपनी भाग लकै जाऊगी । मया वाप कम के साथी होय भाग के नाय हाय । आप याहू बात को विसवास्त करियो क मै नोऊ ऐसी काम नाय करूगी जासी आपकी प्रतिष्ठा कू वट्टो लग । मै जो जीवन साथी बरन कर रही हू वू जाति, धम ऊच नीच, गरीब अमीर वे भेदभाव सो ऊपर उठ गयो है । मैने रुकमनी की नाई कृष्ण कू पाती पठाय के अपन हैवे बारे साथी सो समथन पा लियो है । याकी मै क्षमा चाहू । आप अनुभवो हो । मै आपकू अपने दुख सो और दुखो ना करनी चाहू । बस आपकी समथन चाहू ।

आपकी प्यारी बिटिया
चन्दा ।

चन्दा नै पाती लिखिके चोखे की डायरी मे धर दइ । अपने मन की विथा कागज न प उतार के, अपने कू हल्की अनुभव कियो । हा, भय जरूर हतो क पिताजी कहू नाराज न है जाए । अम्मा अरु दादी कहू करमन नै न फोरिबे लग जाए । चाह तो यही के सबन की दुख दूर है जाए पर कहू उल्टी न पर जाए । कहू दुख अरु नई बढ जाए । पर मन की बात कू, मन की विथा कू चन्दा कब तक रोकती । कब तक घुटती । बाने सोची एक दिना जो हीनो है बाए कर कर क छुट्टी पाऊ ।

चोखे जब अपने कमरा मे आयी अरु बान डायरी मे कछु निकसे भए कागज देखे तो डायरी खोलिबो सुभाविक है । डायरी खोलिके दखी तो कछू लिखे भए कागज दीखे । मम्बोधन पिताजी कू अरु नीच जापकी प्यारी बिटिया चन्दा । चख समझ गयो चन्दा नै अपन मन की बात पाती के माध्यम सो कही है । चोखे एक सपाट मे ही पाती कू पढ गयो ।

मन कू विश्वास ना भयो । मन नई मानो । आखिन न मलक, म्ही प हाथ फिरा क धीरज सो धीरे धीर एक पोत फिर पाती कू पढ गयो । पढके बढी

अचम्भी भयो। छोरी के मुलझे एए विचारन नै बाकू हकझोर दियो। एक पोत तो बाकू लगी मानी बाके दिल दिमाग कू लकुरा मार गयो होय। मन में उधल पुधल मच गई। माघो पकरि कै वठ गयो। चन्दा की बात मानी जाए तो कसै मानी जाए ? समाज थू थू करगौ। लोग ताहने द द कै मार दिगे। गल-गिरारेनमं निवसवौ दूभर है जाइगौ। लोगन की हाथ पकरी जा सक जीभ ना पकरी जाए। काऊ नछू नहेगौ काऊ नछू।

चोखे कू याद आई एए घटना। कोटा वारे बालकिशन के छोरा ओम न मैया बापनकी बात नाय मान कै अपने मनचाही अपनी जाति की छोरी ते ब्याह कर लियो। ब्याह तो चुपचाप है गयो पर थुनका फज्जिते भीत भए। मया बापन नै बू घर सो निकास दियो। अब बू अपनी बहू त लके अलग रह रह्यो है। छोरा नै तो ब्याह कर लियो पर छोट भयान के ब्याह की गल रोके दई। समाज म ई ऐसी दरियर है जाए देखिके सब बाहन रुक जाए। जब जब ओम के छोटे भयान के ब्याह की चरचा चनई और ई बात मालुम परई तो लोग विधक जात। या बात कू चोखे अच्छी तरिया जानतो। दोनो प छन कू ऐसे ब्याह सौ गरीबन के रस्ता बन्द है जाए।

घाए दूसरी ओर दूसरी उदाहरण याद आयी। राधे के छोरा अशोक नै अन्तर जातीय ब्याह कियो। छोरी तो प्रभु गग की अरु अशोक वामन ही पर दोनोन को ब्याह बडी धूमधाम सौ भयो। दोना पच्छ सुखी। दोनोन की मन चाही भई। फिर चोखे ने तुलनात्मक ढग से सोची राधे अरु प्रभु तो देस के जाने मान मान्स हे। विनकी गिनती बडे लोगन म होय। बडै तो जो चाहै सो कर सकै। कहीं कर बडे करै सौ लीला, छोटे कर सौ पाप। विनते अपनी बराबरी कैसे करी जा सकै।

याही तरिया चोखे के मन मे विचारन की ताती लग गयो। मन भीत भारी है गयो, नीद उचट गई। विचार आयी सयोगिता की नाई पथ्वीराज की मूरति पे वरमाला टार दई तो का होगी। या विचार नै चोखे कू और अनवार दियो। अखीर मे बासी नई रह्यो गयो वान राधा कू जगायो। राधा कू जगाम के एक सग कसै कही जाए याकू त नई कर पायो। इत छत की बात करी पर राधा ओगासूती कछु समझ नई पाई चाखे कब तक आप बाय साय करती अखीर म मुख्य बात प आयी। चन्दा की चिट्ठी की बात कही। राधा न चिट्ठी की बात सुनी तो नीद हवा है गई। अब बाकी समय म भाई क चोखे नै बाकू चो जगायो है। राधा मुनत खम चौक परी। वान चन्दा की चिट्ठी कू सुननी चाहै। चाखे ने रोसनी करी। धीर धीर चन्दा की लम्बी चौड़ी चिट्ठी बाची। चिट्ठी कू सुक गहरी चुप्पी छा गई। मीन तारो राधा न—

‘मैं तो पहले ई कहती पर तुमने कछू, ध्यान ई नई दियो, अब चोखी नाक कटगी।’

“बो नाक कटवे की का वान ह ?

और का नाम उजागर हेवे की बात है ?

‘भाई दुनिया मे लव मरिज ह तो है रही हैं।

‘लव मरिज करवे वारेन को नाम हाय का ?

‘नाम तो होय चाए नई होय, काम तो है जाए।

‘ई तो हार को नाम हरिनाम है।’

“राधा तेरी ई भूल है। लव मरिज मे मन चाहो जीवन साथी मिल जाए।’

“लव मरिज जितेक जल्दी होय बितेक ई जल्दी टूट जाए। आए दिना तलाक की बहानी अखबारन मे छप। भावाबस म कर्धी गयो ब्याह न दिना टिक पाव।

‘ऐसे तलाक तो विन ब्याहन म हू देखिबे कू मिल जिन ब्याहन कू मया बाप बडे सोच विचार वं करै।

“अजी वा पछुआ हवा को चौ बखान करो जहा की बयरवानी अपने परिवारेन नै जब चाहे तब दुध मे ते भाखी की नाई निकाल के फेंक दे। हमारे यहा कौ सौ रस बहा ? मया बाप छोरा कू सोच समथ के कल्या के अनुरूप चुनै। फिर सगाई ते ब्याह लौ जो जो नेगाचार होय विनते प्यार की गाठ ऐसी पक्की है जाए क दोनो एक दूसरे कू जिए मरे। छोरी कू पति जाराध्य है जाए। परमसुर है जाए। पति हू पत्नी कू अर्द्धा गीनी। दो दह एक प्रान है जाए। दोना जीवन साथी बनके जीवन भर सरस जीवन बिताव।’

‘पर अब का क्रियो जाए। एक तो गाठ म पड़सा नई। दूसरे जहा कह जाए म्हाँ हमारी गरीबी कू देखिक बोज बातई नाय कर।

तो कोऊ गुरीब गुरबा ई देख लेओ। चार रोटी की ठोर प एक रोटी दके हाय जोर गिने।

तुम गरीब गुरबा की बात कर रही ही। आज तो बटा वारेन के म्ही फट रहे है। काऊ की छोटी सी हू नौकरी लग गई है तो बू हू लाखन के सपने देख।

तो फिर चन्दा जाए देख रही है बू कौन है ? कौन जाति की है ? मेया बाप कौन है ? घर धूरी है क नाए ? सब कछू देखना परयो।

“अरी परमेसुरी चिट्ठी म सिगरी घात साफ गाफ लिख दई हैं जहा छोरा होनहार है भविष्य उजरी है म्हा फिर घर घूरे छान छपरिया दखिब म का तुक है । चोखे की पेटी नै चौखी ई सोची है । बू खोट की वेटी नाए ।’

‘भाई जाति पाति ती देख लेओ । काऊ जान जात को भयो ती मोहला वस्ती म कोऊ बोलन हू नई देगी । जाति म ते बाहर निवास दिए ती जीबो दूभर है जाइगी ।’

“अब इन बातन कू चंदा ते तू करियो । मै हू छारा की अतीपती पायवै जांच परताल करुगी । पर देख, अब जात पात के दिन ती लद रहे हैं ।”

घनी रात तक चोखे अरु राधा बातचीत करते रहे । चाखे न अपने मन की बात कहवै मन को बोझ हल्का कर लियो । अब राधा को मन उलथन म परि गयो । बाकी नीद उचट गई । रात भर करबट बदलती रही । कबऊ अपनी गरीबी की अरु कबऊ चंदा के निहच कौ विचार करती । साचिवे लगी कब भोर हाय अरु कब च । सौ बात करी जाए ।

काल की गति काऊ कू रुक नाहैं । हा विपत्ति मे फसे मास कू लग के सम धीरे धीरे निकस रह्यो है । परदा पार करवौऊ ऐसी लग मानो पहाड पार करनी पर रह्यो होय । सुखद जीवन बितावे वारेन के हाथन म ते मम वारू की रेत की नाई खिसकती सौ दिखाई दे । राधा कू रात भारी पर गई । राधा सम सौ पहलै उठिक काम काज माहि लग गई । बू तन ते काम म लगी जरूर ई पर मन चंदा म ई उरल रह्यो । कब चंदा जगै कब बातन की अरुध दकै सकट दूर वरू ।

चंदा जैसे ही जगै, राधा लपकी । और दिनान की ठौर मया कू बदली सी देखिके चंदा समझ गई कि चिट्ठी की करामात है । पिताजी सौ छनक बात मया तक आ गई । चंदा हू तयार है गई । ओखरी मे सिर दियो ती मूसरन ते का डर ? या यो कही सेल पेट कू आयी ती लफावे त का होय । अब राधा अरु चंदा की बातचीत प्रारम्भ भई—

‘चंदा तैने अपने पिताजी कू ती चिट्ठी लिख दई मोते कछू ऊ नई कइ ।’

अम्मा भय सिझक अरु सकोच के मार नाय कह पाई ।

‘फिर इतेक लम्बी चौडी चिट्ठी लिखवे मे ।’

हों अम्मा कछू बात ऐसी हाय जिने म्ही ते नाय वह पावै बिन लिखिक सुविधा सौ बता सक ।’

“पर वेटी जा छोरा कूँ तू देख रई हैं, धू कौन जाति कौ है ? मैया बाप हैं कं नाय ? कहां को रहवे बारी है ?”

“अम्मा, अब सभै बदल गयी है अब जाति पाँति की बात सोभा नाय दें । छोरा सुयोग्य हानी चइए । मैया बाप कब तानू कौन के सगी होय । हाँ मोय इतेक पत्नी है क छारा की नाम चकोर है । वी ए म टोप आयी अरु अब एम ए मे ऊ टोप आवगी ।”

‘कहा कौ रहवे बारी है ? इतेक तो पत्नी होयगी ?’

‘चौं नई डींग के पास अऊ गाँव कौ रहवे बारी है । घर म मया ई मया है । पर घूरी कछू नाँय । गरीब हालत है । चकोर अपने पाँयन प ठाडी है । अपने आप पड रह्यो है ।’

‘पर विटिया गरीब के घर जाइवे म ।’

‘चौं गरीब का मास नाँय होय । नीयत ठीक होनी चइए । हमऊ तो गरीब हैं । लच्छमी तो आती जाती रहे । फिर गरीब के घर जाइवे म का चिंता की बात है । गरीब के घर जाइवे म तो सीभाग्य माननी चइए । जो अपनी विटिया कूँ अपने त ऊँचे परन माहि दे बिनके का हाल होय, वे काऊ त छुपे नाँय । छोरीन की कोऊ बदरऊ नाम कर । बाए तो घर की नीजरानी समझीं । बाए ऐसी दाब क राख मानी जड घरीद गुलाम होय । ठोकरन मे ठुकराव ।’

“पर तोय विसवास है क चकोर बिना देहज के तोय स्वीकार कर लगी ?”

“अम्मा, बाके विचारन सौं अरु बाके मच प भासनन त तो मोय पूरी नरीसी है ।’

‘विटिया, मच पे कहबो और बात है जीवन म उतारिबो और बात है । हाथी के दात खाइवे के धोर होय, दिछाइवे के और हाय ।’

‘नाँय अम्मा, चकार कोऊ ऐसी नता नाए जो मठे कछू अरु कर चछू । बाकी कयनी करनी मे भेद नाए । तू तो गुड कौ पुआ है बाहर भीतर ते एक सी । बाबो सादा जीवन उच्च विचार तो सबकू सुहाव ।’

तेरी मरजी विटिया, पर साच समझ कें बदम उठाइयो, बहू एनी नइ हाय के पीछे घुबना फजीते हाय ।’

‘अम्मा, काम तो सोच समझ कें ई करगी पर भाग त तो काऊ की परा नाँय घाय । राजा राम की साधि बँ लगन धरी पर तोऊ बन-बन भटकनी परी तारा, दमपती की बिपदा की बया बाहू त छिनी नाय । हमारो धम है, करम करे । हाँ काम करबे म काम बिगर रह्यो हाय तो बुडि वू नई बिगरन दें ।

विटिया के इन विचारन कू सुनिक राधा कू भरासी है गयो क चन्दा पक्क पैराएन प है । चन्दा न हू राधा कू पूरो भरोसी दिवा दियो क भाग्य जपन अनुसूप गति अरु मति दे । होनी बडी प्रबल होय । वही है, 'करम गति टारे नाय टर ।'

अब चन्दा कू चिन्ता परी अपने सपन कू साकार करवे की । वह दबो आसान है पर करिवो भौत बठिन । जा कठिनाई चन्दा के सामई आ रही बात ज्यादा कठिनाई चकोर के सामई आवे की । एक तो बाके ताइ एक त एक ऊच धर क, अच्छे पइसान बारे ढोक प ढोक देरहे । निहोरे कर रहे । दूसरे जाति पाति की अबई बाऊ कू पती नाई । चन्दा न तो आनजात म ब्याह करव की निरनम कर लियो पर चकोर जानजात कू स्वीकार कर लगी, ई बडी टवी खीर ई । घर चन्दा ने चकोर से साफ साफ बात करवे मे ई सार समझी ।

गर्मान के दिना हे । छुटटी चल रही । कलिज लगती तो आसानी से भेंट है जाती । यासी चन्दा ने पाती डार के चकोर कू भरतपुर बुलाइव को निहच कियो । पाती गोल गोल लिखी गई । पर पाती को तोर या तरिया कियो क रोटी अऊ म खावे तो पानी भरतपुर जाइक पीव ।

पाती कू पाइके चकोर की घडवन बढ गई । वान भरतपुर जाइवे की अपनी मया से पूछी और फिर हडबडाती भयो सूधी भरतपुर गयो । पाती का मिली मानो बिल्ली के भागन ते छोको टूट परी होय । याके पहल चकोर बाके घर नाय आयो, पर बाए चन्दा के घर की पूरी जती पती हती । चन्दा बाकी मेह की से बाट देख रही । चकोर क आते ई चन्दा, चन्दा की नाई खिल उठी । चन्दा चकोर कू बठक मे वठाय के जावभगत की बात तो भूल गई पहले अपनी पाती की बात पूछ बठी—

आपकू मेरी पाती मिल गई होगी ?

पाती नइ मिलती तो चकोर चन्दा के पास चो जाती । चकोर की आइवो इ पाती मिलिबे की प्रमान है ।

'ई मेरी सीभाग्य है कुआ प्यासे के पाम जायो है ।

चन्दा याकी निहच करवो बडो बठिन है कौन कुआ है ? कौन प्यासी है ? हा इतेक बात जरूर है क चकोर तो चन्दा के पास ई जाव ।

जाप तो कवि की से बानी बोल रह हो कौन कुआ है कौन प्यासी है याकी उत्तर तो मनई कर सक ।

"हा जो तिहारो मन कह रह्यो है बुई मेरी मन कह रही है ।

चन्दा वातन में इतनेक बह गई क चारो मोठी पानी की ऊ बात भूल गई। वू भगी भगी भीतर गई अरु ठंडो पानी लैके पान की गनि सौ लौटि कै आई। चन्दा के पायन म पख लग रह। पाव धरती प नाय ठहर रहे। रोम रोम हस रह्यो। ठंडो पानी सामने रखत भए बोली,

‘चाय पिओग क सरवत ?’

जब तक चाय बन तब तक सरवत ई पी लिंगे।” कहके चकोर खिलखिला उठी। बात ज्यादा खिलखिलाहट चन्दा नै बिखराई। ऐसे परिहास को मधुर पान करते भए दोनो अलौकिक मुख म खो गए। चन्दा एक पोत फिर भीतर गई।

चकोर चन्दा के कमरा की साज सज्जा कू देखती रह्यो। पौराणिक चित्र टंगे भए। एक ओर सकुन्तला की विदाई की चित्र टंग रह्यो, जांभे कण्व रिसि को आस्रम दिखाई पर रह्यो। एक ओर सकुन्तला नन नीचे किए सासरे चलचे की तयारी कर रही। हिरनी नै अपने म्ही ते बाकी पल्लो पकर राखी, लग रही पूछ रही होय “परदेसिन बनके कहा कू जा रही है? एक ओर बेलन क फूल बर रहे दूसरी ओर सकुन्तला के ननन सा जासू टपक रहे। काने म कण्व रिसि आसू बहा रहे। चकोर ऐसे भाव चित्र कू देखिके भाव विभोर है गयो। मन ई मन सोचिबे लगी जब हिमालय जसो रो परे तो सासारिक जीवन को घदन करिबो सुभाविक है। चकोर की टकटकी चित्र माऊ लग गई। चकोर फिर सोचिबे लगी, ‘सपना देख रह्यो हू क मन की भावना कू टगी भयी देख रह्यो हू। जो भीतर है सोई बाहर है। राम जान का हौनो है। तबई चन्दा सरवत के गिलास टू में सजाइ क ल आई।

धीरे धीरे सरवत पीते भए चन्दा अरु चकोर बतरामते रह।

चन्दा चिट्ठी तो ऐसी भेजी, मानो कोऊ आपत्ति की पहार टूट परी होय पर अब कछु ऐसी बात मालूम नाय पर रही।’

“आपकू तो मालूम नाय पर रई पर अबइ आपकू बताई कब है। जब सुनोगे तो मान जाओगे।

“तो बताओ ना मेरो मन तो जब ते पाती पाइ है तबई ते धुकर-पुकर बर रह्यो है। तिहारे होठन प हसी फूट रइ है।

ई हसी तो आपकू देखि क सा रह्यो है, मन का सदा एक सौ रहे। जब सुख की बात हाय लग जाए तो मन सिंगरे दुख दरदन न भूल जाए। जब दुख की पल्लो भारी है जाए तो सुख कपूर है जाए। ऐसे तो राजा राम इ हे राजतिलक की बात सुनाइ तो सुख की रेख हू दिखाइ नई परी अरु जब बनवास की सूचना दइ तो रचमात्र दुखनई ब्यापी। समरसता की भाव हम सासारिक जीवन म कहा?

कचन करत खरो

‘चदा राजा राम हू तो हमारी तिहारी तरिया जमे । हमारी तिहारी तरिया बडे भए । हमारी तिहारी तरिया भेले-कूदे, हसे हसाए । हा बिनम ज्यादा गुन हे याही सौ बिन्ने दुनिया पूज । हमे याही को तो अभ्यास करनी घइए । जितेक मास क समरसता वी अभ्यासी हे जाए वितकई चाकी मान बढ़ जाए ।’

या अभ्यास को ई नी सिगरी खेल है । ई अभ्यास का वातन सी है जाए ।’

“ठीक हे चदा, अच्छे कामन मे मन लगाव वे ताई बार बार अभ्यास करनी चइए । इ कष्ट साध्य ती है असम्भव नाए ।’

“असभव ती बछू नाए कल्पना सवित के बल पं सही है जाए । सवित नई होय ती झूठी पर जाए ।’

‘चदा, जीवन दरसन की बात ई करती रहेगी कं जाके ताई बुलायो हू वा बातऊ कू बतायगी ।

वात अबइ बतानी बाकी है का ? मरे घर की सिगरी सामान आपसों सब वात कह रही है । मै समझ रही हू अब कोऊ वात कहवे की नाय ।’

‘चदा तू पहेली बुझा रही है । मै जाननी चाह रही हू क मै चो बुलायो हू ?

‘तो सुनो एक पोत ‘भारतीय समाज म दहेज दनी साथक है’ या विस प बाद बिबाद प्रतियोगिता भई । याद है ना ?’

“हा खूब याद हैं ।

ता समै आपनै दहेज के विरोध मे जो विचार रखे बिनकी याद है ना ?

हा, बिनकी हू खूब याद हे ।

मै न आपत वा सम ई कही क य विचार होठन तकई है क जीवन म उतार जाइमे ?

‘बाहू को मोय खूब याद है ।’

तो अब तू सम वा मयो है । अब कयनी अरु करनी कू कसौटी प कसबे की सम आपके सामइ है ।’

चन्दा मैन जो कही बाए अब ऊ दुहरा रही हू । सम जान द दे ।

‘अब समै आके म वा देरी है । जापकी एम ए की पढाइ पूरी भई ।’

'पढ़ाई पूरी तो करऊ है ई नाय सर। घर पेट के ताई पढ़ाई पूरी है जावे। पोरई आव। अब तो जब तक छारा अपने पामन प नइ ठाडो है जाए तब तानू बात करिवो बिरथा हँ।'

'भापकू पामन पे ठाडे हेव म का दरो है। पनारे घर हँ तो चुचाविगे ई।'

माही आसा प तो दुनिया टिकी है पर अबई मेरे सामई बघडे म्ही फारे हँ ? ना नौकरी ना चाकरो, ना घर ना धूरो, ना खेत ना ब्यापार। फिर बता, रोना के बिना बोरिया त लठम लठा करवे म कौन सी तुक है।'

'अजी आप अपने मन म बितेकऊ सकुचाओ पर आपके ताई तो अनेकन हाथ र रहे हँ। आपको परिच्छा परिणाम आवे की देर है। आपको पहली स्थान आगो यूनीवरसिटी आपकू हाथा हाथ लगावंगी।'

'चन्दा तू तो बड़ी भोरी है। आगे की बात बोन न जानी है। पहला अरु ती स्थान नई आयी तो कोऊ टका सेर ऊ नाय पूछा। फिर जती चटकामत जो परंगी। देख ना रही बरोजगारी सों का कुगति है रही हँ। पढे लिखे सब तरी चाहई। काऊ मेहनत सों बमाय हँ खाइवों पसद नाय करे। नौकरी लग बस या फिराक म डोल। नौकरी लग जाव के पीछे सरकार के मेहमान बन। मूछन प तात्र दक खामे अरु गुरावे।'

'या बात कू तो मै सब ठीर देख रही हू कॉलेज म ई देख लेघी कौन क पढ़ाई।'

'चन्दा, सबन की आखन की पानी उतर गयी है। जब बिना पढाए काम जाए तो चो पढ़ावे ? डर तो सबन को निकस गयी है।'

पर ईसुर ते डरब वारे कम करवे वारे अब ऊ हतँ।

'चन्दा दुनिया म ऐसे नई होय तो धरती कस टिक। हमारे कॉलेज म राजी हँ अपन काम ते काम रख। घटी वजते ई कच्छा म आव। याही सौ भरतपुर सब लोग बिनके खूब गीत गावें।'

'सर्माजी कू तो मै हू जानू जो ट्यूसन कर।'

'हा य ई ट्यूसन वारे सर्माजी। ट्यूसन ती कर पर बालेज म हू खूब पढ़ावे। ट्यूसन करवो कोऊ बुरो नाय। कोऊ पाप नाय, पर कर ईमानदारी सी। सर्माजी 5 अे ते ई मेहनत करे। मेहनत नई करे तो कौन बिनक पास फटक। सब चमत्वार नमस्कार करे।'

'आप का बिनते कम परिगे। प्रोफेसर बनते ई हल्ला भव जाइगी।'

“मैं फिर कह रही हूँ, आगे आगे वाले समय में जिसमें मैं कहूँगी वह कस की बात नाय। मैं एम ए में टोप कर गयी तबई यह सब कहूँगी।”

‘आप भलाई तब कहियों मैं तो अबई अनिश्चयवानी कर दऊँ मैं आप टोप आजीगे।’

‘चदा बात साँची भई तो तिहार म्हाँ में बी मत्तर।’

‘मैं तो घो-धूरी पीछ लुगी पहलें आप भोय बचन तो देओ। मेरे पिताजी की गरीबी की कहानी अब उजागर है गई है। कबहूँ या घर की पूछ हती पर चार साल ते पर रही सुधा न हमारी हालत खस्ता कर दई। अब पिताजी घर न गाड़े कू कैसे खेच रह हैं वे ई जा। बिनने गामई मेरे ब्याह की मवा न ह। अम्मा घर दादी या दुप सौं आधी रह गई है। मैं न आपक विचारन सौं प्रभावित ह क अपनी विचार सिंगरे घर न सामई रूप दियो है। अब घाप जानी घर आपकी नाम।’

“चदा तू तो भीत जाग बढ गई है तन जाति-पाँति पूछी नइ। नाते-गौत बचाए नई। मरी घर धूरी देखी नई। मरी परिवार जानी नइ। मेरी माली हालत देखी नई। मेरी और तैरी का मन? कहाँ राजा भोज, कहाँ गल्ल तली।

‘चौं उल्टी गगा बहा रहे हा? सम्बध ई ट चूने सौं नाय होय, सम्बध रोटी सौं नाय होय, सम्बध आदमीन सौं हाय। सम की उल्टी बयार बह रही है। आज बल नाममय सम्बध कू रोटी, कपडा अरु मकान कू स्थान द रहे हैं। रुपया त सब चीज खरीदी जा रही हैं। रुपया तेई सम्बध खरीदे जा रहे हैं। समझदार या बात कू समय। वे कहें कुआ की माटी कुआ में ई लग जग। जो रुपया दे, बाए बेटो वारी ब्याह में पूरा खच कराले। नोन नोन बह जाए राई राई रह जाए। दूसरी बात जो जाति पाँति नाते-गौत की मेरे सामई राखी है। ये सब हमारे ई बनाए भए हैं। ये कहूँ उपर ते बन के नाँय आए।

‘चन्दा जो तू कह रही है वू बावन तोला पाव रती सही है। ‘जाति पाँति पूछ नई काइ हरि को भज सो हरि को होई मैं तिहारी बात की समथक हू। मैं तो समाज के या कोड कू खुद हाथन सौं जर मूरि सौं उखाड देंगी चाहूँ।’

‘अबई तो आप अबेले ही, जब हम और आप दोनों मिल जाइगे तो आपकूँ और सुविधा मिलेगी।’

‘चदा, सुविधा सौं काम नाँय बन। सुविधा सौं मानस और आलसी होय। मांस के मन में कम की जाग लाग अरु लगन चइए फिर तो मजिल अपने आप पास आती जाएँ।’

“आपकी बात कू मे वाट नाय रही, पर मेरी मतलब है, साध्य के पात्रे के ताई साधन हू नोत जरूरी है।’

“चदा जब मन म लगन होय तो साधन अपने आप जुटते चले जाय। महात्मा गांधी के मन म लगन हती तो सब साधन अपने आप जुटत चले गय। अपने आप मांजल आती गई मुनी है क नाय जहाँ चाह तहाँ राह।’

‘विल्कुल सांची बात है, याकी पुष्टि तो बाबा तुलसीदास नै हू करी है ‘सिमिट सिमिट जल भरहि तलावा जिनि सद्गुण सज्जन पहि आवा।’

“बस ती ई कम की लगन हम तुम दोनो के मन मे होनी चाइए।

“याही बात कू तो मे दुहरा रही हूँ। जब एक विचारधारा के दो मास टूमे तो बात जल्दी पूरी होगी। काहू नै कही है एक अकेली दी की मेली। एक और एक मिलिके ग्यारह हाय। अब तो आपकी स्वीकृति चइए। एक पथ दो काज हु ग। हमारे परिवार की सिंगरी जोझ हू हरबो है जाइगी।

‘चदा मोय चो लजा रही है। ई तो मरी सीभाग्य होवगी। ‘चदा’ जैसी लच्छमी मर घर आवगी। मर घर म उजेरी है जाइगी मेरे सोए भाग जाग उठेगे।’

“अच्छी उल्ट बास बरती कू लाद लिए। मैं आपसी तक नाय कर सकूँ। वाद विवाद प्रतियोगिता म हू तो आप आगे रहे। फिर बातन म, मैं आपसी कस जीत सकूँ।

‘ई आपन अच्छी हवियार चलायी। तरबार के बार ते कोऊ भलई बच जाए पर फूलन की मार त बचिबो कठिन है। अब हमारे पास कोऊ ग्राँडर नाएँ जिने आपके सामई परीस। हाँ इतक जरूर है क अपने मया वापन सो पूछ लेजी। जागे वडिक फिर पीछी हटिबो नइ चइए।

“ई बात तो माय बहनी चइए क आप अपन मैया वाप ते पूछ लेओ।’

‘चदा तोय ई ऊ नाय पती के मेरे आगे पीछे मैया ई मैया है। वाप ती मोय गादी म ई छोडि क चली गयो। मया नै सिंगरे अधिकार मरे ई ताई सीप राखे हैं। हा इतक जरूर है मया ते ज्यादा गाम है। गाम की बात जरूर जरूर माननी परे। गाम म मास गांव के ताई होय। गाम की बात मास की हाय। मास की बात गांव की बात होय।

‘या काम म गाम आडो आयी तो फिर कस बात बनयो?’

गाम वारन कूँ समझानी परंगी । गाम के लोगन कूँ विसवाम म लनी परंगी ।

‘अर वछू धीर पूछताछ करनी है सो भर लेजो । पानी पीके जात पूछनी सोभा नाय दे । इतेक ती ध्यान म रखियो केँ हम जाति सौँ वाढ़ई वामन हैं ।’

वामन ती हमजें हैं फिर ती कोऊ बठिनाई की बात नाय । बेसऊ जाति पाति नी बात अर ती दूर हैं । हम सब एरु हैं तेनेई ती कही है—जाति पाति हमार ई बनाए भए है ।

‘मैंने ती कही है, पर आप मानी जब ही ।’

अरे हमई नई मातिने ती कौन मानंगी ? हम पढ लिख कऊ, इन समाज की कुरीतीन न समाज के ढकोसलान न नइ मिटाइये नी कौन मिटावगी ? नए स्वतंत्र भारत की रचना कौन करगी ?’

ती फिर बात बागे पढ ? सम स्थान, विधि विधान की त करिवी आपके हाथ है ।’

चदा जो काम नन मोकूँ सोपा है बाए मैं अपनी पूरी सामथ्य सौँ पूरी करिवे की पूरी प्रयास करूगी । जो भार मोपी है, बाए उठाइव की पूरी कासिस करूगी । जा जुजा कूँ मेरे कधान प रखी है, बाते मैं कधा नइ डारूगी । बात जरु बाप बराबर होय । ई ती नए युग के मनचले छारान की बात है क गाडी की पइया अर राड की चरखा चलती ई रहै ।

चदा कूँ पूरी भरोसो दकेँ, चकोर अपन गाम लौट आयो । चदा ने चन की मास लई । बाने सिगरी किस्सा अपनी मया कूँ सुनाय लियो । राधा या बात कूँ मुनिक वडी खुस भई क चकोर वामन है पर एक आसका घर बर गई क वामनन की वाढई वामनन के मय सम्बन्ध नाय हाय । कहुँ चकोर की मया न ई बात नई मानी ती सब गुड गोबर है जाइगी । चकोर जा गाम म रहे वू या बात कूँ कसेँ स्वीकार करगी ? वहुँ गाम नै चकोर कूँ दबायो तऱ बात कैसे बनेगी ?’

राधा जब इन विचारन म तीर रई तबई चोखे बाहर सौँ भायो । बाने चकोर क थारुवे की बात सुनी ती भारी पछतायो । मोचिव लगी, “कहुँ मैं हौती ती छोराए भती तरियाँ देख लती । दो दो बात है जाती । मन भर जाती । पर राधा नै ममदायो बात बन गई ती सोन म मुग्ध समझी ।

चाख ने जब चकोर की पडाई सुनी ती बाछ खिल गइ । सोचिवे लगी अन्धे के हाथ बटार तऱ रही है पर बाए ईक परसोवसा याद धायो मब मरौ तब

जानिए जय चालीसा होय । बड़े बूढ़े वह गए हैं, हरी खेती ब्यावन गाय जब जानी जय म्हातर जाए”, काऊ नं आंधरी त वही क तेरी भैया आयी है, वान कही भैना वह तो भीत रही हैं, पर जब मुजा भरके भट लुगी तब जानूंगी । सोई चोखे न कही माटी मड लग जाए तब है । मसखरान प ते भस चौख लई जाए तब है ।

विरोध के सुर

भरतपुर ते चकार सीधो अपने गाँव अऊ आयो । मन कबऊ मोन नाय रहे । वाम ती विचारन की तातो आतो जातो रहे । ताने बाने पुरते रह । मनऊ तो एक सागर त कम नाएँ वामे विचारन की लहर बनती विगरती रह । भरतपुर त अऊ तक आत समे चंदा को रूप अरु ब्यवहार चकार कूँ झकपोरतो रह्यो । चकोर हू तो हाड भांस की पुतला हो ई ट पत्थर की तो हत नाओ । जा कछ सुनो अरु समझो देखी अरु समझी वाको प्रभाव परिवो सुभाविक हो । चंदा के रूप के सामई वू चुन गयो । रूप क सा वाकी विचारधारा बाकी समाज सुधार प्रवृत्ति मन ते मिलती भावना मव चकार के मन म वसनी गई । प्रकृति मिलव त मन ऐसे मिल जाएँ जस दही त दूध जम जाए । या तरियाँ वाकी मन खूब पकरा है गयो । कमी रही ती अपनी मैया की 'हैं' की छाप लगवे की ।

घर आइके अपनी मया सौँ अपने मन की बात कहवे कूँ जोसर की ताक म लग गयो । जव-जव मन की बात होठन तक आती, लोकलाज होठन कूँ खोलन नाँय देती । मन ई मन मे घुटिबे लगे । अरु बाए दो चिन्ता ब्याप रही । एक ती एम ए म टोप आइवे की । चारा ओर हल्ला ती है गयो पर परिणाम म कहुँ रोडा नई अटक जाएँ । कहुँ दूध म माखी नई परि जाए । कहुँ खीर म ककड नई आ जाए । दूसरी चिन्ता ई चंदा की । कहुँ बाकी मया अरु गाँव ग्रान जात की कहुँक बाधक नइ बन जाएँ । कच्च धागन के तान बाने ते बुने सम्बध कूँ च-नाय व नई तोर द नई ती चंदा अरु चकोर की बसब वारी बस्ती बसवे सौँ पहल उजर उजर जाइगी । जीवन नदिया क एम दो किनारे है जाइ मे जो कबहुँ चाहव पै हू मिल नइ पाइगे । मया अरु गाँव बारे बाधक बन गए ती चंदा के सामई कसै जायो जाइगी, कमे चंदा कूँ म्ही दिखायो जाइगी ।

याही सौँ एक दिना सम पाइक चकोर न मया के पास बठिऊँ अपने मन की बात कही—

‘मया अब कब तक तू चूल्ही फूँकती रहैगी ?

"बेटा, जब तक मेरे भाग म है।"

'मैया, भाग तो अपने हाथ की बात है।'

"अरे बेटा कसी वाबरी है रह्यो है। सुनी नाँय भाग सो अधिक अरु समे सो पहल कछू नाँय मिल।'

'अरी अम्मा, भाग्य तो प्रारब्ध सों कहँ, प्रारब्ध को मतलब है पूव सचिब करम, पहल जितेक करम किए बिनते अब भाग वनी। अब जा करम कर रहूँ हैं बिनत आग की भाग्य बनगो। भाग्य तो मया करमन सों बन।

'बेटा करम अरु भाग्य को झगरी तो युग-पुग सो चलो आ रह्यो है। जग मे ऐसो कोन चाहे कै बू घास खोद ? हर एक राज चाहे पर जाके भाग्य म हाथ बू ई तो राज पाव।

मया, सबल पदारथ हैं जग माही करमहीन नर पावत नाही ' करमन सों जो हीन है बाकू पग पग प सकट उठाने परे। बाऊ न बही है करमहीन खेती कर, बल मर क सूखा पर। मैया मान्स करम कर ती सुख पाव। करमन क आग भाग कू झुकनी परे। सुदामा न द्वारका जावे को करम कियो ती भाग फली।'

'बेटा भाग्य के आगँ करम धरी रह जाए। भाग्य मे हाथ तो छप्पर फार क दे। नी निधि और बारह सिद्धि पूरी होय। भाग्य म ना होय तो सब खेल बिगर जाएँ नीलाख के हार कू खूँटी निगल जाए।'

'मया बात समझ म नई आई।

तो बेटा सुन, भाग के सामई लक्ष्मी न खूब कम किए पर लक्ष्मी न हू हार मानी।'

कस मया ?

"एक पोत लक्ष्मी अरु भाग्य म होड पर गई। लक्ष्मी बोली मै बडी हू, भाग्य बालो मै बडो हू। जब दोना की तू तू मै मै ज्यादा बड गई तो भाग्य बोली दख लक्ष्मी सामने खेत मे किसान हर चला रह्यो है याए तू खूब सोने चादी, हीरा, मोतीन सों निहाल कर द। दख ई मालदार है हू जाए। या बात कू सुनिक लक्ष्मी भजी भजी वा विसान के पाम गई। बाकू एक सोने की ईट दक कही, ल या सोने की ईटे ल जा अरु मौज मार। अब खेत जोतिव की जरूरत नाएँ। किसान न बही अरी पनमेसुरी अघे कू दो आख चइण। जब घर बडे मोय सत्र कछू मिल रह्यो है तो मै काइकू आऊंगी।

किसान वा सोने की ईंट लूँ लकें अपने घर पहुँची। वा घन बाकी वहाँ परीय म काहूँ व पर नाज पीसिये कू गई। किसान कूँ इतक सबर कहा ही। लूँ वा साने की ईंट लूँ चूल्हे के राए म धर व बाग राख डक वँ अपनी वहाँ लूँ धुलावे चली गयो।

इतक मे एक परोसन आंच लव आई। वान देयी किसान के घर नोक नाएँ। वान राए मे ते आंच निवासी ती सोन की ईंट दिखाई परी। वान हवा करी ना धक्क वा सोन की ईंटें लक चली गई।

जब किसान अपनी वहाँ लूँ लकें हुलसी हुलसी घर आयी जह अपने मालदार हेवे की बिस्सा मुनात नए लूँ के राए म त सान की ईंट निकाल क दब कूँ हुयो तो दग रह गयो। रायो घाली पायो। राखई राख दिखाई देई। किसान की वहाँ कूँ निहचं हे गयो व बाके घरवारे लूँ भंग हे गयो हे, क दिमाग घराव हे गयो हे, चों के राए म सोन की ईंट की का चल माटी की ऊ ईंट नाई। किसान की वहाँ न बाकूँ खून मुनाई। किसान मूँड पकर व अपनी सी म्ही लव रह गयो।

“नैया ई नौ लूँ वान भई, चालनी म दूध बाइ वरमन लूँ टटार।”

‘वेदा जाग की बात तो सुन, दुमरे दिना किसान फिर खेत चोतिने पहुँच गयो। भाग्य न बही, लक्ष्मी, किसान खेत जातिये कस जा गयो? लक्ष्मी किसान के पास पहुँची। किसान त पूछी तो किसान न नाँची साँची बात कह देई। लक्ष्मी न बाकूँ एक नीलखा हार दियो अह बही याए हिएजात त रखियो। यासों जीवन भर, घर बठे पड़यो। खेत प आइव की जरूरत नाएँ। किसान वा नीलखा हार कूँ लकें भगी भगी घर आयी। दुरभाग्य सों फिर वहाँ पर नाई। बाकूँ इतक सबर कहा हो क वहाँ की बात देखतो। लूँ वा नीलखा हार कूँ भीतर खूँटी प टाँग क वहाँ कूँ डूबिय निनस परी। नीलखा हार कोठे के अ धेरा म चकम रह्यो। बील ने समनी कें म्याप हे साइ वा नीलखा हार कूँ लकें अपने घोसला मे जा पोचो। जब किसान अपनी वयर कूँ लकें लोटा अह नीलखा हार दिखानी चाही तो लूँ असमजस म जा गयो। खूँटी मूनी मिली। बाकी वयर कूँ पूरो विश्वास हे गयो क बाकी असम वावरी हे गयो हे। किसान कूँ बाकी वहाँ न हजारन मुनाई। किसान नऊ हजारन सीगध खाद पर सीग ध ते ना बिस्वास आव’।

तीसरे दिना किसान फिर अपने हर बलन न लक खेत माँहि दिखाई परी। भाग्य न फिर लक्ष्मी कूँ कुरेदी। लक्ष्मी दोरी दोरी फिर किसान के पास गई। किसान की राम कहानी कूँ सुनिक लक्ष्मी हूँ हैरान हे गई। वान तीसरी अटा मोर वारी बात कहक किसान के ताई एक बेसवीमती मोती दियो अह बही किसान कान खालिक सुन ल ई तेरे ताई आखिरी भेंट हे। ई मोती इतनी कीमती हे क याए बेचिक

तू जीवन भर चँठिँ खा मक पर घाए राखियो अच्छी तरियाँ। किसान मोती कू अपनी जेय म धर क पर वू लीओ। रस्ता म परी नदी। घाए लगी प्याम, माई खुकि के पस्सन म भरकेँ पानी पियो। पर आपक वान अपन कुरता की जेव म त मोती निकास केँ अपनी वहु कू दनौ चाही, पर हाथ डार्यौ ती जब घाली। किसान सबकका गया। भौचवारी मो अपनी घरवारी कू देखतो रहो। घरवारी के माथे पै वन पर गए। घरवारी न अपनी झूँडर मन करकेँ निकासी। किसान न अनुमान लगा लियो व बीच नदी म जा समै पानी पियो ता सम मोती नदी म गिर गयो हागी। किसान लम्बी सौम तक रह गयो।

चौथे दिन किसान फिर खेत माहिँ तिक तिक करतो दिखाई परी। भाग्य नै लक्ष्मी कू फिर झकझोरी। लक्ष्मी उदास है गई सिगरे प्रयाम धूरि में मिल गए। भाग वोनो अब मेरे खेल देख। साई नाग एक तावे के छोट पइसाए किसान कू देवे पहुँचो। किसान वाली, भया चोँ हँसो बरज आ गयो है ? जब सोन की इट, नीलघा हार, अरु मोती ई काम नई आए तो ई तावे की घिमी सिक्का वा निहाल करगो ? भाग नै वू तावे नौ खाटो पइसा जबरन वाके माथे मड दियो। याते कही 'जरे तोय ई नाय पतो खोटो पइसा खाटो बटा सबट म काम आवे।

पर आजकेँ किसान नै दखो केँ घर म खाइव कू कछू नाए। वू बलन नै बाध क बाजार गयो। साझ है गई। बाजार बढत रह्यो। एक मच्छी वारी बची भइ सडी मच्छीन नै ओने पीने बेच रह्यो। किसान वा खाट पइसाए लकेँ वाके पास गयो। मच्छी बागो बोज हल्को करनो चाह रह्यो। बान एक सडी सी मच्छी वा खोट पइसा केँ बदले म किसान कू द दई।

मच्छी लाइक किसान नै अपनी घरवारी कू द दई। किसान न वही वू याए बनार। मै उपर नीम प चडिकेँ सूखी लकरिया तोरे। किसान की वहु न मच्छी घोय पोछि केँ बनारी तो वाम भातो दिखाई परी। किसान न सूखी लकरिया तोरी तो चील केँ घौसला म नीलघा हार धरी दखी। वू चित्ला परी पा गई पा गई। या बात म सुनिक परीसिन घबरा गई क सोने की ईट की मालूम पर गई है। साई बान घबराय केँ साने की ईट किसान केँ घर म फेक दई। अब ती तीनों चीज एक सग मिल गई। दखत हो देखत एव पइसा तई किसान मालामाल है गयो।

अब किसान खेत प वाहे कू जाती। वाके घर ती सब आनंद है गए। नाग नै लक्ष्मी त वही देख लिए ना भाग क खेल। ती बेटा सब वही कर भाग फल ती सब फन भौख गज योपार।

मैया तरी वान वडी मानू, ताय अनुभव है तरे वार धूप म घोर धोरई भए ट, पर किमान खत जोसिख नई जाती, सान की ईट हार मोती नई लाती

मच्छी खरीदवे नई जानी, लकरिया नई तीरती, वहवे की मतलबईए कै इन सब कामन कू नही करती, तो का बू मालदार हे जानी ।”

‘इनै कम कहेँ का ? कम तो हाड चाम घिसकेँ, पसीना बहाय केँ कियो जाए । पसीना बहाय क जो धन कमायो जाए बू कर्म की फल है अरु जो अनायास हाथ लगेँ सो भाग्य की फल ।”

मैया तोत में का तक बरूँ । हा इतेक वहनो चाहू क मचन प में कर्म के गुन गाऊँ, कर्म के हाथन सोँ भाग की रेघन नै बदलवे की कहू । मै अपने जीवन को उदाहरण दऊँ ।

‘अच्छी बेटा तू जीती में हारी । मैनेँ तो जा दिना ते तू जनी है बाई दिना ते तेरी हठ राखी है । बाल हठ के आगेँ तिरिया हठ हू हारी है । माय भरासी है तू राजहठ ऊ हरावगी ।

“मया, मै कम करूँ पर तरी अरु गुरुजनन को आसीस हाय तो मोकूँ बल मिलेँ । हाय की छाया घनी होय ।

‘बेटा आसीस की कमी नाएँ, जो चाहेँ वाकूँ भरपूर मिलेँ । याम का खच हाय । हाँ होय कोई लव बारी ।”

तो मया मेरी इच्छा है क तीय अब आराम दियो जाए । अब मै अपनी सगिनी ल जाऊँ ।’

बेटा ई बात तो मोय वहनी चइए । मै रोज वा दिना की वाट देख रही हू कव मेरी बेटा मेरे घर म उजेरो लाव ।’

“उजेरो लाइव की भार जब तेनेँ मेर ऊपर डार राखी है तो मै पूरो जतन करूँगी एसी उजीती लाऊँगी जा मेरे तेरे अरु सब घर के अ धेरे कूँ दूर कर द । चदा सी बहू लाऊँगी ।”

या बात को मोय पूरो बिसवास है । पर अब मेरी बूढी सासन की ज्यादा भरोसा नाएँ । न जानै कव या पीजरा कूँ छाडि क हस उड जाए । याही सी आखिन क सामई तेरी घर मड जाए । याए देखिवी चाहू । मीह्ल्ला अरु गाँव बारे तो मोय जक नाँय लन द । भाति भाँति के अरसोकला-परसाकला ढाब । कोऊ कहेँ छारा पच्चीस केँ ओरे डोर है गयी है, जाधी उमर तो बीत गई । कोऊ कहू डोकरी छप्पन करोड की चौयाई कूँ डोल रही हू । काऊ कछू कहू, काऊ कछू कहू । वोन कीन कोँ म्हो रावो जाए ?’

“मया दुनिया तो या ई कहती रहगी, पर सम के अनुरूप चलनी चइ। अब वू सम नाँय रह्यो जब छोरी छोरान क गोदी म ब्याह कर दिय जात। अब वू सम नाँय रह्यो क छोरी छोरा अपन पायन पे रखे हू नाँय भए अरु बिनकी ब्याह कर दियो जाए। अब वू हू समय नाँय रह्यो क ब्याह कर दियो जाए अरु छोरी छोरान त पूछी हू नई जाय। जा सम की पुकार तू नई मुनै तिनै मू ड पकरि कै पछतानों पर।”

“मै या बात कू तो समय गई हू पर गाम की रह्यो अरु चरैयान की मुनिवो कसें सह्यो जाए ?”

“मैया गाम के चवयान ते ती बर्ग पर अपनी भती बुरी तो सोचि ल। हाँ इतेक जरूर है गाँव कू खुस करिबो कोऊ आतान नाएँ। तोय तो सब पती ए। तू ही तो मोय कथा सुनाती रही है। बाप बेटा एक घाडा लैवै जा रए जब बाप बठे अरु बेटा पायन चलवे लगी तो दुनिया वा बाप कू नाम धरवे लगी। जए छोरा बठिक चलवे लगी तो छोरा कू नाम धरी। जब दोनो बठिक चलब लगे तो दोनोन कू कोसिबे लगे। जब दोनो पदल चन्धे लगे तो दोनान की मूखता प हमबे लग। मया दुनिया की भली चलाई।”

तोऊ बेटा समाज के रीति रिवाजन की तो ध्यान रखनी ई पर। अब दख तेरे ब्याह को समझ आ गयी है। अब काइकू देर करे।”

“मैया मेरी परिच्छा की परिणाम आ जाए फिर देर नाए। पर हा, रीति रिवाजन की ध्यान तो रखे पर रीति रिवाज सम के अनुसार बदलते रहू। वचन के ब्याह को चल्ना उठि गयी। याही तरिया घू घट कोऊ तो रिवाज उठ रह्यो है। गामन मे घू घट भनई चल जाए सहरन म घू घट काडी तो जीवो दूमर है जाय।

बेटा नयी चल्ता गाव मे नाम चल सक।

मैया सम सब अपने आप ही चला लगी। छोट छोटे छोरी छोरान के ब्याह को चल्चा अब गाव मे तेऊ उठती जा रह्यो है।

‘सम सम की बात है जब तो छोरी छोरान की राय ते ई ब्याह हवे लगे है।

युग की माग तो हू। मैं हू नए युग की नई पीढी हू पर नए युग को अपनी भक्त नाऊ। जो हमारी पुरानी बाथी है, पुरानी संस्कृति है पुराने अच्छे रीति रिवाज है बिनकी रच्छा करनी चाहू पर बिना सोचे समझ लकीर को फकीर होनी मोय नाय भाव। मैं जो कछू करूगी तो ते पूछ क करूगी।

बेटा जा कछू करनीए कर करू ल। कही कर, करले मो काम भजले सो राम।

“तो सुन मैया मैंने एक छोरी देख लई है। भरतपुर की है। अच्छे घर की है। झकलीती बेटी है। पहल घाती पीतो घर हो। बोहरगत होती। कई सालन की सूया सौ सब रुपया हूव गयो है। या सम खस्ता हालत है।”

बेटा छोरी तो पढी लिखी होयगी ?”

‘हा जम मैंन एम ए की परीच्छा दई है वान बी ए की परीच्छा दई है। माते दो दरजा नीचे है। है हुसियार चाहे तो देख ल।”

“मौय तो कोऊ ऐतराज नाय पर नाते-गोते तो बचा लिए हु ग।”

“मैया सो मैंने कछू नाय कियो।”

“बेटा सबते पहल नाते नाते बचाए जाए।”

“मैया नाते गोते बचाइवे की का जरूरत है ?”

‘देख बेटा एक मैया के चार पाच छोरा वहू दूर-दूर बस जाए। बिनम भाइवो जाइवो नई रहै। जान पहचान हू नई रहै अरु कहू वे एक दूसरे के यहा छारी छारा देखिथ कू निकस पर तो भन भैया है सकै।

“मैया तेरी बात बडी जरकै मानी पर एक जाति के नई होय तो नात गोते बचाइवे की जरूरत नाए।”

“राम राम कैसी बात कर रह्यो है। कहू आन जाति की त ब्याह करगो का ?”

‘मैया, जाति-नाति को वमेली तो हमने बनायी है। भगवान के यहा ते सब एकई जाति के जाए है।

बेटा ई सौची है पर गाँम रीति हू तो ध्यान मे रखनी है।

“गाँम रीति कू आखि मू दि कै मानिवे ते न अपनी भलो है सके न गाँम को, अरु न देस को।”

पर बेटा हमई रीति ची बदल ? हमई ची आग आव ?

तो कौन जाग आबिगे जो दोर चराबे वे। बिनै दुनिया ते का मतलब ?

तो माय या बता के तैने जा छारी देखी है वू आन जात की है वा ?

मया यामे का दोस है ?

‘बेटा ऐसी बात मत कर हमारी नाक कट जाइगी। गाँम मे कोऊ बोलन तब नई दगो।”

‘मया हम कोऊ बुरी वाम थारई बर रह हें ? कोऊ चोरी नाय बर रह कोऊ जुआ नाहि खेल रहे, काऊ वी मन उटी कू बुरी नजरन सौं नाम दय रहे। ब्याह ही तो कर रहे ह।’

“बेटा कोऊ बुरी काम ती नाय कर रहे पर जाति अरु गाम त अपर मड हैकै चलिगी चोखी नाय। मड मरजादन कू तोरिखी अच्छी नाए।”

‘तो पब ऊट कू विल्ली कहें तो का हमकू ह विल्ली कहनी चइए का ?’

चकोर अरु चकोर की मया की कई दिनान तक य ई बात चलती रही। ना चकोर की मया टस ते मस भई ना चकोर। ई बात चकोर अरु चकोर की मया तकई नाय रही। चंदा चकोर की चरचा, चौराहे प, चौक म, चौबारे म चारो ओर चल निकसी। कही करै बात भई होठन की, भई पोटन की। चकोर गाम म हें क निकसती ती सब बाए टोकते।

गाम की बयरवानी एक एक करक चकोर की मया क पास आइवे लगी। भाति भाति सौ ताने दवै लगी। चकोर की मया नथिया कू जाई हाथन सवे लगी।

‘नथिया तेरे छोरा ए आन जाति म ब्याह करवे वी का सूची है ? का जात की नापद ह गई है का ?’

नथिया, तेरो छोरा तो पढी लिखी है। या सम तो बू अनपढ ते हू गयो बीती निकस रह्यो है।”

‘ऐसी मात्रम परे छोरा तेरी बात नाय मान रह्यो कै तैन डील दै राखी है। नई तो का नजाल है जो छोरा होठ हू खोल जाती।’

‘नथिया कछू बोल बकर तो सही। ऐसै सुट्ट लगाए त का काम चलगी ? आज तेरो छोरा या काम ए कर रह्यो है कल्ल कोऊ दूसरो करगी परसो तीसरो फिर तो ई रोग फलती ही चली जाइगी। बात कहा जाइक ठहरगी। लोक मरजादा ई मिट जाइगा। नथिया अपनी नाक कौ ध्यान मत रख पर गाम की नाक को तो ध्यान रख।

चार जनीन की बात सुनिक नथिया बोली— जो तुम कह रही हो बू सही है पर का करी जाए ? जवान जवान छोरा ते वही तो जा सक। बच्चा तो हत नाए जाए बहला नियो जाए। तिहारी नथिया मैन वाक मुक्तरौ समझाई है पर याके ती बात गर ई नाय उतर। त्तेक तरक द वं मै तो बावे म्हाँ माऊ दपती रह जाउ। वाप तो कछू जाडू सौ है गयो है। ऐसी बयार सौ भर गई हें क कछू सूय इ नाए। अब मै का बरू। कितकू जाऊ। इत गिरू ती कुआं उत गिरू ती

खाई। जवान-जवान छोरा ते ज्यादा कह हू तो नाय सकू। बूढी दिखावै भरिवी, जवान दिखावै भगिवी। ज्यादा कहनावत सुनावत कर दई अरु कहू कहू इतु बिनक निवस गयो तो क वरकी बीतगी। फिर तुम सब जानी भरे तो ई हो होरी फूकाई नर ई ही अघाई बठा ह।”

नथिया इन बातन ते तो ई लगे जसे तेरी स होय। सब तेरी ई करामात मालूम पर रही है। लगे मतर तू पढ रही है वामी म हाथ बू द रह्यो है। हम सब जान, छोटे, बडेन क बल पै ही नाच नाचै।”

‘अरी भनाओ, माबू चो लीना लगा रही हो। मै तो ई कह रही हू बिना पढी लिखी होती तो सब बातन नै मान लती। पढे लिखे कू कसै समझाऊ ?’

तबई ता कहै छोरी छोरान की ब्याह वचपन म ई कर दनी चइए।”

‘मरे छारा त बात वरक तो देखो। बू वाल विवाह कौ कट्टर विराधी ह। बू कहै अस याही मार गइडा म गयो है। जनसख्या की वटिवी दस की स्वास्थ्य गिरवी बेरोजगारी फलिवी, घर घर म लडाइ झगडे होनी याम बाल विवाह कौ ई दोस है। बच्चान की ब्याह करिवी बिनके पापन म कुल्हाडी मारिपी है।’

‘नथिया, वाए नए जमाने की हवा लग गई है। सहर म रहक बाक पछ नै नकस आए है। हमारे तिहारे ब्याह पाच पाच सात सात की उमर म भए क नाए ?’

‘अरी या बात कू सुनिक छारा कहै क तबई तो बयरबानीन क दात निवस रहे ह। जितकू देखो वितकू ही हडडीन की माला सी दिखाई परै। काऊ की कमर चुबि गई है। काऊ की आख खराब है। काऊ की जिगर खराब है। वचपन की ब्याह सौ ब्याधीन की घर वताबे। विदेसन क उदाहरण दक वताब क बिनक मन् बयर बडी उमर म ब्याह करै। खूब हट्टा कटटा रहै।

‘नथिया सौ बातन की बात ई ए क जाकी पात्र निकस जाए, वाकी पाव टिक ना सकै जाकी जीभ चलबे लग जाए, वाकी जीभ फिर तारए त नाय लग।’

या तरियाँ बयरबानीन के टोल के टोल नथिया कू समझाबे आत। नथिया हू चकोर सो बहती पर बू सो सुनती अरु लुक्क प ई लती। चकोर की जानजात म ब्याह की चरचा जोर पकर गई। गाम धारेन क ई बात अनकटोटी सी लगी। वे याम गाम की हटी समझबे लगे। यासो गाम क मुडडन न चकार क बुलाय क गाम की राय बताइबे की निरनय कर लियो। एक दिना एक चौपार प बुलाय के वासी बात करी। चकोर न सबन की सुनी पर म्ही नद्र छाली। बिसार भरपच न वाते कही।

“लाला तेरे ऊपर तो हम घमंड ही कतू हनारे गाम की नाम उजागर करगौ। तैने पड लिखक हनारे गाम की नाम दूर-दूर तक कियो है पर अब एसी अनरथ ची कर रह्यो है ? गम की मरजादा ची मेंट रह्यो है ?”

मूला पच धोली बेटा गाम की तोहीन मत करे अपने बाप कू जा। तरो बाप कितेक भलो हतो ई हमपं ते जान ल। एक पोत बाकी टौटकी त एक पिल्ला मर गयो। बाकू गाव नै गाम बारेन की जूती कू अपन माथेप रखवे की कही। बान विचारे न नकहू ची चपड नाप करी बान गाम बारेन की बात राखी। तू बाई की छारा है तू बाई की बात नाप रख रह्यो।

चकोर या कथा कू सुनिक मन ई मन भभकी पर मन की बात होठन तक नई आमन दई। नार नीची करके सब सुननो रह्यो। तबई परमाल लम्बरदार उपन परो—

लाला बोल ची नाएँ म्ही म भूराए का ? बोल पचन की मानगौ क अपनी तानगौ ? गाम त मिलिक चलगौ क अपनी खिचडी जलग पकावंगौ। तू याहू बात कू समच ल। गाम में रहनी है तो गाम की मरजादा म रहनी होइगी। ऊपर हैके यहा नाप रह सकगौ। अपनी डपली जर अपनी राग अलापो तो बाए गाम सहन नई कर सकगौ।

या बात कू सुनिक चकोर तिलमिला गयो। धीरे त एक बात सरकाई—

का गाम छाडिनी परेगी ?

या जवाब कू सुनिके सिगरी चीवार बिगर उठी लोगन की म्ही तन गई, म्ही लाल है गए। कछू खडे है क घुरपट्टीन सुनावे लग—

‘हमारी ही बिल्ली हमसी म्याऊ कर। कल परसो की छोकरा हमारो सामनो कर।

जजी राठ की साड है रह्यो है।’

‘लाला, ऊपर कू मत पूक।

बटा गाम म रहबो भूलि जाइगो।’

“अगर हम मालूम होती तो एसी बोध ई नई होन दत जाप जाज मबजी भिनभिना रही हैं।

बटा ज्वानी म अधी मत बने। ज्वानी हम पऊ भाई। जो तू मुपन देव रह्यो है। हमन ऊ दख है भलो भाति सोच ल जागो पीछो बिचार ल।’ सोग

नमस्तमाए परसोकला पै परसोकला डारते रहे । हल्ला गुल्ला मच गयो तवइ बहोरी भगत नै हाथ जारि कै कही—

‘सिगरे निरदारी आपन अपनी बात याकू वता दई । याए नैक सोचिब विचारवेकी तौ औसर दयाी । आप इतेक जने ही ई अकेली है । कौन-कौन की बात की का का जवाब दे । याकी तौ बिनात ई वाए अकला महारथी वीर अनिमन्यु हू चप्रव्यूह म फमके जीतो नाम लौटो ।’

या बात कू सुनिके गाम वारे बहोरी प ई बिगर पर ।

“अच्छी बहोरी अब मालुम पर रही है क चकोर के पीछे बोन हैं । चलो कोई बात नाए तेरे कहे त औसर द रहे हैं । पर चकोर सुन ल बातन ते नइ मानी तौ लातन त बात करिगे । गाव मे रहवो भारी पर जाइगी ।’ भूला ने जार दक कही ।

चकोर प अब नइ रह्यो गयो । हाथ जोरि कै ज्ञाना - सिगरे महानुभाव वात्रा बहोरी कू मेरे बीच म मत सानो, वाकू लौना मत लगायो । इ ब्याह को मेरी अपनी विचार है । सिगरी दोस मेरो है । मोत जो चाहो सो कही पर बहारी बाबा सो कछू मत कही ।

गाँव वारे बहारी की ओर सो फिरिके चकोर पै फिर टूट परे देख लाला गाँव म रहनी है तौ गाव की रीति रिवाजन की तरिया रहनी परगी ।”

चकोर सबन के बालन कू सुनिक पर नोट जायो । वाके उतरे भए चेहरा ते नथिया न अनुमान लगा लियो वार म कछू कारी है । चकोर गुम्म मुम्म सा निडाल है कै परि गयो । नथिया न दखो तौ वाकी हियो भर आयो । तू बानी—

‘बटा ऐसी मुस्त चोँ है ?

मया लग रह्यो है, गाँव छोडिके चलनी परंगी ।

‘चोँ गाँव नै ऐसी कहा कह दई ?’

“मया साफ-साफ कह दई है कै गाँव म रहनी है तौ गाँव वारे जो किमे सो करनी परगी ।’

‘बटा में तौ पहलै ई कह रही गाँव त अरु राम ते पेस नाँव छाम ।’

‘सो ठीक है पर मै अपने भले बुने ए अच्छी तरिया जानू गाँव वार का जान ।’

‘तो बेटा, एसी काम कर, साप मर न लाठी टूट । बाऊ वामन की पढा लिखी छोरी ए दय ल वामन की मुततगी छारी हैं ।’

‘मैया जाकूँ वचन द दियो है बाकी या वनगो ? का मैं अपनी बात सों फिर जाऊँ ? थूक व चाट लऊँ ? ।’

दख तू अपनी जिद्द प सवारहै, गाम अपनी जिद्द प । यात काम नई चलगो । तन सुनी नाएँ का ? लोग कहै—जाट कहै सुन जाटनी ताय गाम म रहनो उँट बिलया लगो तो हाजी हाजी कहनो ।

‘मैया य कहावत थोधी रह गई हैं । इनम सार नाएँ । अब तो सन अपने अपने घर के मालिक हैं । सब अपने भलो बुरी अच्छी तरियाँ जान ।’

अब तेरी मरजी, तू जान तेरी काम जान । माय कितेक दिना रहनो ए पकी पान हू । जा दिना पर जाऊँ सोई दिना है । गाम में तोय रहनो है गाम कूँ तोय वरतनो है ।’

चकार नै मिया की मन की जान लई । गाम वारन की विचारधारा मानूम पर गई । अब वाए जीवन के कटु अनुभव हूँने लगे । वाए याद आज लगी भरतपुर कालज का जीवन जामे मिलतो अपने सगी साथिन को प्यार । जितकू जातो ब्रितकू ई लोग आख बिछाते । घर को सी प्यार मिलतो । तीऊ चकोर को मन जऊ के काज भटवती । एक हूक सी उठती । गाम की गध के ताई बाकी बाछ खिल जाती । गाम की सुखद कल्पना सों सिहर उठतो । गाम कू देखते ही नो नो हाथ कूदिवे लगती । गाम की बयार लगते ही तन मन खिल उठतो । आज बाई गाम मे बाकू इतेक सुनिनी परी याकी वाने सुपनेन मे हू नाय सोची ।

चकोर की नीद हराम है गई । चकोर दुविधा मे परिगो । एक ओर चदा ते कौल करार जरु मचन प पीछे गये डोल दूमरी ओर गाम की भय । चकोर गाम छाडि क भरतपुर जावे कू तयार ही पर मया की मन गाम म फसो परा । मया कू पीरा हायगी । मया झीपरी ए नाहि छाडि सक । झीपरी चुचाव गरमी सरदी बरसात कछू ए नाय रोक पाव । वीपरी की कच्ची भीत कच्ची भागन गुवरीटी ते आए दिना लोपनी पर । चाकी ते रोज भूमरे ही भूमरे पीसनी पर । झारा बुहारी करते करते थक जाए पर तीऊ झीपरी प्यारी लग । बाए बू मरेऊ मारे नाय छोडि सक ।

चकार इन सोच विचारन माहि हूव रह्यो तवह बाक दरवज्ज प याइक एक तागो सके । तागे म त हसतो भयो चाख लाल उतरौ । बाके हाथ म एक अखबार ही । चाखे लाल न अनुमान मो जान लियो क झीपरी म त निकसवे वारी हाय ना होय चकोर इ है । चोख न बिना पूछे ताछे बिना परिच के चकोर कू वधाई दत भए बाकू अखबार गहा दियो ।

चकोर ने अपनी रोल नम्बर टाप म दखिक पहल चोखे कू धयवाद दियो । जाभार प्रकट करयो । खाट विछाय क चोखे कू खाट प बठायो । फिर घर के भीतर मैया के पास पहुँच के बाके पाम छिए । मैया कू खुस खबरी सुनाई । मैया की आखिन म ते खुती के आँसू धर परे । बुढिया के ककाल मे नई लहर दौर गई । नथिया ने चकोर के सीस प ग्रासीस कौ हाथ फेरो । बोली—

बेटा तेरो सुपनी पूरी भयो मेरी एक कामना पूरी भई । अब दूसरी कामना और है बाए भगवान और पूरी कर दे । बाप और नई वाल्यो गया । गरी रूँध गयो । आखिन सौ आँसू चरव लग

‘अरी भया तू तो रो रही है ?

‘अरे बेटा रो रही हूँ क खुस है रही हू । य दुख के आँसू नाएँ सुख के आँसू है । ई रोइवो नाएँ, हसवे ते कऊ गुनोत्रडिके है । हा आज तेरो बाप होतो तो कितेक खुस होती । सिगरे गाम म फूली फूली डोलतो । ना जान कितेकन के घर जातो । ना जान कितेकन के पर छतो । गाठ म चाहै बछू नई होतो पर मंदिर जातो, भोग लगातो घर म कथा करवातो । कहते कइते नथिया कौ गरी और भग आयो फिर बाते नइ बोली गयो । चकोर मैया के आँसू न पीछ क बाहर आयो । वाने नवागन्तुक सौ परिच पायो । चोखे वालो—

नाम मेरो चोखे लाल है और ई जपवार चंदा ने भेजो है ।

‘अरे ! चंदा के आप पिताजी हैं । धय है आपकू । आपन आइके जो किरपा करी है ताके ताई होठन सौ कर्म आभार प्रकट कइ ।

‘अपनेन के ताई जीपचारिकता नाय सुहाव । हा इतेक जरूर है, चंदा ने अखवार देखत ई मोय भेज दियो है । बू हू आइवे की कह रही पर मैं ही जान बूझके सोचि समझ के छाडि आयो हू ।

‘ये आपन अच्छी भियो । पर ई तो बताओ चंदा को का परिणाम रह्यो ?

‘चंदा को परिणाम अवई आवे बारो है । आपने अखवार नाँय देखो ना ?

‘अजी गामन मे अखवार कहा ? अवई गामन म कम चल्ला है । कोऊ आइवे वारी ही भलई अखवार ल आव । ई तो आपन बडी किरपा करी । जाज अखवार निक्की जह आजई अखवार देखिबे कू मिल गयो

‘ फिर आपन किरपा जसे सब्दन को प्रयोग करी । अच्छे काम म योग दवो अच्छे काम कू देखिके खुस हैवो मान्स को सुभाव हीनी चइए । एक दूसरे की बढ़ातरी मे हाथ बढ़ावो अच्छी है ।

“ई तो आपने सतयुग की तो बात यह दर्द कलियुग में एक भाव बहू बहू मिले ।”

“अजी सतयुग कलियुग तो हमसा रहे हैं अरु प्राग हू रहिगें । हर मास के जीवन में रोजीना इनकी बतवो होय । जब जाय जीवन में अच्छे विचार आवें तब सतयुग वाके जीवन माहिं हाय । जब बाक जीवन में कनहू बर, स्वाय सगड झगडे क विचार आवें तब कलियुग बत रह्यो हाय । मास को कतेव्य ई ए नू सात्विक विचारन क सम, सम की सदुपयोग करं । बाए हाथन सो निबसन नही दे । ई साचले के प्रभु न बाप किरपा करी है । सात्विक विचारन प स्वारय की, मोह की माया की, ममता की आवरन नही चदन दे ।

“वाह ! भया वाह ! आपन विचार भोत सुलझे भए हैं । तबई तो एम ए में टाप आए हो । भगवान आपकू प्रीर मति अरु गति द ।”

याके पाछे चकोर न चोखे की जावभगत के ताई दौड घूप करनी चाही पर चोख नै हाय पकर कैं बठार लियो । चकोर नू भरतपुर आइवे की नोती दकैं चोखे नै चकार सो विदा लई । चकार की चाखे नै जावभगत स्वीकार नई करी । याकी मतलब चकोर समन गयो । जसी पेटी तभो वाप । हा चकोर के मन पै एक छाप जरूर पर गई । बाकी मन चंदा के माऊं जीर झुक गयो । बाकी सम्मान और बढ गयो ।

चकोर के एम ए में टाप आवे की चरचा पूरे गाम में फल गई । गाम की नाम है गयो । यासी कछू लोग फूले न ममाए कछू लोगन कू चकार की बढती भई बात अच्छी नाम लगी । ऐस कुटिल लोगन कू तुलसी नै सन की उपमा दर्ई है जो अपनी खाल कढाय क दूसरे कू बधवाइवे में ही सुख मानै ।

जब ते चकार नै खुशी को समाचार सुनो तब सो कोऊ ज्यादा उछल कूद नाय करी । सहज सुभाव सो गाम की अधाईन प गयो । बडे बूढेन के पाम छीए । कछू लोगन के मन की मेल दूर है गयो । कीचड ते कीचड दूर नाय हाय । कीचड तो साफ पानी सो ही दूर होय । हाँ, जिनके मन कारे हैं, बिनपैं चड न दूजो रग बारी बात भई ।

चकार न या समे या बात की विचार नई कियो के कौन किन भावना माहिं बरत रह्यो है । बान ती जपनी धरम निभायो । बाकी मैया न जो जादेस दियो बाकी पालन कियो पर अब चकोर नै अपने मन में निरनय कर लियो ।

कछू गाम बारे चकोर के ब्योहार कू देखि क पसीजे, पर कछू तो मन ई मन बुड क रह गए । मन ई मन बहूवे लगे, बेटा तू कितेकऊ पाम छील आनजात में ब्याह नई करन दिग । आनजात में ब्याह कियो तो जात में ते छिकवाव दिगे क गाम छोरनी परगो ।”

पबके पैराए

चोखे नै भरतपुर आयके मिगरी समाचार मुभायो । चन्दा मनई मन छिल गई । राधा, जो मन हल्की आयो । अची वे गये बान नही उतरती । अची को मन धुकर पुकर करिवे लग्यो । जानजात मे ब्याहवे की बात सुनतेई मन म धिरना अह तन म आग भी लगब लग्यो । जिन बातन कू सुनिके अची नाक भी सिक्कोडो करई, बाकी जो जरम्यो, बिन बानन कू अपन घर माहि देखिके बाकी राम राम काप उठी ।

चोखे नै जब सी चकोर देखो तब सी बू बाते भीत प्रभावित हे गयो । बाके जीवन दरसन की बातन नै सुनिके ती बू चकोर, कौई है गयो । उठती रेखन की गार रग को पट्टा उठतो भयो हाड हँसमुख चेहरा, बात करती ती फूल से झरत । बातक करीन की करतो । नपी-तुली सार भगी । का मजाल जो बातन म हल्कोपन झलक जातो । बात ऐसी गूढ गम्भीर मानो काऊ साधक बोल रहयो होय । चोख कू चकार की रहन-सहन पूरी तरिया नो भा गई । हा बाने अपनी प्राखिन सोई देखो के बाकी घर बाए, मिट्टी क लौदान की दीवारन प छप्पर परयो भयो है । छप्पर हू साबित नाओ । बामे चदा सूरज यारे झाक रह । घर के दरबज्जे प एक पल्ला की किवार सौऊ तजान की बनी भई । चातरा ऊबड खावड । घर के सामइ अंधक नीची धरती । जा खाट प चोखे बठो बू हू टढ़ी मंडी पाटी सरन की । बानऊ छितरी छितरी । बन बन ते बगाली झाक रही । सब तरिया सी गाम को सी डरि हो । घर कू देखिक चोख का मन अचबचा रहयो । बर तो चदा के अनुरूप हुतो पर घर की माऊं ते चोखे कू चिंता भई । एक मन निगबतो ती ताई सभ दूसरी मन कहती, भोल करो तरवार को परी रहन देओ म्यान । चोखे न जब चकोर के घर की रूपरेखा राधा के सामइ खची तो राधा ठू घबरा सी गई डूँडे बंस प भोल नाथ कू नगन हालत म देखिक, गग म बिनकी अनकटाटी बरात कू देखिके जो सती की मया की हालत भई साइ दमा राधा की है गइ । चोखे वे लगी बाकी पिटिया न कबहू लीपो ना कबहू पोती । कचब आगन क कवऊ दरसनऊ नाँव करे । टूट छप्परन म जहा फूस झरेगी चदा कैस रहेगी ? साचत सोचते कुआ से मे पर गइ । चोखे के पूछब प बान अपने मन को दरद खालि क चोख वे सामइ धर नियो । चोखे न बाकू समयायो अरी सब दिन जात न एक समान ।' भइ ई ऊ बात कही है पूा कपूत तो क्या धन मच पूत सपूत तो क्या धन सच ।' पूत चोखो होय तो चोखरी कू कोठी म बदलते देर नाय लग । अरी बावरी तन सुनी नाय का साबित्री न लकरीया काटते राग्यहीन अघे मेया बाप की बेटा सत्यवान चुनो ? फल ना भयो ? तोय सब मानूम है । चकोर क अच्छे आसार दिखाइ पर रहे हैं । बार करवे कू तरवार

की धार देखी जाए म्यान यूँ नाय देखें । नीति की बात है कै गदी नाली म ते हीरा ते जडी सोने की अ गूठी छोडिबो हिमालय जखी भून है ।’

राधा यूँ समझाय कै चाखे नै चन की साथ लई, पर राधा नै कराहन भए कही, “अजी तुम मानम हो पिना हा, तक अर बुद्धि तिहारे पास है । मैं तो माहतारी हू भरे पास है मया को हियो । मैं और यछू नाय जानू । तुम्ह भाव सा करो ।’ या तरिया राधा कू तो मनाय लियो । पर अ ची यूँ कसैं समझायो जातो । मया तो पुराने विचारन की । नए विचारन की परत चढतई नाय दती । यूँ ताँ अपनी भावभूमि प हियालय की भाति अचल अर अटल ई । वू अन्तरजातीय ब्याह के पच्छ म नाई । वाकूँ समझायो गयो क सम के सग चलनो चइए । ज्वान छोरी छोरान की बात माननी चइए नई मानी गई तो इत वितकू हू निकस सक । यासोँ राजी खुशी ब्याह कर दिवो जाए तो चाखो है । अची नू लाख ममन्यायो पर धाए हू गो वेर तं काजर हाय न स्वत वारी बात भई । भरभू जा को भार सफेदी ते नितेवऊ पातो नाए पर वू सफद नाय हाय या ई भाति अ ची कू बदलवो अमम्भव हा । अ ची सबकी मुतनी रही पर मन ई मन बुद्धतो रही विचारी की का चलतो । वूवो सास अर हड्डीन की माला की कौन मुन ?

चन्दा के सामई अऊ गाम अर चकोर की पर बार बार भूमवे लगी । चकोर क आगे वू सवन कू भूल जाती । चदा तो आग की माचिब वारी । बान इतिहास पढी जाई अनेक ऐसे गरीब मासन की इतिहास पढी जो कछू ते कछू है गए । बान ध्रुव सोच विचार क पग आगे बढायो फिर मन माने की बात है, मना साति चाइए का कुटीर का महल ।” चदा तो अपने सोचे भए कूँ पुरी कररे की माचिबे लगी ।

अऊ गाम म जस चकोर की विरोध भयो याही भाति भरतपुर के गोपालगढ मोहल्ला मे चदा की विरोध भयो । दकियानूसी जर भुन उठे—

कैसी कलियुग जा गयो है ?

‘अजी अब तो छोरी छोरा निरद्वन्द्व है गए है ।’

‘अबइ का देखो है ? आगे आगे दखिबो का का हाय ?

मया बापन नै छोरी छोरा मूँड प चढाय राखे हैं ।

या तरिया सो गोपालगढ म चब्रया हैव लगी । जा नई विचारधारा के वे या सम्बन्ध की चरचा मुनिक बड मुस भए । विनै अपनी सुपनी साकार ही तो दिखाइ परी । वि न चन्दा अर चाखे की बाहवाही करी ।

जो लोग अन्तरजातीय ब्याह मे विराध म ह विनै चाख कू समझायो । जो आके पच्छ म ह वि नै वही के शुभ काम मे देरी चाँ ? चाखे कू जा विचारधारा के

मा स मिलत वनको प्रभाव रापे परतो । पहली विचारधारा तब तक धुमडती रहती जब तक दूसरी विचारधारा के लोग नाय मिलत । दूसरी विचारधारा के मिलतई पहनी विचारधारा कपूर की नाई उड जाती । चोखहू हाड मास को बनौ । हर विचारधारा को प्रभाव परना जरूरी हौ । जाबी मनोदसा वा दीपक के लौ की भातिई, जा बजार के शोकान मे बबऊ इतकू और कबऊ बितकू है जाय ।

चोखे न साच विचार के अन्नरजातीय व्याह को विचार बनाए राखा । याक पीछे कई कारन हे । एक ता गरीबी, दूजे चकोर की योग्यता । तीजे ब दा चकार को धनी प्रेम और सबनो ऊपर समे की माग । चकोर की चाह चोखे के चित्त म चाखी चुभ गई । पर बाके मन म अ देसो हमेसा बनौ रहतो के पार कस परगो ?

कच्ची दूध पीवे क कारन चन्दा कौऊ मन कबहू बबहू कचा जाती । बबऊ-बबऊ सीचती बी ए पास नई भई तो चकोर जानें स्वीकारगो के नई ? परिनाम पे जीवन को परिनाम टिको भयो । याही मीं बू अखवार की मह की मी वाट देखती । सबरी की नाइ राम दरसन की प्रतीच्छा म । अखीर म राम की भाति एव दिना सम पे अखवार आयो । मन के कान कान त जावाज घाई के बितली के भाग ते छीकी टूट पर । बी ए का परोच्छा परिनाम माट जाखरन म पढिबै घडकन बढ गई । हाथ कापव लगे । 923 रो न बर मिगर पानान प दख लियो कही दिखारि नई परी । चदा पसीनान म भीज गई । अखवार बई पोत देखो पर सफद स्याही म ई रोल नम्बर हौ । कस दिखाई परतो । बाके आखिन के आगे अघेरो छा गयो । बाए अपने सुपने चूरि चूरि होते दिखाई परे ।

चन्दा की दुरदसा कू देखिके राधा अर चाखे के चेहरा उतर गए । घर माहि मातम सी छा गयो । सबन की भूख, प्यास, नीद, हिरन है गई । हाथन के तोता उड गए । ऐसो लगी मानी जीती बाजी हार गए हाथ । चोखे अर राधा कू चन्दा को ब्याह दुलभ दिखाई परी । पहलेई गस्ता म माखी आ गई । ताही सम चकोर अखवार तक चदा के घर बाई तरिया जायो जमे चोखे अखवार तक चकार के घर गयो । ई सयोग की बात ही क चकोर बाई दिना भरतपुर जायो हतो । वाए चदा को रोल नम्बर या नौओ पर या बात को पूरी विश्वास ही क चदा पास होयगी ।

चकोर न घर जाइक घर की स्थिति देखी तो चकरा गयो बाक पाम टूट स गए । घर की वातावरन कह रहया के दार माहि कारी है । चकोर को नाम सुनत ई चोखे जगवानो कू दोरि के आयो । बठक माहि बठाय क चन्दा कू खबर करी । चदा की चेहरा और उतर गयो । म्ही प हवाई उड रही । बू सांचिब लगी न जाने का कहन घाए है ? बू पूरी जोर लगाय के साहस बटोर क बठक माहि पडूची । बाक उतरे भए चेहरा ते चकोर सब समझ गयो । चदा नै चकोर के हाथ म अखवार दयो तो चदा बोली—

“भा अखबार मर ताइ लाए हो ?”

“सोत्रिक तो यही जायो हू ।”

“अखबार घा चुकी है, पर आप लाए हो याके ताई धन्यवाद ।”

‘ धन्यवाद तो तब दियो जाती जब तिहारो नाम बन जाती । अखबार जब तिहार नामई नाय आयो तो धन्यवाद काए को ।’

‘ अखबार मरे नाम नहीं आवंगो ई बात तो अब मालूम परी है, पर आप तो ई सोच कै लाए कै अखबार नाम आवंगो हो । तबई तो आप आए हो । तबई आपन कष्ट उठायो है याही सौं धन्यवाद दयो मेरी कतव्य है ।’

‘ चन्दा तू तो औपचारिकता म आ गई । पर ई बात तो बना तरी रोल नम्बर का है ?’

‘ आप रोल नम्बर पूछिके का करीम ? रोल नम्बर दखि तियो । रोल नम्बर नाटे ।’

‘ चन्दा ऐसी तो आता नाही ।’

आप ठीक कह रहे हो पर भाग ते का पेस छाए ।

‘ चन्दा भाग तो करमन क आग नाचे । कम सीई भाग जनै ।’

‘ कम अह भाग म कोन बडो है याप आप सो वाद विवाद करके जीनिवो कठिन है । पर हा कम सो भाग बन क भाग सो कम लिए जाए ई सवाल युग युग सो बनो घा रह्यो है । इनम कौन बडो है द तो पानी बू बिलीके मक्खन निकारवे जमी बात है । मैं तो कम की पच्छधर हू पर भाग क खेलन नै देखिके कबहू कबहू हिन जाऊ ।’

‘सो तो सुभाविक है अच्छे-अच्छे हिल जाए’ । पर एस औरतन प जो सम्हर जाए बेई कमवीर दुनिया म कछू कर सकै । हार जीत सफलता अमफलता तो जीवन के सग जुरे हैं पर मास गिर के सम्हर जाए बू ई मन्चो मानस है ।’

“भा समे मैं और कछू तो समय नाँय पा रही । हा इतक जानू क या समे मरे सिगरे सुपन धूरि धूसरित है गए है ।

एसी हारी हारी बात ची कर रही है ?

“हार कऊ हारी बात नई कर ता का करू ? ज्वारी दाक हार कै सब कछू गवाँ क और कसो बात करगो ?

“तिहारी ई मानसिक दसा सदा एव सी नाय रहैगी या समै योरी सी निरासा साक रही है । समै प सब ठीव' हें जाइगी । हिम्मत वाधौ फिर तयारी करो ।’

“तयारी तौ करूगी, भरपूर करूगी, देखुगी वहाँ कमी रह गई । कमी कू दूर बरवे कू फिर पूरी शक्ति सौं जुटूगी पर मेर फेल हैवे ते भरे तान वाने टूटते से दिखाई पर रहे हें ।

चौं ई कने कह रही हो ?

स्यात मेरे फेल है जावे ते आप ।’

‘चन्दा कसी बात कर रही है । हम अरु तुम डिगरीन ते घोरई मिल रहे हें । हम तुम मित्र के रूप म रहे तो का या पास फेल ते बदल जाइ गे । तुमने सुनी नाय एक सच्ची मित्र अपने सच्चे मित्र सौं बहा कहें —

‘मितर हम तुम एक हें कहन सुनन कू दोग ।

मन त मन कू तौलिए कइहू न दो मन होम ॥

और मुन नोन पानी म धुर जाए ता कौन निकास सक । गोपीन व मन म उडव निरगुन ब्रह्म नाई बठा सकी गोपीन ने कह दई—एक दुतो सो गयो स्याम सग वा अबराध ईस ।’

या बातचीत वे दौर कू तार दियो चोखेलाल अरु राधा के जामन न । राधा चाय लकी अरु चोखे नमकीन अरु मीठे की तसतरीन न लकी जा गए । राधा के हाथ त चंदा न केतली ल लई अरु मया ते वही—

‘मोय जावाज द लौंजी में ल जाती ।

ता पाछ प्यालेन म चाय उ डेलते भए चंदा कछु हलकी फुलकी सी दिखाई परी । चकोर न चुप्पी तोरी इतक चीजन की न जरूरत ही इन सबसी बढके स्वाद हमारे अरु आपके मधुर व्योहार म है । हम तौ आपके घर की एक इकाई तौ ह । घर के अ ग है ।

‘तबई तौ अपनी इकाई की स्वागत अरु सत्कार करनी चइए । आप हमारे अतिथि हें और कही करे ‘अतिथि देवो भव । चोखेलाल न उत्तर दियो । फिर तौ व तन की लरी बन गई । चकोर न चंदा के फेल है जाइवे की घटना कू हलकी सौ लियो । चन्दा कू हिम्मत वाधिव की बात बार बार दुहराई । असफलता त मफलता कौ पाठ पठनौ चइए । चोखे अरु राधा नऊ दुखी मन त चकार की बात की पुष्टि करी । चकोर की बातचीतन कू सुनीके राधा अरु चोख क कछू जाता सी बधी । दूर सौं अघेरे म भटकते भए कू दीपक की चमक दिखाई परी ।

अखीर मे चकोर वापिस लौटो । ऊपर ते वान हिम्मत ती चन्दा कू बधाइ पर जाकू जीवन साथी बनाइवे कौ निहव कर लियो बाके दुख सी दुखी हौनो सुभाविक हा । च दा क पास गयो तौ उमग ते ही पर बुझे बुझे मन त आनी परी । हाय मे लगी बटर निकर गई । लाटरी कौ नम्बर निकसतो निकसतो रह गयो । सोचिबे लगी वा म्हो त मया ते कही जाइगी ? कसै अपन धारनते कहैगी । बाकी फलती फूलती फसल प विजुरी गिर गई ।

चदा चकोर के बोलन कू सुनिक कछू देर कू सम्हर गई । धीरज हू बघो । योरी देर पीछे फिर उदास है गई । ओस चाटवे ते का प्यास बुझे ? अखवार नै ना कछू दियो ना बछू लियो पर चदा की हालत बिगार दई । चन्दा बीमार सी लगवे लगी । राधा और चोखे नैऊ चदा कू दिलासा दई वेटी थोडा पै चढब वारो ही गिर गिर का पीसन हारी पर सहानुभूति के सब्दन न सुनिके फफक-फफक के रो परी । राधा नै चदा के आसू अपने पल्ले म बाध लिये । चोखे नै वाक सिर प प्यार कौ हाथ फेरी । चदा जाखिन सी आसू बहाय क हल्की है गई । आसून कौ बहवो भौत मुखद होय चाहै व सुख के हौ चाहे दुख के । आसू नई बहै तौ स्यात मान्स वाबरो है जाए । सयोग अरु वियोग म आसू बहाय क मन कू सवर बधाय पाव । हिए रुपी बाध के आखिन रुपी तरता नइ खोले जाए तौ बाध टूट जाए ।

चदा कई दिना लो उदास रही । घर सी बाहर नई निकसी । घर म परी परी मनई मन घुटती रही । सग की सहेली चदा कू घेरे रहेई । पास हैवे वारीन के धीरज बधाइव के बोल घावन प नौन की भुरकनी से लगते, पर चन्दा कछू कहना सकई ।

चन्दा अकेले म अपन परचान कू बर बेर देखती । बर बर नम्बरन कू जारती । समझ ना पाती क करी फेल है गई ? वू राज पहली साल, दूसरी साल के नम्बरन कू खेिक रोती—प्रथम श्रेणी के जास पास के नम्बर, तबऊ फल । वाप भारी दुख के बादर छा गए । बाए तोस हतो तौ एक बात सौं हौ—चकोर कह गयो “सम्बध डिगरीन सी नाय हाय सम्बध मन सी होय ।” ई बात बर बेर वाक ध्यान म आवई अरु घाव प मरहम की सी काम कर जाव ई ।

दो दिना पाछ कालज म अ क तालिका आई । चदा बोझिल मन सौं अ क तालिका सब पहुँची पर अ क तालिका देखिक दग रह गई अ क तालिका म लिखी द्वितीय श्रेणी पास । चदा फुली न समाई । पायन कू पख लग गए । पौन के वेग सौं घर आई । चोखे क सोमई अ क तालिका धर दई अरु कही पिताजी अखवार म गलती त रोल नवर छपव त रह गया । ई दणो में ता सक्रिण्ड डिवाजन ह । सिगर घर म सुता नी सहर गोरि गइ । सिगरी घर नाच उठो । सूखेधान नू पानी मिल गयो । कुम्हलाए पोधा जी

उठे। मरुस्थल में पानी की धारा बह निकली। पतझर में बहार आ गई। मृतप्राय कूँ सजीवनी मिल गई।

चन्दा सुपने बुनब लगी। चकोर कूँ अब मेरे पास हैबे की खबर मिलेगी बे रह नई सर्बिग। भगे भगे आमिगे। यो तो चकोर नै कह दई के सम्बध डिगरीन सी नाय होय सम्बध मन सी होय, पर मन में उछाह होय तो और बात है। पास हैबे की खबर ते चकोर की मन चौगुनी है जाइगी। चौगुने चाव सी ब्याह हायगी।

बात हू ऐसीई भई। चन्दा के पास हैबे की खबर जैसई चकोर कूँ मिली चकोर भगी भगी आयी। भरतपुर आइकई दम लई। चन्दा क घर आइकै सावर खटखटाई। सयोग ते साकर खोलिबे चन्दाई आई जसही दोनान के नैना मिले चेहरान प चमक दमक जा गई। मन नाँविले लगे, नना हँसिबे लगे। चन्दा नै हाथ जोरि के स्वागत कियो। पोथी सूची ते पोथी की पूरी ब्योरा मिल जाए। चकोर ने बधाई दैत भए कही—

‘हम तो पूरा भरासी, तुम जरूर पास होओगी।’

मोऊ कूँ पूरा भरोसी पर अखवार नै तो मरी दमई निकार दई।”

“तो अब तालिका जा गई।”

‘हाँ ये देखी ना।’

चन्दा नै जलमारी में ते अक्तालिका निकास क चकोर के सामई घर दई। सकिड डिवीजन, सोऊ अछे नम्बर ते। याए देखिकै चकोर औरऊ नाच उठी। थोरी देर में राधा अरु चोख हू उठक में आ गए। चकोर कूँ खुस दखिक बिनकी खुशी की ठिकानी ना रह्यो। चाखे अरु राधा न चकोर की खूब आवभगत करी। पूर घर माहि सुख की सागर उमड परी। घटा दो घटा रहकै चकोर जब चलबे लगी तो चोखे बाए पहुँचावे भरतपुर के बस स्टण्ड तक आयी। राह में चोखे नै बात खेनी—

लाला अब सम्बध के बारे में का सोची है ?’

पिताजी यामे सोचिब अरु बिचारबे कूँ ठौरई कहाँ है ? मैनें तो पहलई कह दई सम्बध कौऊ डिगरीन त नाय हाय, सम्बध तो मन त हाय। पिताजी सम्बध तो पहलई है चुकी अब तो जग की रीति निभानी है।

“तिहारे इन बोलन न चन्दा कूँ बडो सहारी दियो है। नई तो ।

‘नई तो का चन्दा क फल है जावे ते में अपनी बान सी पीछे हट जाती। हमन तो पढी है “प्राण जाहि पर बचन न जाही।’

‘धन है तिहारे ताई । मोय तो पूरो भरोसी पर अब बात आगे कस बढ ? तुम वही तो गाम आइव, तिहारी जम्मा सों बात करवे कू चदा की मया कू भेजू ।

“नाए पिताजी, मेरी खुशी म मेरी जम्मा की खुशी है । वान सब बात माप छोड राखी ह । करता घरता माइनू बनाय राखी है । में आपकू, चदा की अम्मा कू और दूसरे काई कू परेसान नाय करनी चाहू । आप चिंता ना कर । भगवान सब भली करगो ।”

‘ फिर शुभ काम मे देरी चा ।’

‘मोय खुद चिंता है । अम्मा भोत बूढी है गई है । अब बाक हाथ पाव काम नाय दे । अब बाकी सेवा कू चदा की जरूरत है ।

‘ ई तो चदा की सौभाग्य होयगो ।’

सौभाग्य तो हम सबको होयगो । चदा क आते ई हमारे घर मे उजैरो आ जाइगो । तपते भए जीवन म ठडक आ जाइगो । सच माना चला के सस्वार भरे व्यवहार न मेरी मन जीत लियो है पर अबई एक बाधा है । गाम जायक गाम वारेन त स्यात जुडड ल नी परगी ।

“लाला अच्छे काम में तो बाधा आवई है ।

“मोय बाधान की चिंता नाए । अच्छे काम भोतन कू बुरे लगे तो भोतन कू भाव । मै सब निपट लऊ गौ । आप निश्चित रही ।

“देख लीजी या गैल पं काटे दिखाई परें तो पीछे पग हटावे म ई बुद्धिमानो है ।

अजी पिताजी कठिनाईन ते का बढते भए पाम एक सकिगे । चैटिन के मरवे त वा चलिवी छोरि दिगे । कूकरान के भूकवे ते का हाथी राजमारग कू छाड देगो ? बस स्टैंड आबे प बातन की लरी टूटी । चोखे कू पक्को भरोसी हे गयो के चकोर पक्के पराएन प है । ज्यादा बात करबो अच्छी नई समझी । राजी राजी चकार कू बिदा करके खुसी खुसी चोखे घर लौट आयी ।

परित्याग गाँस कौ

चन्दा अरु चकार क ब्याह की बात जब चीराहे की चचा बन गई तो अऊ गाम ब्याई कुतिया की नाई हुरहुरायबे लगी । गाम बारेन पे आनजात म ब्याह हैवे की बात सहन नाय भई । जुर मिलिक गाम उपाय दू दिवे लगी । अखीर मे पचायत बुलाइवे की तै करी । दिना और ठौर ते कर दिए ।

गाम के मंदिर प पचायत जुरबे लगी । गाम के लोग अपन-अपने फटान नै बाँध क मंदिर पे इकठोरे है गए । सब अपनी अपनी मौछन प हाथ फेरब लगे । मौछन कौ सबाल ही । गाँस की आवरू कौ सबाल ही । गाम की इज्जत के ताई म्यान म त निचसबे लगे । या समै ऐसो लगी क राम के धनुस तोरबे प विरोधी राजा बोखला कें वह उठे होय, का धनुस टूटबे तेई ब्याह थोरई है जान दिगे ।

सबन कौ त्रोध चकोर की मैया प जी । सब वाई कौ दास बता रहे । सब या बात प तुल रहू, कें तो ब्याह रुकें नई तो नथिया की घर जडमूड ते उडा दियो जाए । किसोर सरपच न सब भँयान कू सात करबै अपनी बात कही 'भयाओ आप सबन नै गाम की नाक रखबे ते ताई जो कदम उठाइवे की बात कही है मै वाते दूर नाऊँ पर एक पोत वा बुडिया कू बुलाय कें और पूछ ले ओ, बाके धरम भया बहोरी कू बुलाय कें पूछ लेयो । फिर कोऊ यो नई कहे क विचारेन कू वालिव कू काऊ औसर नई दियो अरु कुल्ली म गुड फार लियो ।

ई बात सबन कू जँच गई । चकोर की मैया अरु बहोरी भगत बुलाए गए । नथिया अरु बहोरी भगत सो पूछी गई 'भाई बहोरी, चन्दा अरु चकोर की जो बालाई वाला आनजात मे ब्याह हैवे जा रह्यो है ई रूक सक क नाय ?

बहोरी न हाथ जोर कें अपनी असमथता प्रकट करी । बाकी बात कू सुनिकें सब बहोरी भगत प टूट परे । भाँति भाँति की आवाज रुसबे लगे—

‘जजी घोटू पेट कूई नव ।

भयाओ टूटी बाँह गर मई पर ।

सही है मत्तर में पढे बमई म हाथ तू दब वारी बात है ।’

बहोरी प नई रह्यो गयो बाली—‘ सिरदारो तुम कछू कहो, आजकल क पडे लिखे छोरान के हट कू जानी ही ही । हमारी कहा चल ।’

किसोर नै इन बोलन कू सुनिके अपनी राय नई दई । वान नथिया सौ बही “नथिया तू कहा कहे तोय पती है क तू या गाम क बसाए उस रही है नई तो बर कवळ को उखर जातो । दा बीधा झारन न कोळ कवळ को हडप लेती । हर माह ताकू सीधे नई मिलते तो पेट भरबो दुभर है जातो । जा दिना चकोर को बाप मरौ वा दिन तेई तोकू अरु चकोर कू गाम नै छत्तर छाया दई है । काऊ तरियां त आंच नइ आन दई है नई तो तिहार। खोजहू नही मिनती ।

नथिया नै सबसे हाथ जोरि क कही मैं गाम बारेन के बसाए बस रही हू, गाम के जिवाए जी रही हू । गाम बारे मोय मारै चाहे छोड़े द पर मेरो छोरा ते पस नाय खा रही । मरो पस खामती तो मैं रोक लेती ।

अब नौ किसोर लाल ताती है गयो । लाग भमक उठे । बरसवे लगे । किसोर न सात करक अपनी निरनय सुनायो, भयाओ अपने हाथ क पोधा कू काळ नाएँ काट पर जब बू काट बखेर, गाव की मड कू तोर तो का कियो जाए । यासी आज ते बहोरी अरु नथिया की घर देखो जाय रह्यो है जो इनको सग दगो बाके सग हू ऐसी सतूक ई कियो जाइगी ।’

याको एलान हीते ही पचायत उठ गई । सब अपने अपने घरन कू चल परे । बहोरी अरु नथिया हू घर लौटे । रस्ता मे बयरवानीन नै पूछी ‘ का रही नथिया ?

नथिया बोली, ‘रही का, जिनै म बादर समझी के घुँआ क बादर निकस रच्छक भच्छक बन रहे है ।

एक नै नथिया कू बुरदी, अरी जनीति तु कर रही है । बीज तू बो रही है अरु दोस द रही है गाम बारेन कू । ई कहा की रीति है ?

नथिया प नई रह्यो गयो बोली मेरो छारा कोनसी जनीति कर रह्यो है । कोळ धरेजो तो नाय कर रह्यो । काऊ कू बडाय क तो नाय ल जा रह्यो । फिर जा अपनी बचन द आयो है बू अपनी बातन त कसे गिर जाए । जब चकोर चन्दा क बिना नाय रह सक और फिर छोराई मेरो नई रहेगी तो दुनिया म मरौ रहई का जायगी । जब बट गई तो पेड कहा टिकगी ? नीब खुद जाइगी तो घर कहा टिकगी ? और फिर महरन म तो याहू त ज्यादा है रह्यो है । आा बरस रही है । गाम कय भ्रष्ट रह जाइगे । गाम म हू आज नई तो बल्ल यही होयगो । सम की च्यार कू ना हम राक सके ना पच रोक सके । हानी तो हेके रहेगी । समय एक सौ नाय रहे ।’

नथिया घर आय कँ निढाल सी पर गई। नथिया जान ही, गाम वारेन को विरोध माल लँक गाम म रहवो कठिन ही। 'जल म रहँ मगर सो बैर' वारी बात ही। नथिया या समँ किंवतँव्य विमूढ सी है रही। एक जोर गाम मे रहवे कौ सवाल है तो दूसरी ओर छोरा के जीवन की बात ही। अजोर मे नथिया न निहचँ कर लियो रहट्ट उतर चाए बट्टा वू छोरा कौ ई पच्छ लेगी।

छोरा न हू जा दिना टाप कियो बाई दिना ते बाके ब्याह के ताई आइवे वारेन की लन डोरी सी लग रही। अच्छे अच्छे बामनन नँ देहरी की धूरिल लई पर चकोर की मया न हाथई नाय धरन दियो। चकोर नँ तो या विस मे बात करवोई छोडि दियो। वाने साफ साफ बह दई जा गँल जानोई नाय बाके कासननँ गिनवे ते का फायदा ? चकोर जितेक मना करती, बितेकई वेटीबारे दुने दुने आते। प्रलोभन दैते। कोऊ नौकरी लगबाइवे की कहती। कोऊ हवेली दैवे की कहती। कोऊ स्कूटर दवे की कहती। कोऊ फ्रीज दवे की कहती। पर चकोर के चित्त पँ चदा चढी भई। वाने सबन की सुनी पर अपन मन की मानी। अपने यारवासन ते अपने मन क विचार साफ साफ बता दिए।

इतकू अखवारन म अऊ गाम की पचायत की खबर छपी। चकोर नँ पढी तो अचम्भे म आ गयो। बाकी मैया कू बुलाय कँ दबाव प दबाव डारे गए। या बात कू पढिकँ चकोर प नई रह्यो गयो। वू दोरो छूटी अऊ पहुँचो। गाम पहुँच कँ वान मैया सौँ सिगरे हालचाल जान।

चकोर की मया रोते भए बोली, 'बेटा अब गाम मे रहवो बडी दूभर है गाम नँ हम छेक दिए हँ।

मया गाम नँ ही तो छेके हँ, धरती तो भीत बडी है।

'बेटा, धरती तो भीत बडी है पर अपने पुरखान के दो वीघे झार नम छोडे जाइगे। चलो इन झारन नँ हू छोड दिगे पर जा घर म ब्याह कँ झाई हू, जाम तोकू जनम दियो है बाए कसँ छोडो जाइगो।

'मया धरती तो एक है फिर घर ते का मोह ? सिगरी धरती हमारी घरई तो है। या घर मे जान जितेक भए। सब ना जान कहा गए ? याए यही छोडि गए। बाऊ दिना या घर कू का या देही कू हू छोडि जानो परगो। मया इतेक मोह काइकू कर तन सुनी होयगी, मोह मवल ब्याधिन कर मूला।

बेटा सुनी तो सब है पर मन तो नाए मानँ। रहवे कू घँसला हू चइए, पहरवे कू कपडाऊ चइएँ, पेट के ताई दाने ऊ चइएँ।'

'मैया मीय तो वा भगवान प खूब बिसवास है फिर अपन हाथ पामन पँ पूरो भरोसी है।'

‘जसी तेरी मरजी, तू जान तेरो काम जान । मैं नी भरी पचायत म कह आई, मैं अपने छोरा कू नाय छोड सकूँ, गाम नाराज होय तो है जाए ।’

‘मया ऐसैं काइकूँ कही ।’

‘तौ का कहती ?’

‘या कहती, बेटा कोऊ बच्चा तौ हत नाएँ तू अपनी भलौ बुरी अप जान ?’

‘बेटा यो ही तौ कही है मेरी बेटा के सामई नाय चल ।’

‘मैया तेरी चल चौं नाएँ ? मैं जो कछू कर रह्यो हू तोते पूछ कई तौ कर रह्यो हूँ ।’

‘गाम बारेन न कैस समझायी जाए । वे तौ जा बात प तुल गए हैं, क तौ छोरा बात मान जाए नई तौ गाम म घर अरु हार म खेत तक नई रहन दिगे ।’

‘मया कोऊ बात नाएँ याम घबरावे की का बात है ? यहा नई वजगी ती बाबा नद क बजगी । राम कू बनवास राम कू लाभदायक भयो क नाओ ? हा फिर एरु बेर मैं जोर सिगर सिरदारन के हाथ जोरुगी । पाम पकरुंगी जाग बिनकी मरजी ।’

मया कू समझा बुझाय क चकोर एक पोत गाम बारन कू मनाइवे कू निक्सी । बू जा ठौर गयो बाई ठौर प दुत्कार दियो गयो । काऊ न सीधे म्ही बात नई करी । सबन न गाम ते छिक जावे को डर ही । गाम ते अरु राम ते कौन को बस चल । गाम ते कोऊ रार मोल लनो नाय चाहै । अखीर म चकोर भारी मन त अपनी सी म्हाँ लकी अपने घर लौट आया ।

गाम बारे अब हाथ धाय क चकार क पीछ पड गए । कछू मन चले ना समझ अपनी ना समझी प उतर आए । चकोर की झौपडी प पापर फिकवे लगे । एक दिना एक पत्थर ते नथिया को कपार फूट गयो । बू लहू सा लपपथ है गई । चकोर को क्रोध जगी पर पस नई छाई । यान डीग जाइक मरहम पट्टी कराई पर गाम की एकऊ सग नई लगी । ताने और दिए । बिचारी फूस सी बुढ़िया म वित्तई कित्तक ओ । मुरगी कू तौ तकुआ कोई डाह काफी हाय । बिचारी न घाट पकर लई । चकोर मया की तीमारदारी म लग गयो । राटी पानी घर की पारा बुझारी सब बाए करनी परी । गाम बार फटक तक नई । काऊ न तिनका तक की सहारी नई दियो । जा बुढ़िया कू भावस पूनी सीधे दओ करत बि न सीधो दओ बन्द कर दियो । महा तब बात रहती तोऊ कोऊ बात नाई । एकदिना वाक धन म जाग लगवा दइ । बुढ़िया न सुनी तौ बाकी हियो भर जायो । फूट फूट क रावे लगी जब बाकी धोर धरया तक नाओ । नथिया न समझ लई क जब गाम नै पाम उखार दिए । चकार मया क दुय सी पिघल गयो । बू

अकेले में रो लेती। बाएँ पत्नी, घर कूँ छाड़िये म मैया दुखी होयगी। चकार के मन म दुखिया जनम लये लगी। एक घोर मैया दूसरी ओर चंदा। मन करो गाम वारेन त माफी माग के गाम वारेन न मना ले। अपनी जाति की छोरी त ब्याह करले खूब दैन गयजो ऊ धावगो, घर बन जाइगी। दूसर छन बाके माथे मे बिजुरी सी कापती। वा म्हों ते चन्दा के पाम जाइगी। बाप अरु वात की ती एकप्री ही वात है। चकोर गहर म हूवतों उतरती।

मया ऊ दुख सों दुखी है के अपने मान गुमान कूँ ताक म रूख के चकोर एव पोत किसार के घर पहुँची। बाते हाथ जोरि क गाम वारन की जीमर्दी की वात कही। घर पे पत्थर फकव अरु खेत म नाग लगाइये की सिकायत करी पर किसोर नै कह दई, मैं का कर सकूँ? गाम वारेन त पस नाय खाय। गाम म रहनी है तो हाची हाजी कहनी परगी।' या वात कूँ चकार ऊ समय रह्यो क गाम अरु राम त बर मोल लक काज न पीरे नाय पहरें। चकोर न तोऊ छमा चाही पर किसोर नै अनमुनी कर दई। याई तरिया चकोर नई मुडडन के पास गयो पर निरासाई हाथ लगी

अखीर म चकोर वहोरी भगत के पाम गयी। वहोरी भगत आध्यात्म कूँ लें वठो बोला— बटा इन्दीन सी वदिक मन है, मन त वडी बुद्धि है, बुद्धि त वडी आत्मा है। पत्तान ते वडी माया ह, सायान सी वदिके पड पड सी वदिके जड है। हम जड कूँ नई भुलानी चरण।"

वहोरी न बाके दुख सों दुखी है क चकोर क मन कूँ तसल्ली दवे कूँ एक वात ओर कही, "या तसार मे तू ई दुखी नाय, चारो ओर दुखियारे है। सवन के माथे प गठरिया धरी हैं। अगर कोऊ आँखिन वारी है ती देख सकें क दूसरन के सिरन प दुख के गूँठर बधे धरे हैं। जिनसों दुख झाँक रहे हैं। भया भार म कहु सीरी नाएँ। इनते परेसान हीनो सुभाबिक है। पर समझदार दुखन सों दुखी है के नीति के पथ कूँ नाय छोडें। जीवन कूँ मन्न काटे पर ग्यानी काटे ग्यानत मूरख काटे रोय। काटनो गानोन कूँ पर। हा बुद्धिमान बुद्धि सी वाम लें अरु वा बुद्धि सी परे आत्मा अरु परमात्मा की ध्यान रख। दुख परवे प बाकी सुमरिन ती सब कर, पर अपने कूँ समरपन हू करे। हाँ दुख परवे पे सुमरन कोऊ काम की नाएँ। दुख परवे पे समरपन को कोऊ मजा नाएँ। सुख के सम सुमरन अरु समरपन को महत्व है। यई हमारी सस्कृति है। तोय मालुम नाएँ, गहा एसी कौन पुन्यात्मा भयो है जाकी महिमा मृगी कूँ दुष्टन की बानी के बानन नै नई भेदो होय।"

वहोरी के लम्बे चौड़े भासन ते चकोर कूँ राहत सी मिली। हा बाएँ सतौस नई मिल पायो। वू अकेली होंतो तो पाँव फटकार के चल दतो पर मैया कूँ कहा छाडती? मैया कूँ गाम वारे दातन के बीच मे जीम की तरियाँ हू तो नाय रहन दे रहे। बाएँ चोरे मे दीख रह्यो क बाकी मया की स्थिति ऐसी है जम अकेली नाहिन सिगरी धोल खेरो। वहोरी नै चकोर कूँ दुख सहन करवे कूँ पक्की कर दियो। दुख मानसन प प्राव

पर मानस न कूँ दुखन सौँ भागनी नई चइए । नूति को पत्नी नई छोडनी चइए । दुख तो मानस न घिस घिस कै मालिग्राम बना द । इन भावन सौँ चकोर कूँ आत्मिक बल मिली । बू हिम्मत बाधि क अपने घर लौटिबे लगी पर घर आते आते रात है गई ।

घर आय के फिर मया की सेवा मे लग गयी । मया कूँ अपने मन को दरद नई बतायो । बू नाय चाह रही क मया कूँ अपने दुख सौँ दुखी करी जाए । मया बेर-बेर कहती क गाम मे रहवीं दुभर है । घर छाडि कै चलबे की बात मया ते कही तो बू रो पडी गली रु घ गयो । नथिया की गाम ते बसो ही लगाव हो जसे मीन को नीर ते मधुमक्खी को छत्ता ते फनी को मनी ते । इन साच विचारन म दानोन की आख लगबे कूँई । तबई घर की छान प भक्काटी सौँ भयो । चकोर कूँ समझब मे देर नई लगी । बान म न सौँ पहलै अपनी मया कूँ गोदी म भरकै झटपट बाहर निकसनी चाही । झोपडी म दम कितेक ही आग नगते ही छान स्वाह है गई । बू मया कूँ लकै दरवज्जे तक आयी तो लपटन नै घेर लियो । बान मया कूँ धरती प रखी । झटपट साकर खोली और एक ही झपटटा मे मया कूँ लकै बाहर निकस गयो । मया भीचक्की सी देखती रह गई । दहाड मारकै रो परी । गाम के तमासगीर जुर आए । काऊ नै नैकऊ दया नई दिखाई ।

चकोर की आखिन म नोध उमड आयी पर विचारो का करती । चकार नै जाग बुझाव कूँ हाथ पाव पीटे । नथिया न रोय रोय क गाम बारेन ते आय बुझाबे की कही पर जाग लगाबे बारे बुझाते चीं ? छान धू धू जरबे लगी, बास चटकबे लगे । नथिया अरु चकोर के हाउन प खटकबे लगी । देखते ही देखते घर को घरआ है गयो ।

बछू दयावत बेपरवानी नथिया के पास आ गई । वे होठन सौँ सहानुभूति के दो बोल बोल रही । नथिया के सग जाँ ब्याह के भाइ बे जरूर दुखी भई । रात गहराबे लगी । एक एक करकै सब कनी काटबे लगे । घर के सामइ परे रह गए । कोर नथिया अरु बहोरी ।

चकार नै निहच कर लियो क दिन निकसते ही बू अपने प्यारे गाम कूँ छाडि क चल दगी । रात भर तीनों अपनी दुखडो रोमते रहे । बिनकी झोपडी रात भर मिलगती रही । बबऊ बबऊ नथिया नै चकोर के ताई कोसा । ता सभै चकोर नै सब अपनी दोस जानि क , चुपचाप सब बात सहन कर लई ।

दिन निकसते ई नथिया के घर के सामई मेला जुर गयो । कछू नथिया के दुख सौँ दुखी हैव पिवले पर मदद करते तो वसो करत । सब गाम ते छिकब की डर ही । सब नमामो देखते रहे । बहोरी न बाई ठौर प छान डरबायबे की साची पर चकोर को मन भर आयी । बान साफ कह दई "अब मैं गाम म नाय रहूंगी । मया कूँ लकै भरतपुर ई रहूंगी ।

या बात कूँ मुनिके कछु व्यग्य कसवे लगे, 'जवई छोरा की बल नाय निकसी जेवरी जर गई है पर ऐंठन नाँय गई।' या समै सूरज पख फैलाय क उडान भर रह्यो तबइ एक डाकिया डींग ते आयी। बाँके चकोर के नाम की लिफाफो गहतायो। चकोर १ लिफाफो धालिक दियो। खुसखबरी निवसी। भरतपुर के कॉलेज म लक्चरार की नौकरी की कागज ही।

या समाचार कूँ पढ़िके चकोर १ अपनी मया के पाम छिए तो मया कछु समझ नई पाई बोली, 'बो मोय छोडि क जा रह्यो है वा?'

नई मया तोय छोडिब क से जाऊँगी। जाऊँगी तो कहा जाऊँगी। मया मेरी नौकरी लगवे का तार आयी है। भरतपुर म मोकूँ लक्चरारी मिल गई है।'

'अरे बेटा जुग जुग जियो मेरे मन की साध पूरी भई। अब मरे पामन न का छीमे। सब गाम वारन के पाम छी।

बा सम जितेक बडे पूढे खडे, बान सबन के पाम छीए। सब पानी-पानी है गए। सबन नै हाठन सो घासीस दियो।

बा समै की नजारी देखब जोग ही। एक ओर सुख दूसरी ओर दुख मया-वटा सुख दुख क झूला म झूल रहे।

चकोर तो भरतपुर चलब कूँ पहल तेई तयार ही अब तो सुआँसर ओर आ गयो। मया ते बोली मया अब यहाँ रुकब म कोऊ सार नाएँ। मोय भरतपुर रहनी ही है। तू अकेली रहेगी तो कहा रहेगी। भगवान नै सुन लई। अब हम दोनो ई भरतपुर रहिगे।

बेटा जसी चाहे बसी ही कर पर भरतपुर कहा चलिग अपनी कीऊ ठौर ठिकानी तो हल नाए।'

मया सब भगवान भली करगी। नौकरी लग गई है। अब ता जहा नौकरी म्हाई अपनी घर।'

पर या घर कूँ छोडि क कैसे चले?'

मया अब घर कहा रह्यो है अब तो ई तो घूरो है गयो।

वटा तू अकेली चलो जा मैं तो एक छपरिया डारिक याई ठौर रह लउंगो।'

मया जब ऐसी नाय है सकै। फिर अब अपनी म्हा रह्यो ही काए। फिर ताय यहा रहन कोन देगी?'

'तू जसी चाहे बसी कर तरौ सुख मेरो सुख है।'

मैया-बेटा बतरामत रहे । गाम बार मुनत रह । कछु गाम वारे या दुख म मान-द क्षत रहे । कछु नथिया की जरी भई भोपड़ी अरु दो बीघे गारन नैहू हबपबे कू तयार बँठे । जिनक मन म दया आई वे गाम के डरते बोलक नई सक ।

धोरी देर म चकोर अपनी मया के न चाहते भए हू बाँए हाथ को सहारो दक होले-होले सडक प ल चलो । नथिया जाँगे जा रही पर मन जरी भई झोपरी म ही फस रह्यो । मुड मुड क वाय देख रही । रो रही । मन म जाग लग रही पर विचारी बिबस ई । सडक प नथिया जरु चकार तमास बन रह । बस क आत ई नथिया भूपाटन ते रो परी । चकोर बाए हाथ पकरि क बठाव लगी नथिया गिर परी । बोली, “बेटा में नाय जाऊँ, गाम कू नाय छाडूँगी । या गाम मे व्याह के आई हू । गाम वारे मोय लक आए हैं । भीर म त आबाज आई, ‘जो लक आए है विनै निकार दई है दूध की माखी की नाई । छारा ठीक कह रह्यो है गाम मे प्रव रह्यो ही काए ।” चकोर मे कही, मया अब इन बातन न रहन द नथिया ने कही, ‘अच्छी गाम वारेन सौँ गलतीन की माफी तो माग लऊँ ।’

चकोर बोलो ‘मया दोसी तू नाए —दोसी मैं हू मैं ही माफी मागूँगी ।’ वाने मया के आसू पीछे । कडकटर त्रिसिल देवे लगी । चकोर नै मया सम्हार के बठारी फिर दोनोन नै हाथ जोर क गाम वारेन सौँ माफी मांगी । कडकटर ड्राईवर जोर सिगरी सवारी कछु समय नई पाए । गाडी चल दई । लाग लुगाई, धीरे धीरे जवन घरन कू लौट परे ।

बधे दोऊ बधन मे

भरतपुर म चकोर अपनी मया कू लकँ चौमुखा महादेव के पास किराए क एक मकान म टिक गयो । बाके पास ना खाइब कू ओ ना पीब कू ना ओढिबे कू औ, ना बिछायब कू । बाके यार राजेन्द्र नै कछू रहब सहब, खाइर पीबे, ओढिबे बिछायबे की परबध कियो । बान तन, मन अरु धन सौँ पूरी मदद करी ।

भरतपुर बालेज म ड्यूटी जाइन करते ई चकोर के हस्ता है गए । बाकी पढाई और व्यवहार सौँ छारा भीत प्रभावित भए । चकोर न अपने साथीन को ह प्यार पायो । थोरे दिनान मइ बाकी धाक जम गई । फूल की सौँ गध फल गई ।

चकार की नौकरी की खबर सुनिब एग मत्री महोदय अपनी बिटिया की सम्बध लकँ आ गए । भाँति भाँति व प्रलोभन दवे लग । चकार न दो टूक मना कर दइ । प्रलोभन के पीछ मत्रीजी न दड-नीति की हू अनुसरण करी, पर चकोर के बान प जूँ तक नई रंगी ।

चन्दा के घरखारेन नै जब सौ चकोर के भरतपुर आइवे की सूचना पाद बिनकू भारी खुशी नई। दूसरी ओर गाम बारन के अत्याचारान कू सुनिक बिनकू भौत दुख भयो। लेक्चरार बनवे प चन्दा की कली कली खिल गई। वू चकोर पू वधाई दवे कालेज पहुँची। चाखे हू वधाई दवे गयो। सग म ब्याह की चरचा हू पर गयो।

चन्दा अरु चकार के अंतरजातीय ब्याह की चरचा भरतपुर क ग्रखबारन म है गइ। एक पच्छ याको समथन कर रह्यो। दूसरी याको विरोध करवे प तुलो। दोनो पच्छन नै अपने-अपने पम्पलेट निकासे।

दखते ही देखते एक नवयुवक मडल तैयार हैगो। चकार की यार याको अध्यच्छ बनो। वान नई विचारधारा क नवयुवकन कू लक अंतरजातीय ब्याह को समयन कियो। नवयुवक मडल ने बाल विवाह, पदा प्रथा बेमेल विवाह जसी सामाजिक कुरीतीन वू दूर करवे के ताइ और घोसना करी। नवयुवक मडल न मोहल्ला मडली बना दई। नवयुवक मडल ने निरनय लियो जो अच्छे कामन म रोडे घटकाबगो तो बाकी नवयुवक मडल घिराव, पथराव अनसन, सत्याग्रह, वहिस्कार जैसे कामन को सहारी लगी नई तो हम सबके हँ सब हमारे है। समाज की दहेज की दुनाली ते पीडित दुखिया आय-जाय क मिलिबे लगे। जस छोटी नदी बडी नदीन म आइक मिले वाके बेग ए वदा दे याही तरियाँ नवयुवक मडल की प्रभाव दिन दूनो रात चौगुनी बढ़वे लगी। नवयुवक मडल न ठौर ठौर प सभा करी। रुढिवादी जर मुन के रह गए। बहुमत क आगँ अल्पमत झुक गयो।

आलाचना क यादर हट गए। बाद विवाद मिट गयो। जरजर जीवन, सक्ति रहित पुरानी पीरी पत्ती हरी भरी जीवन सक्तियुल नई पत्तीन क विकास कू कच तब रोवे रहती। पतझर युग परिवतन लाव। चाखे नै सुभ दिन देखि क अपने चार भंयान के सग चकोर के घर आइक चकोर के माथे प तिलक कर दियो। कछू फल मिठाई बाकी गोदी म रख दिए। सकुन के रूप म एक रूपया नट दियो। पडित नै विधि विधान सौ सिगरी काम करायो। हाथो हाथ ब्याह की दिना त कर दियो। होरी की दोज को सामो दाना पच्छन नै स्वीकार करी।

चाखे की बहू राधा तो अब दिन गिनवे लगी। नथिया हू फूली फूली डोल रही। दोना ओर उछाह दिखाइ पर रह्यो। ब्याह त महीना भर पहले पीरी चिट्ठी आ गइ। ब्याह की बिधिवत नौतो आ गयो।

अब नथिया के सामइ देहरी पूजन की बात आइ। चकार न राजद्री की मन सौ एक हडिया म मौती चूर क लड्डू मगवाय क पूजन करा दियो। राजद्री की मन हू खुस है गई। नथिया हू त्रुस है गई। देहरी पूजन वू जो डफोसला बताव सग बिनकू नथिया न समझायो—

‘देहरी म अमुर बाम कर, सबसों पहल विन्ने मनायो जाए जासों मंगल काय निबिघ्न हाय ।’

चकोर नै या बूँ स्त्रीवारो । राजेद्र जा याकूँ व्यथ समझ रखी याकूँ चकोर नै बतायो—“तुलसीदास नै हूँ तो अपनी रामायन म देवतान सों पहल अमुरा की बेंना करी है । फिर हमारी सस्कृति भुलाये रे ताड थोरइ है ।

देहरी पूजन के लड्डुआ घर घर बंट । सवन कूँ मालुम पर गई । नाक भी मिचोरये वारी नाक भीह सिकोरब लगी । कहये लगी ‘वही की इट कहीं कौ रोडो, भानुमती नै कुनवा जोणे ।’ जो भली बयरबानी विन सच प्रवार सों सहयोग दियो ।

लग्न की छेना पांच दिनान की निबसो । इतकूँ चकार 1 सलाह सूत बरक मया के अनुरूप प्रबंध कियो । दूसरी थोर चोखे 1 आसामीन कूँ छटपटायो । कइ आसामी तो अकाल के मार घर छोड गए । कछू मडक डारवे कूँ जात । रोज छोदते, रोज पीते । कछून 1 पट लिखाय के कह डइ क घात बच तौ कछू करें । चाखे आसामीन की हालत कूँ देखि क कह न सकी । जिनत कही, विन्ने टवा सो जवाब द दियो । हार झरुमार क चोखे चुपचाप घर गोट जाओ ।

राधा नै चोखे त करजा लवे की बात कही पर जहा जहा हाथ डारी कोडी पट्ट परी । अखीर म राधा और चाखे 1 त कियो क मकान के पास की 40'' x 60'' की जमीन बेच दइ जाए । भीत मे सामाजिक गिद्ध तो याकी बाट देख रहे । बीच बस्ती म ऐसी प्लाट मिलनी दूभर ही । प्लाट के साम सडक, नल, विजली सब सुविधा हती । प्लाट 10 000/ ते कम की नाओ पर 5 00 1/ ते ज्यादा दवे वारी कोऊ नाओ । सब जान गए गज बावरी होय । अग्ने पीने म थीवनी परगो । जादमी तौ समे देख । समे की लाभ उठावै । सब चोखे कूँ त्रुटिय कूँ मँडरा रह । चोखे कूँ हूँ अपनी विटिया की ब्याह दिखाइ द रह्यो । बूँ मनइ मन कह रह्यो जाए लाख रहै साख ।

चकार कूँ जसोइ या बात की मालुम परी बाप नई रह्यो गयो । बूँ भगो भगो चोखे सों जाइकूँ मिल्यो । बान विनम्रता सी कही, पिताजी प्लाट बेचके ब्याह करवे की सोच रहे ही । घर बरबाद करके ब्याह करीमे ? फिर तो मरे सग ब्याह करब की नतीजा ही का निबमगो ? सब लोग माप थूकिंगे । हमारी करी धरो मटटी म मिल जाइगी । मरी ममब मे पटसान की जरूरत ही काए ? चोखे का उत्तर दतो । बाँ चकोर के आगे प्लाट नाई बेचवे की सौग ध खाई । तब चकोर कूँ स्वात आई ।

चोखे न सौग ध तो खा लई पर लगन म कछु तो भेजनी । चार भयान के ताई घर प खारीमीठी पानी तो पिवानी । दुनिया बसई नाम धर रही अब छोरी कूँ

खाली हाथ भेजबों कहीं लो उचित हौ । का करतौ, अकल कछ काम नाय दै रही ।
अखीर म राधा नै तीन तोला सीनी जो बचाय कै रघु राखौ चाखे के हाथ प धर
दियो । चाखे के मन कूँ राहत मिली । प्यासे कूँ पानी मिल गयो ।

लगन के दिना आगन म चौक पुराय कै चौकी प छोरी कूँ बठाय क पडितजी
ने लगन लिखी । लगन के ताई एक परात, ग्यारह सेर लड्डू बपडा को एक आन कछू
फल फूल रखे गए । बयर वानीन न लगन लिखते समय लगन के गीत गए । अखीर म
आरती भयो बयरवानीन ने आरती हूँ गायो—

‘झारे झमके को बरसनी मेर ’

मुक्लजी नै लगन पढके सुनाइ ।

बयरवानी जब घर चलवे लगी तो बतास बंट । बयरवानी चाखे के घर ते
निक्कसे ही गिरारे म गीत गाती चली—

फिरगी नल मत लगवावे रे फिरगी नल मत लगवाव ।

नल को पानी भीत बुरी मेरी तवियत धवराव ।

सहर के सा गए हलवाई, जी सहर के सो गए हलवाई ।

अब ती मुखडा खोल कलाकद लायो हूँ प्यारी ॥

चकोर के महा सास कूँ लगन पहुँच गई । दरबज्जे पै हरे हरे बन्दरवार लग
गए । आंगन लिपवायो गयो । चौक पुराए गए । सास कूँ हमीदा नै नगाडी अरु बाब
छोरा नै नफीरी बजाइ । नवयुवक मडल नै मिलके सब काम किए । फरस बिछाए
बादनी बिछाई । नधिया पीरी पहरके पास-परीस को बयरवानीन कूँ बुलावे गइ ।
चकोर नै अपनी मया कूँ खुस करवे के ताइ मया के अनुसार सब काम किए । लगन के
लते समय लगन लेवे के गीत गवे, आरती छान भयो । पडितजी न लगन पत्रिया बाचि
क सुनाइ । पास परीसीन कूँ चाय पिवाई । चकोर न लगन को सामान अपनी मया को
गादी मे रखक बाहर सबन कूँ राम राम करी । बडे बूढ़ेन को आसीन लव क ताइ
पाव छिए । सबन ने आसीस को हाथ फेरी । आनन्द क सग लगन को काम सम्पन्न
भयो ।

लगन के पाछ चिटठी लिखी जाए । दूसरे दिना सबसे पहलें मनसजी कूँ
चिटठी लिखी गई । फिर गुरूजी कूँ चिटठी लिखी गइ । ता पाछ सिंगरे तातदार अरु
पिलिव चारेन कूँ चिटठी लिखी गई । नधिया के मन म प्राइ अऊँ गाम क मुड्ड-
मुड्डन कूँ हूँ चिटठी लिखी जाए । चकोर न चिटठी लिखियो तो दूर गाम की ओर
पग करके हूँ साबे को नाम सोचो । पर मया तो या विचारधारा को क बटयो तो
मनन को चाहे वर चो ना होय । यामों चकार नै अऊँ गाम बारन कूँ चिट्ठी
लिखी ।

नथिया के मन म बोज़ चोर नाजी बू ता चाहती जो है गई सा है गई । जयऊ गाम वार वात अऊ लोट चलव की वहेँ तौ अऊ लोट जाए, पर गाम वारेन की वीनसी गज परी । जिना घर उजारी वे वाइकू जावे लग । गाम त बहारी जरूर आयी ।

ब्याह के रीति रिवाज नथिया के वह अनुसार है रह । घूरी पूजिवे पे नवयुवक मडल जाना वानी कररे लगी । नथिया न सबन कू समझायी, बेटाओ पुरखान १ घूरी पृजिवी या ई नाय राखी । याव पीछ जीवन दरमन है । घूरी पूजिक ई पाठ मिया ॥ है वं जब तव तौ हस खेल क उमर बिताय दइ । अथ गृहस्थ जीवन म प्रवस करव घूरा जसो बननी है । घूरी जस सब भार ए खेल कूरी करबट, मल मून सबन न सहन कर एसी ई अब सहनसक्ति की पाठ घूरे त सीखनी है ।" नवयुवक मडल १ जीवन की रहस्य समझी तो वात जच गई । चकोर १ हंसत हंसत मया की बात मानी ।

वितकू चन्दा वं घर बिना धन के कोऊ प्रव घ नाय है पाय रह्या ब्याह के समे घर प सुफेदी, रग रोगन हाय हायी, घोडा बट्ट । पर हाय तौ हायकसी? बट्टी का वित्त प चेत । चाखे की तौ अट्टी छाली । इन साच विचारन म चाखे डूव रह्यो । तवइ राजेद्र अपने दो यारन १ लऊ चाखे के पास पहुँची । ब्याह की व्यवस्था करी होयगी ? ई सवाल बिया तौ चोख की चहुरा उतर गयो । मन बठ गयो । राजेद्र भाप गयो गरीबी चारो अर सौ चाँक रही ।

राजेद्र ने समझायी, ब्याह की चिंता कऊ मत करो ब्याह आय समाज मंदिर मे होयगी न तो वर पच्छ की आर सा काऊ ताम क्षाम आवगी, ना कया पच्छ के दरवज्जे प कोऊ धमरगज होयगी । आज तक अपने अपन घरन पे जो चाही सौ करो बल्ल दाना पच्छ जाय समाज मंदिर मे आ जाइगे । ता पाछ सब काम नवयुवक मडल के हाथ म होयगी । घेटी बारे अरु बेटा बारे तौ तमासी दखिग ।" चोखे न ई समाचार सुनी तौ सक्पकावे लगी । बू बिबतब्यबिमूठ है गयो । बाक मन कू राहत तौ मिली पर बिना पइसा धेला कस काम हायगी ? ई समझ म नाय आ रही ।

राजेद्र ने समझायी दोनो तरफ की व्यवस्था आय समाज की आर ते हायगी । आय वालक बालिकान की जसै ब्याह होतौ वाई तरिया ब्याह होयगा । वादक सस्वृति का निर्वाह होयगी । जादस रखनी है । अगड्डा पीचनी है, जासो सब दुख दारिद दूर है जाइग ।" चाखे १ अपनी सत्मति द दई ।

अथ नवयुवक मडल के सदस्य नथिया के पास पहुँचे । बिनी सिगरी वात नथिया कू हू समया दद बिनी हाय धाय क भूमर हा भूमर जाय समाज के मंदिर म पहुँच जानी है । सिगर काम विधि विधान त दूग । नथिया १ हू बिना हुज्जे तुज्ज क नवयुवक मडल की वात मान लई । बू या वात कू जानती क बाके हितसी नवयुवक मडल क ई तौ है । व जो बछू करिगे भलो ई करिगे ।

नवयुवक मडल में दोनो पच्छन कू तयार करक चन की सास लई । बा दिना धूरडी को उत्सव हो । दूसरे दिना दोज कू ब्याह हो । सबन नै मिलिक पहलै धूरडी को उत्सव मनायो । धूल धक्कड सौं हटिके, रग गुलाल सौं खूब होरी खेसी । ब्रज के खूब रसिया गए । ढप ढाल चग लक नवयुवक मडल भरतपुर की गलीन म निवस परी—सब जुर मिलक गा रह—

आज बिरज म होरी रे रसिया
होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया ।
अपने अपने मंदिरवा सो निकसी
कोऊ स्यामल कोऊ गोरी रे रसिया ॥
अवीर गुलाल के थार भरे हैं,
भारत भर भर जोरी रे रसिया ॥
बाजत चग, मृदग ढाल ढप,
ओर नगारे की जोरी रे रसिया ॥
कौन के हाथ पिचकरा सोहै ?
कौन के हाथ कमोरी रे रसिया ?”
स्याम के हाथ पिचकरा सोहै ।
राधा के हाथ कमोरी रे रसिया ॥
चन्द्र सखी कहि वाल कृष्ण छवि,
बिरजीवहु यह जोरी रे रसिया ।”

दुपरी तक सब याही तरियां होरी गामते गामते होरी के रस म डूब गए । सबन के चेहरा रग अरु गुलाल म ऐसे रग गए के पहिचानेवे म हू नाय आ रहे । सभ एक दूसरे के गरे लग रहे । होरी को मिलन, मन के मल कू दूर कर रख्यो । दुपरी तक सब थक के चूर चूर है गए । धीर धीर सब अपने-अपने घरन कू चल दिए ।

साँझ कू फिर सिंगरी नवयुवक मडल जाय समाज के मंदिर म इकठोरी भयो । ब्याह के ताई सबन नै मिलिके अपनी अपनी काम बाटो । एक दल मडग बनावगो । दूसरी दल यन की सामग्री जुटाय क यज्ञ की व्यवस्था करगो । तीसरी दल बठक व्यवस्था सन्हारेगो । चौथी दल जलपान करावगो । सामान की मूची बनाय दई । ब्याह की काम दिन ई दिन मे होयगो ई ऊ निहच कर दियो । या काम के बटवारे के पाछ सब अपने अपने काम म लग गए । सबन सौ तालमेल के ताई राजेद्र त वियो गयो ।

दूसरे दिना नवयुवक मडल न बाय समाज मंदिर कू झार बुहार क घोय पीछि क बिना तामझाम के सजा मंवार दियो । दोना पच्छ हाय घोय क आय समाज म आ गए । आय समाज के एक ओर के कमरान म बटी बारा पच्छ ठहर गयो दूसरी ओर वेटा वारी पच्छ ।

चन्दा की सहेलीन ने चन्दा को खूब अच्छी तरियाँ सजायीं। बिना चमक दमक के सादा कपडान में ही चन्दा, चन्दा की नाइ दिप रही। बिना कोऊ आडम्बर के चकार के मिश्रण इकट्ठे भए। भरतपुर के समाज सबके, समाज सुधारक चारा ओर ते एसी खिंचे चल आए जस फूल पे नीरा चले जाव। जसी पोछर में गाम को पानी चली आव। मास्टर आदित्यद्र, राज बहादुर जुगलकिसोर चतुर्धरी, किसनलाल जासी, प रामकिसन मुकुट बिहारी लाल गोयल हरीसिंह बकील, हातीलाल पारासर जस नव-युवक अपनी समथन और जासीरवाद देव के ताई इकठारे है गए।

आय समाज के साधुगन ऊ अपने भगवा बस्त्रन में एक ओर आलथी पालथी मारके मोभायमान है रहे। सिनसिनी के पंडित लक्ष्मीराम ने सुन्दर वेदी की रचना करी। चारो ओर हरदी, गुलाल, महदी आटी और कई रंगन की अल्पना माड़ी गई। वेदी के चारा ओर सुन्दर मंडप बनायो। केरा के पत्ता चारा कोनेन में लहरा रहे। वेदी के चारा ओर पत्तरन में सामग्री सजा दी गई। एक ओर घ्यो को पात्र रखी गयो, जामे झुवा परी। ब्याह के ताई सिंगरी तयारी है गई। भारतीय सस्कृति की झलक सवन के आखिन में सामई है गई।

ब्याह की सही लगन में एक ओर सी हल्की चम्पई रंगीन सादा धावती में चन्दा जाई अरु दूसरी ओर सी सफेद खानी की धोती कुरता अरु जाकेट में सजी सबरी सहज भाषे सी चकोर आयी। दानान में मंडप के नीचे ठाड़े ठेक भारतीय परम्परा के अनुष्ण सवन को करजाई के प्रनाम कियो। सवन में अभिवादन स्वीकारो। ता समें गोपाल गढ़ के रहवे वार मदनजी ने एक मधुर गीत हारमोनियम में सुनायो। बोल हे—
'मने बरदार सजाए।' या गीत सी बर पच्छ को स्वागत कियो गयो। ता पाछ रामायन की बिन चौपाइन को सस्वर पाठ कियो गयो जिनमें सीताजी रामचन्द्र जी को माला पहिराव। बिन चौपाईन के संग ई चन्दा को चकोर के गरे में बरमाला डारी। बू मन की माला तो पहलै ही डार चुकी। याही भाति चकोर ने सालीनता से सहज भाव से चन्दा के गरे में पुष्पहार पहिरायो। चारो ओर सी फूलन की दर्पा भई। लोग लुगाइन न चन्दा अरु चकोर की बरमाला को ई सरूप देखो तो त करी याही तरिया हम अपने छोरी छोरान की बरमाला को आयाजन करिगे।

बरमाला के पाछे चन्दा अरु चकोर यन में बठे। पंडित जी ने आय पढ़ति से यज्ञ करात भाग ब्याह सम्पन्न करायो। यन की सुगंध से सिंगरी बातावरण सुवासित है गयो। जगरबत्तीन की गंध से वायुमंडल महक उठी। कन्यादान करवे वारेन में चन्दादान करी।

समाज सुधारक ने अपने अपने विचार प्रकट करे। एक जने ने बाल विवाह के दोस गिनाए। बाल विवाह से बच्चान को स्वास्थ्य बिगरे जाए, मानसिक बिबाध नई है पाव। ना पढ पाव ना लिख पाव। बीमारी के मारे, दुखी भए जीवन गुजार। बाल विवाह के कारन विधवा है जाए तो जीवन और भार सरूप है जाए।

बाल विवाह के पाछ दूसरे ने समाज की दूसरी बुराई पे प्रकाश डारी। एक बहू के हाते भर दूसरी ब्याह करल। बछू उजागर मे कर कछू चुप्पचाप करे जब बात खुल तो लंबे के दब पर जाए। एक के हात भए दूसरे से ब्याह करबो एक के माथे के सिंदूर से खिलवार करबो है। जिन दो दो ब्याह किए विन्ने अखीर म नरक ही भागो।

समाज के तीसरे कोड दहेज प कई लागन ने धोय धोय क ऊजरी करी। विन्ने उदाहरन दे दक आए दिना स्टोव फटवे, आग लगवे की बात कही। आए दिना गर म फदा डारिक, जहर खाइके मरवे की बात कही। दहेज के कोड कू दूर करवे कू नवयुवकन कू जागे आइक दहेज के भूत भगाइवे के ताई चकोर के आदस कू अपनाइक उदाहरन दवे की बात कही।

याही तरिया सती की प्रथा, अमिच्छा परिवार नियोजन, स्त्री समानता कारज, विधवा विवाह प हू विचार प्रकट किए। ता पाछ स्वल्पाहार भयो। दिन ई दिन मे ब्याह की सिगरी काम काज है गयो। ना तासे ना बाजे ना रोसनी ना आतिसबाजी ना झाय झाय ना झिक झिक ना चाय चाय ना चिक्चिक। सूत से कत गयो। सीक से छडी रही। न चै झे झे की कोई काम नाओ। सानद ब्याह भयो। ब्याह के गुन गाते गात सब अपने अपने घरन कू चले गए। आलाचना करवे वारे हू मान गए। साच कू आच कहाँ।

चोखे ने जब अपनी बिटिया कू विदा कियो तो हिचकी भर भर के रोवे लगी। मैया दादी न्यारी रोवे लगी। विन्ने रोमत देखके अच्छे अच्छेन के हिया भर आए। चोखे ने विदा के समय बिटिया के सिर प सनेह की हाथ फरो। दो बोल सीख के कहे। दादी ठेऊ रुंधे कठ से कही, घर की नाम कती बेटी कर क रोटी। चोखे की आखिन से लग रह्यो के वे मौन है क बिटिया से छमा चाह रहे होय, 'बिटिया हमने फटे पुराने जो कपडा पहराए से तुमने पहर, जो मोटी झोटी खाइवे कू दियो से खायो पर कबळ उराहनो नाय दियो। जो सेवा करी वाकी बदला चुकायो नाय जा सक। हमने जब आधी आधी रात कू पानी मागो तब पानी दियो। बीमारी के सम, रात रात जाग क सेवा करी। हमन कस्ट ई कस्ट दिए जब जाते समे छमा करती जा अपनी मया कू धीरज बंधाती जा।' मुपरित है क चोखे बोलो बटी अपनी सास कू अपनी मया से बढके समझियो, अपने पति कू देवता मानियो। वा सम सब रोती छाडि क चदा चल दइ। सबन की आखन मे आसू छलकते रह गए।

नथिया न चदा कू बडे चाव से विधि विधान से, सोन विचार के घर क नीतर लवे की गीत गायो--

लोग महाजन या कहें
या कृष्ण का ब्याह न होय

इनई मौहल्ला के देखते
 इनई लोगन के दखत
 लायी है व्हू है विवाह ।

दरवज्जे प सांत कांसी की थारी एक बे पीछे एक रखी । बिनभ पेडा वीर
 पइमा धरे । चदार थारीन ते छटी छुवाय के आग बढ़तो रह्यो चदा पीछ त सिर प
 जल भरी पीपर को डार परी गागर कूँ लक एक-एक थारी उठातो रही फिर साता
 थारी न लक भीतर घर म घुसिक देवतान के आगे थारीन नै घर क बठे । वयरन न
 घेर गढी गई ।

घेर गढी भाइ घेर गढी ।
 सामू छोटी व्हू बढी ।
 जितन सामू पानी जाए ।
 बितनै व्हू गिदौरा खाए ।

सवन न नयिया के भाग सराह । घर म चदा सी व्हू आई है । सवन न ई
 ऊ बही पूआ ना पापरी, गद्द व्हू आ परी । हद गी न फिटवरी, रग चोखो ही आ
 गयो ।

बज्रपात

चण चबोर के घर म लच्छमी बनके आई । घर म नौ निधि वरु बारह
 सिद्धि है गई । चण घर चकौर चर्चा करत, बाघा तो आई पर माँचा प्रेम, सही
 मस्गार, सही वाम नाग्य घर ईसुर की किरपा त मजिल मिलई गई । नयिया हू बटुआ
 म म्ही की मुघर सलीनी व्हू कूँ पायक सब दुय दरदन कू भूल गइ ।

चबोर नवचरार तो बन गयो पर बाकी ध्यान सदा पढ़ब यढ़बे म ई सगो
 रहतो । पोरे दिना पाछ बाने आर त एग नी परीछा रई । बाऊ म बाए सपनता
 मिनी फिर तो बू बो डी आ बना दियो । सौभाग्य सो बाकी पास्टिंग डीम माहि दे
 गयो ।

डोग व जिल म गुगान राजान क महन है । जब आमन-मामन उहाई उठी
 थारी तब व महन किल म बनाए जान । तामम म सुरछा व ताई व बडे उगयो
 है । जात्रकल गो इनकी काई पूछ नाय रही पर महन ता महनई होय । बिन महसन
 माहि पपायन मनिनि की जायिम अरु उपर क हिम्मा म बी डी आ अरु दूगर
 बनचारीन की घावाग हो । चकार बी डी आ है के चण अरु भपनी मैया क मग

पचायत समिति के ऊपर के हिस्सा म रहब लग गयी । चकोर कूँ सब सुविधा मिल गई वगला की ठौर बगला, जीप की ठौर जीप नौकरन की जगह नौकर । सब आनन्द है गए । चतुर लोग वही करे अखिल सुख निरोगी काया, दूजे सुख घर मे होय माया, तीजे सुख पतिव्रता नारी, चौथे सुख मुत जाजाकारी । नथिया अपनी भाग सराहवे लगी । चकार की पद बढो, बतन बढो और वढ गथो यम ।

पचायत समिति म चकोर क रहन सहन, काय व्योहार कूँ देखिक सच लाग दानन तर अ गुरी दवावे लग । भारतीय पोसाक, सादा रहन सहन सबसो प्यार सो मिनिवो, सब के काम बूँ हाथा हाथ करवो, ईमानदारी सो रहिवो खूब ई भाती । पच्छ बारे प्रमत्ता करते । दुस्ट सुभाव बारे ईस्याँ करते । चारो ओर चकोर की डका पुज गयी । सब लाग कहवे लगे 'ना तो ऐसी बी डी ओ आयी अरु ना ऐसी भावे ।' हा, जा दिना चकोर की डी ओ बनक आयी अऊ गाम म हुई मच गई । लोगन के मन म भय छा गयो । अऊ बारे भाति भाति की आसका करवे लगे । कछू कहवे लगे चकोर गाम ते बदली लक रहैगो । कछू । कही कुचली भयो स्थाप है । कछून नै वही मैया के वर ए छर छर नै लेगो । भाति भाति क लोग भाति भाति की बात—“जसी जाकी युडि है तसी वहे बनाय ।’

कछू अपनी बरनी पर पछतावे लग । कछू चकोर के सामई जाइवे ते बनराव लगे । जात तो का म्हीँ ते जात ? पद प्रतस्था तो पामन नै आगे बढातो पर उनको करनी उनके पामन नै पीछ ढकेलतो । कछू सामई गए ऊ तो आँख मिलाइवे म सरभावे लगे । कछू भय शिक्षक अरु सकोच कूँ छाडि कूँ मिलेऊ तो म्हीँ दोलिवे को साहस नई कर सके । तोऊ चकोर नै गाम बारेन को काम रोकौ नइ । सच्चाइ सो, ईमानदारी सो कतव्य परायणता सो बदले की भावना कूँ भुलायव, ताही छन वियो । गाम बारेन नै गाम जाइव मन भरक शिक्षक चकोर की बडाई करी—“ई बात सचि है—बडे बडाई ना कर बडो ना बाले बोल ।” बहोरी नै कही, 'भैयाओ चकोर तो पढ़ी लिखी ही नाएँ, उदार हिए की है । फिर अपनी है । बाते काइकी शिक्षक बात काइकी डर । सज्जन लोग नकी बर अर कुए म डार पथ को अनुसरन कर । भल लाग हिमा कूँ जहिसा सो दूर कर । कीचड कूँ साफ पानी सो साफ करे । चकोर आदमी कूँ नई आदमी की नीयत कूँ बुरी बताव । बाकी सिद्धांत ता वृच्छन को सो है—इतते वे पाहन ही उतते ब फल देत ।’

बहोरी नै लोगन कूँ मुक्तेरी समझायो पर जिनक मन म चार बडो भयो बूँ कही निकसतो जिनीँ बाकी शोपडी म जाग लगाई, जिनीँ बाकी शोपडी म पत्थर फर वे डर अर लाज के मार मरे जा रहे । अपनी करनी प वे अपन आप गडे जा रहे । पर 'अब पछताए होत का जब चिडिवा चुग गई खेत ।’ सब कानाफूसी करते 'यार हम नै अपने पामन म आप कुल्हाडी भारी है । अब तो जसी करनी वसी भरनी है ।

मन की बात तो मन तक पहुँच । अऊ गाम बारेन की मन की बात चकोर अनुभव कर रह्यो । वाने सब गामन के दौरा किए पर अऊ गाम को दौरा नाय कियो । अऊ म हैंड पम्प लगावे, चकोर नै अपनी औबरसियर भेज दियो । स्कूल को मवन बननी हो तो जूनियर इजिनीयर भेज दियो । और कम्प लगे तो दूसरे अफसर भेज दिए । यासो गाम बारन कू विसवास है गयो क अब अऊ गाम की भलो नाएँ । गाम बारे गाम के विकास के ताई चकोर सो का म्ही ते कहते ? वे समझ ही नाय पा रहे ।

एक दिना सिगरे जुरि मिलिक बहोरी के पास गए अरु कही भया अब या गाम की लाज तिहारे हाथ है । जो कछू होनी ही, सो तो है गई पर जब अपनी ई बी डी ओ आ गयो है तो गाम की तरक्की हीनी चइए ।”

बहोरी बोली, “भया मीते का चाहो ?”

परमाल नै कही ‘ बहोरी तू सब समथ रह्यो है । भाई गाम ते पाप बन गयो है यावो प्रायस्चित्त कसै होय ?’

बहोरी बोली ‘ भाई सब जुरि मिलिक चली । काहिली-माकूली है जाइगी । मैं कह रह्यो हू बू अपने मन म मल नांय रखगो । पाप तो है गयो पर पाप कितेकऊ बडो चीं न होय बाकी प्रायस्चित्त तो है सक । पर ई तन ते नई मन ते हीनी चइए ।

क्सोर बोली भाई बहोरी, चकोर मन म मल नई रखतो तो अऊ गाम को दौरा करवे जरूर जातो ।’

बहोरी बोली ‘ भाई ! कस आतो ? बाके मन म ऊ तो सकोच है, पर तुमम ते कोऊ बाए बुलावे गयो बा ? बाके जातेई बाकी चौपडी प ऊपरा थापवे लग गए । बाके दो बीधा झारऊ दूसरेन नै जोत डारे । काऊ न जायकै वात बछू कही का ? काऊ न जायकै बू मनायो का ? बाके पाम पर तो गाम म बा जाधार प पर । गाम म बाकी धरोई का है ? तुम करेजा प हाथ धरकै देखो, तुम्हारे सग ऐसी बीतती तो तुम का करते ? खर, जो कछू भई सो भई, पर अब सब जुर मिलिक चल । अपने गाम की तरक्की के बाजे कहैं तो बू पीछ नई रहैगी ।

भाई बहोरी कछू होय । बाके कामन नै ही हमारे मन को मल धो दियो है । हम बाके पास जायक रहिगे । बाके पाम परिगे हाथ जोरिगे ठोडी म हाथ डारिगे कहिगे, क तू तो हमारो अ ग है या भाति बाए कसऊँ एक बेर यहाँ लाइक जरूर रहिगे ।” परमाल नै कही ।

बहोरी की बात कूँ मान कें मवन चकोर व पास डीग जाइवे को निहच कियो । सिगरो गाम ता डीग जाय नाय सकेसो । थोक मन एक एक चुनक उहोरी न मग चल निए । मजन न चदार व पर प मिलिबोई उचिन ममयो ।

अऊ बारे डीग किले माहि घुसक पचायत समिति वे दफतर तक तो पहुँच गए पर अब पीछे कूँ खिसकव लगे । अगडडी कौन यँच ? सवुचा सवुची पहली मजिल तक चढ गए । धीरे धीरे खिसकते खिसकते दूसरी मजिल प पहुँच गए लम्ब चीडे कमरान के दरवज्जेन प चिक परी । ता समै सबक तन-मन की दसा सुतामा की सी है रही जा दारिका म पहुँच के सवुचा रह्यो । बाहर चपरामी बठी । कडक के बोली । सब रुक गए । सबके सब सुट्ट । सबके छक्क छूट गए । पाँम म्हाई की म्हाई चिपव गए । माना 1.4 की धारा लगा दई होय । बहोरी न आगँ बढके चपरामी सा कही, लाला बी डी ओ साहब ते बह द अऊ गाम बारे मिलिव आए हैं । बछू जरज करनी है ।'

चपरामी नै जाइके भीतर खबर करी चकोर अखवार पढ रह्यो । अऊ बारेन को नाम सुनतेई वानँ अखवार एक आर फको । नग पामन भगो भगो बाई तरिया बाहर आयो जस वृष्ण सुदामा सी मिलिबे धायो । सबन कू राम राम करी सबन क पाँम छीए । बडे आदर क सग भीतर अपने कमरा म लिवाय के ल गयो । लोग भीतर घुसव म क्षियकवे लगे तो चकोर बोली, 'भयाओ जिझकौ मत चकार या सभ बी डी ओ नाएँ, एक मांस है । मान्स ते मान्स की कमी जिझक । मैं हूँ तो आपम ते एक हूँ ।

भीतर जब कछू फस प बठवे लग तो हाथ पकर-पकर के सबन कू मोफा सट अरु मूढान प बैठायो । नथिया न देखो तो दोरी दोरी आई बहू कूँ लिवाय क लाई । बहू त कही, 'बहू ये सब हमारे गाम के हैं सबन की जासीस लै ।' चंदा ने सबन क पाम छिए । सबन नै आसीस दियो । चकोर नै चंदा सौँ कलेऊ लाइवे की कही । चपा न उलायते उलायते हलुआ बनायो । अऊ गाम बारेन को धीर धीर सरोच दूर भया । वे चकार के ब्योहार ते गदगद है गए । ऐसी लगी मानीं बिनपै घडान पानी पर गयो होय । फाटो तौँ खून नई । किसोर राधे परमाल मूला, चकोर के ठाठ बाः कू देखि के दग रह गए । बढिया पलग साफ सुथरे ऊढैया बिछया बढिया कुसी मेज सजो सजायो कमरा सब गाम बारेन की आखिन मे फव रहे । कमरा म चुप्पी थोरी देर कू छा गई ।

नथिया नै ललक वै सिगरे गाम की राजी खुसी पूछी । अपनी सगबीन की नाम ल लवँ दिनके सुख दुख की पूछी । अपनेन की वाचन म जो सुख होय, जो अपनीन होय बाकी बरनन नाय कियो जाए । अनुभव ही करयो जाए । याही तरियाँ चकोर नऊ गाम के लोग लुगाइन की जानकारी लई । मदिर के पुजारी की बात पूछी । स्कून के हेडमास्टर साहब की पूछी ।

इतेक देर मे चन्दा कलेऊ म हलुआ बनाय क ल आई । हनुआ परोम दियो सिगरे हलुआ खाते रहे भर बतराते रहे । या समै सबकी दमा बसी ही है रही जस वृष्ण के भीन म सुदामा की भई ।

किसोर ने माहस बटोर व कही, 'बी डी ओ साहब हमसो जा भूल है गइ बाका छमा मागवे आए हैं ।'

चकार न तुरत उत्तर दियो पहले भूल भई जानै नाय भई, पर अब अवसि भूल है गई है । मोत बी डी ओ कहक चो मोय लजा रह हो ? मै तो तिहारो बच्चा हू । मोते बी डी ओ कहइ वारी दुनिया भोत है । 'चकार कहक प्यार ते पुकारव वारे ऊ तो चइए' । मोय तो आप अपनी छाटो सो छोरा चकारई समझो । रही बात पाछे की वाम तिहारो कोऊ दोस नाए' । सब समे की बात होय । समे अनुबूल होय तो मट्टी हू सोनी है जाए । 'जब समे लोट तो सोनी हू मटटी है जाए । कवऊ-कवऊ काऊ लहर आव । वुई लहर सवकी बुद्धि कू फेर दे । लहर निक्स जाए तो फिर बात साधारन है जाए ।

परमाल बोली 'भया तुम भलई बछू मत कहो पर गाम ते गलती है गई है । गाम त अनीति है गई है । हमारी दास है । अब तो छिमा करनी होगी । गाम चलनी परंगो ।'

चकोर न हाथ जोरि क कहो 'सिरदारो मोपे पाप मत चढाओ । तुम ते काऊ कावा है कोऊ ताऊ, कोऊ बडी भया है । छिमा जस सबद तिहारे म्ही त साभा नाय दे । तुम मोय परायो मत बनाओ । तिहारो हू तिहारोई रहू गो । मै ता विनम त हू काऊ देस म रहिंगे काऊ जस म रहिंगे तोऊ राबरे कहाइगे ।'

राधे ने कही भया तू अपनी है याही सो तो घर आए हैं । सुख दुख की पूछव आए हैं । तोय गाम लिवाव आए है । तेरे घर ए तेरे खत ए, तोय सम्हारव आए हैं । याक सग सग गाम की बढोतरी क ताई आए ह । तू अपनी है तो गाम की बढोतरी क ताई गल निकास ।

चकार ने उत्तर दियो 'सिरदारो मेरी घर कायको है घर तो गाम कोई है अरु खेत कू जब मै कौन सो करवे जाय रह्यो हू । आप मरो बताय रहे हो । ई तिहारो महानता है । मैंने तिहारो बात मान क इनकू स्वीकार कर लियो है पर अब इन दोनोन कू मै गाम कू राजी राजी सोप रह्यो हू । मरी झोपडी की ठौर प तो बनाओ पुस्तकालय अरु वाचनालय जन की ठौर प बनाओ सकण्डरी स्कूल । गाम की बढोतरी को सुभारम्भ जपन तेई कर रह्यो हू । रही बात सरकार की ओर सो मदद की सो मैं बिसवास दिवाय रहया ह क मै अपनी करनी म कोऊ कार नसर नाय छाडूगी पर हा काऊ दूसरे के हक ए नइ छीनगो । दूसरे के गरेन न नई वाटगी । ओर सुनी मै अब तक ऊऊ नाय जायो इ भूल मोत जरूर भई है याकी मै छमा चाहू ।

गादी म खिलाए चकार की ऐसी महानता देख आख फटी की फटी रह गई । सब कहव ला धय ह नयिया की कोख कू जान एनी लाल जायो ।

बहारी बोली, भाई अब तौ सबके मन को मेल दूर हे गयो । जा मैंने वही साची निक्सी ।’

सब ने माथे हिलाए बोले, ‘भाई साची वही और जो वही बू साची निक्सी ।’

ता पाछ एक पोत फिर सवन नै नथिया अरु चकोर से छिमा चाही । अपने गाम बुलाइवे की नौती दकै अऊ लौट आए । कहक आए भया कन जरूर अइयो हम गाम बारे मह की नाई बाट देखिग तेरी ।’

‘भाई ई राज जनता को हे अरु जनता जनादन होय तो जनता जनादन की बात कसें टार सकू ? पचन की आग्या सिर माथे । मैं यल जरूर आऊगो ।’

या बात कू सुनिकै, बहारी के सग गाम बारे लौट आए । रस्ता भर चकार के ध्यवहार की चरचा करते रह । सब या बात कू मान गए क फून को मार बड़ी पनी होय ।

दूसरे दिना चकोर वायदे के अनुसार अऊ गाम जाय पहुँचो । गाम ने चकोर को खूब सत्कार कियो । सामियानी तगायो गयो । बदनवार बाधे । झंडी लावाई । बाजे बजवाए । स्कूल के छोरी छोरान ने स्वागत गीत गायो । भासन भए । चकोर की जी भरक बडाई करी । चकोर ने अपने भासन म सवन कू हाथ जोर के कटी, भयाओ जो बछू माय मिल्यो हे, ई सब गाम बारेन की आगीत से फल हे । प्रभु की किरपा हे । मेहनत काऊ की अकारथ नाय जाय । मेहनत से सब बछू पायो जाय मकै । बिना मेहनत हाथ की गस्सा श्ही म नाय जाए । बछू तकदीन की बात कर तबदीर कू बनाइवे बारे तदबीर होय । गाम बारे चाहै तो तदबीर से गाम की वाया पलट कर सक । गाम मे ते सामाजिक कुरीतीन कू दूर करबी नई नई अच्छी बातन कू अच्छी-स्कीमन कू स्वीकार करबी भौत जरूरी हे । जुद मिलिक काम करिग तो गाम उन्नति कर सकंगो । कही हे, ‘जहा सुमति तहें सम्पति नाना ।’ आग्या अरु बिसवास क मग घागे बनिगे तो गाम की विकास अबसि हे सकंगो । भैयाओ ! मेहनत ई भगवान हे ? भाग के भरोसे रहोगे तो समझ लेओ भाग टूट की मिकर हाथ । करम की अरथ भाग नई काम हँ । करम की मतलब हे काम । काम सच्ची देवता हे । या हाथ कर वा हाथ लें । काम को अरथ हे चडै तो चाय प्रेम रम अरु करम ते गिरे तो चपना चूर । काऊ न ई ऊ वही हे—करनी कर तो च्या डर च्या करके के पछताय, वाए पड यमूर क काम वहा त घाय ।’

चकोर ने अपने भासन के अघीर म हाथ जातिके एक निरेश्वर ओर कियो—
‘भयाओ ! मे अपनी पाँपनी की ठोर कू याचनालय अरु पुस्तकालय क ताद अब का

सवल्प कर चुकी ह । दो बीघा जमीन कू भव-डी स्कूल बनाइवें व ताइ रह रह्यो ह । याए गाँव सम्हार अह इनक निर्माण की प्रव-ध कर । मोते तो जो है सकगी सा मै सहायता करगी । अब काट अह पुलन की मारग जापके सामई खुली परी है चलनी हमारे अह तिहार हाय है । एक चात जीर सुनी—सतरज व खल म दोनों ओर क त्रिलारीन कू बगवर के मोहरा मिल पर अपनी चाल ते एक हार अह एव जीते । करनी ते ही जय अह त्रिजय होय ।’

चकार की साँची सारभरी वातन कू मुनिवें गाँव वारेन न भूरि भूरि प्रससा करी । सूब लागी वजाई । सूब जकारे लगाए । चकोर नै जितेक मना करी बितेकई और दून दून है कै जोस लिखायो । गाजे वाजे के सग सिगरे गाम मे है व जतूस निकसवायो । चकोर न गाम वारेन की राजी म अपनी राजी दरसाई । हा वार्न बडेन के पाम छोए वरावरउन कू गरे त लगायो । अपने छोटन कू प्यार उ डेल कै बिनके माथे प हाय फेरी । ना काऊ जाति-पाति को बन्तर दिखायो ना काऊ गरीब ग्रमीर को भेद बरती । सबसी समान भाव सी मिली ।

ठीर ठीर प लाग वाके भाग की सराहना कर रह । एक गरीबनी को छारा जाको बोज धनी धोरी नाओ अपनी महनत ते पुज गयो । अपनी करनी ते बी डी ओ वन गयो । वाक छोरान कू प्रेरना मिली जब पूल छेदे जाए तवई गर को द्वार बन । अच्छ पइसा वारे जो अपन छोरान प पानी की नाई धन बहा रहे वे अपने करमन नै ठोक रहे । अधिकतर गाम क, चकोर के बी डी ओ है जावे त गव की अनुभव कर रहे । वे दूसरे गाम वारेन ते कहवे कू तो है गए क हमारे गाम बी छोरा बी डी ओ है । व याऊ सोच ए मोच रहे क डू कछू न कछू तो भलो करगीई । गाम वारे अपनी-अपनी तरियाँ सोचत रहे । चकोर सब सी प्यार सी मिलिक सबनते विदा लक डीग कू लोट परयो । सबन के होठन पओ, जननी जन ती भक्त जन क दाता क सूर चकार ने सबन के मन प अपनी करनी को छाप छोडी । पत्थर की लकीर खच दइ । सबन के मन के मेल कू साफ कर दियो ।

सब सी मिल क चकार चल दियो । जीप डीग सडक प चली जा रही । चकोर अपनी जन्मभूमि मे आय कै अपने भयान त मिलक भीत प्रसन ही । बिछुडे मिल गए सबन की सकोच दूर है गयो, आपसी मन मुटाव छट गयो । नीम निमाने धरम ठिकाने आ गयो । डीग मे जीप जैस ही घुमी, दूसरी ओर ते आते भए टुक सी जीप को टक्कर है गई । टक्कर भयकर भई । डाईवर अह चकोर दोना गम्भीर रूप ते धायल है गए । दुघटना की चरचा हवा म तर गई । चारा ओर हाहाकार मच गयो । पूरी डीग अस्पताल म उमड आइ । चकोर ने घर किले मे खबर भेजी तो मालूम परी क चन्दा के छोरा भयो है । नयिया कू खबर दई ता समे नयिया की गोद म नाती आ चुकी । डू नानी कू दखि क सिहा रही । जस ई ऐक्सीडेंट की सुनी भागी छुटी सीजी

दौड़ी करक जस-तस रोमती फिकामती अस्पताल आई। चकोर अचेत लहू मे लयपथ हे रह्यो। नथिया प नई देखी गयो पछार घाय के गिर परी। घाय हू अचेत हे गई। डाक्टरन नै देखी चकोर चलो सा चली बुढिया हुआ रही है। डाक्टर न दोनोन कू सम्हारो। चकोर कू आक्सीजन दई जा रही बुढिया कू इन्जक्सन दिए।

डाईवर अरु चकोर कू भरतपुर ले जावे की सोची जा रही। डाक्टरन नै बताई हालत गम्भीर है। मारग मई कछू गडबड हे गई तो बात बिगड जाइगी। डाक्टरन नै दौड धू खूब करी। चोटी की पसीना ऐड़ी तक आ गयो। अच्छी ते अच्छी दवाई दई गई। मान्स टूट पर। काऊ तरिया डाईवर अरु चकोर बचाए जाए। डाक्टरन की महनत सफल होती दिखाई परी जब डाईवर होस म आ गयो पर चकोर नै तो चेतइ नई कियो। धीरे धीरे बाकी नारी कमजोर परती गई। लम्बी लम्बी सास चलब लगी। डाक्टरन कू अच गई अब पछि उडिबे वारो है। बिनकी हालत खराब हैवे लगी। बिनकी आखन म आसू आ गए। चकोर नै तो सिगरे अफसरन की मन जीत राखी। चकोर तो डाक्टरन के गरे कौ हार ही। डाक्टरन की प्यारी, बिनके हाथन म ते देखत-देखते खिसकी जा गयो। डाक्टर देखते रह गए अरु चकोर के प्राण पखेरू उड गए। सब यही कहके रह गए 'टूटी कू बूटी नहीं, नहीं काल कू बंद।

धोगे देर पीछ नथिया होस मे आई तौ फरफरामती भई चकोर कू देखिबे कू लपकी। बाए कौन बताती क अब बाकी छोरा कहा है? बानी आघ पार के देखी, भीड उमड रही है बाकी आँखन म आसू है। बाके कानन म चकोर के नाथ रहब की भनक सी परी। नथिया घाड मारेके रोवे लगी मेरे बेटा ए माय दिघाय तो देखो! मेरे लाल के मोय दरसन तो करा देखो! मेरे छोना कू मीते मिलातो देओ!" पर लाल होती तो बाए मिलाते लाल की तो लास परी पोस्टमाटम हैब के ताई। नथिया रोती रोती उठी चकोर की ओर झपटी। लुगाईन नै बू सम्हारी पर बू तो तडफडा रही लाल ते मिलिब कू। पानी त बाहर निकासी भइ मछरिया की नाई बंचेन ही। जब बू घिसट के चलबे लगी तो सधा शोरी लके बाकू चकोर की लास के सामई डार दियो अरु वही, दख याकी दवाई हे रही है।

नथिया कू तसल्ली सो भई वाली 'डाक्टर भवामी याए बचाओ। जो कछू खच होयगो बाप में दउगी। मैं महनत करोगी, मजुरी करोगी पर एब एक पइसा चुकाऊगी। काऊ तरियाँ मेरे बेटा कू बचाओ! मेरे लाल कू बचाओ!!'

बुढिया त बात ए अब तक छुपाते। छुपाते भए हू बात मानुम पर गई। फिर काई नथिया अपन बेटा की लास त लिपट गई। बाकू म्ही प म्ही घरन पुकारबे लगी हाथ मेरे लाल! हाथ मेरे छोना!! माय छाडके बहा चल दियो? वारी देर म बू अचत है गई। हाट फल सो हे गयो बानी घाय ठहर गई। अपनी गोनी म चिलाए लाल कू

अपनी गोपी म लकं सो गई । विपत्ति पं जीर विपत्ति । मैया बेटा एक सग चल दिए रह गई चंदा एक दिना के मास के लोधरा कू लकं ।

चंदा त चकोर के ऐन्सीडेंट हैवे की बात छुपाई जा रही । वू जरूर सोच रही डीग ते अऊ तीन मील है । फिर जीप त आइवे म पाच मिनट लगै क दस मिनट । का रात हुई ? छोरा हैवे की बात पहुँच गई होगी ? अब तक कस नई आए ? चंदा कू अब अपनी सास हू दिखाई नाँय पर रही । पडौस की बयरवानीन नै चन्दा कू सम्हार राखी । चकोर आताई होगी । नधिया के बाहर जाइवे की बहानी बनाय क चंदा कू तमल्ली देती रही ।

चंदा मन मे पछतायी कर रही वे इतेक निरदयी कसै है गए ? अपने छोरा क जनम की बात मुनिकऊ नई जा सके । जापे वे समै ना जानै का का चीजन की जरूरत परै या बात कौऊ ध्यान नइ दियो । चन्दा अपने मन म परेखी करती रही । कब तक वू जेई सोचती रहती ? भीत देर तक जब सास नई दिखाइ परी तो वू बयरवानी प चला परी—‘ मरी सास कू बुलाजी । बिनते मिलाओ ।’ जब कोऊ तसल्ली की सी बात हाथ नई लगी तो चंदा समझ गई दार मे कछू कारी है । अब चंदा की आखिन म ते आसू ढरकवे लगे । चन्दा बड़बडाती रही । बाए सम्हारवे वारी सब महन करती रही । समझाती रही ‘अरी बच्ची आख हैं राबे मत जाति चली जाइगी या मास क लाथरा कू सम्हार । सब ठीक हैं । ब्रितकू चकोर की पोस्टमारटम भयो । नधिया बी अरथी मजी । सग म चकोर की काठी बनी । मैया बेटान की सग सग अरथी निकमी । डीग म का सिगरे जिले म हाहाकार मच गयो ।

रात कू जस ही चंदा के मैया बापन न ई समाचार मुनी वे दोरे दोरे डीग पहुँचे । चकोर अरु नधिया के चल बसवे की बात मुनी तौ पर कटे गिद्ध की भाति गिर परे । अपने सामई अपने ज्वान जमाई की मौत अपनी ज्वान बिटिया के माँग वौ सिद्धर पुछती देख वे फूट पूट के रोवे लगे । बितकू बिटिया जच्चा अरु बच्चा बिल क भीतर पचायत समिति के भीतर परे । वे दाना चंदा के पास पहुँचे । चंदा न बिनकू उदास देखी तो अपनी सास अरु चकोर की बात पूछी । मैया नाप का उत्तर दत । काऊ तरियाँ रात भर तसल्ली दक बहाने बनाय क रात निकासी पर भोर हीत ही चंदा न अपनी मान अरु चकोर की रट लगा दइ । अखोर म धीरे-धीरे बात खोलनी ही परी ।

चंदा कू बिसवास ई नाय भयो पर जब असलियत सामने घाई तो चंदा क धीरज की बाध टूट गयो । जच्चा जच्चापन भूलिक घाड मारक रोवे लगी । घर म कुहराम मच गयो । न जान जच्चा कू इतेक बल कहा सी घा गयो व वू बिलाप करती पछाड खावे लगी । विलाप करती रही । मैया बापन नै जितक समझाई बितेवई राबे लगी । बाकू बिलाप कू मुनिकँ अच्छे अच्छे राबे लग गए । कछू बहवे लगे चंदा कू

खशास हू गयी है। चन्दा ए समझावे लगे तू अपने छोरा की तो ध्यान कर, चकोर की धरोहर कू सम्हार क रख पर बाप इन बोलन की कोऊ असर नई परी। बू तो डकरायवे लगी, “अरे ! मीय कौन के सहारे छोड़ गए। अरे ॥ मीय अपने सगई ल जाते। अरे ॥ मीते बछू कट तो जाते।” चन्दा चकोर की ना जानै कितेक बातन की याद करती भई तब तक रोमती रही जत्र तक अचेत नाय है गई, डॉक्टर बुलाय क बातल चढवाई गई तब कहू जान म जान आई।

दूसरे दिना चकोर के यार राजेद्र कू जैमई खबर मिली तो भगी भगी डींग पहुँची। बाकी हाल बेहाल है गयी। फूट फूट के ऐसी रोमी मानो बाकी सगो भया मर गयी होय। बाने चन्दा के आसून कू धामवे के मार अपने आसू धाम लिए। आसून न पीके रह गयी। बू चकोर की बातन नै चकार के कामन नै याद करके अकेले म रा लैतो पर चन्दा के सामई भाँसू रोक क रह्या।

अऊ गाव मे तो और ऊ हाहाकार मच गयी। चकोर की जलसा, चकार की भासन, चकोर की जलूस चकोर की जय जयकार साकार हैके याद आवे लगे। अऊ बारेन नै अपने माये की कलक मानक भारी सोक मनायी। रोटी खावे की वा चलै काऊ के घर चूल्ही तक नई सिलगी। कछू तो अचेत है गए। बछू “होमी बडी बलवान है” कहके रह गए। चकोर के गुनन की बखान हर एक क होठन प होती रह्यो। गाम बारेन के सुपने चक्काचूर है गए। चकोर अऊ गाम कू आदस गाम बनानो चाहे ओ। बाकी इच्छाई क सिगरी गाम साकठर है जाए। सिगरे गाम मे चेतना आ जाए। पर पर भेरे मन कछु और है कर्ता के कछु और’ बारी बात भई।

चन्दा की तो दुनियाई लुट गई। आसा निरासा म, सम्पन्नता विपन्नता म प्रकास अ धकार मे बदल गयी। चन्दा क सामई ता अ धेरो ई अ धेरो टा गयी वही करे उगते सूरज कू सबई नमन कर उगते चन्दा क ही सब अध्य चढावे। सब जन बसती के ही गीत गावे जरत भए दिवरा प प्रान चढाव। हर एक की नयनन की चबर ब्याहुती पै ही दुरे। हर एक महल अरु मीनारन कू ही ललचावे। फलते फूलत पीधान मई सब पानी दे। अग्नि कू ई सब हवन करे। बहवे की मतलब ई ए क बनी बनी व सब साथी है जाए। बिगडी हस्ती की दुनिया म काऊ सगाती नाय होय। मोई बात चन्दा के सग भई।

चन्दा बिना चकार क बीच भवर माहि रह गई। यो कही चन्दा प भावस टा गयी। बाकी सरवस लुट गयी। बाए तसल्ली दिवावे बारे आते रहे। कछू ऊपरले मन त अपनीपन निभात रह। कौऊ चकोर क गुनन की बखान करती चकोर मानस नाही देवता ही कौऊ चन्दा ते चकोर की धरोहर कू पालन करवे की बहती। काऊ न

सग्भार सौं मदद दिवाइव कू धीरज बंधायो । काऊ न चदा की नोकरी लगाइवे के ताई वही । चदा न सवन के सातरे व बोल सुने पर जाने सातर क बोल निभा पाव । ताते धावन जो कछू है जाए सो है जाए । पीछ तौ पीछई होय । चदा न सवन की सीख सुनी । सवन की बानन कू सिरमाथे चढायो जिन जिनन सहानुभूति दिखई तिनके ताई आभार प्रकट करयो ।

चदा के मैया बाप अपनी बिटिया के टानी दक परे रहे । वे ऊ भीतरइ भीतर रो लैते, जाते चन्दा कू मालूम नई परे । वे सोचले चदा के भाग मे का लिखी है । लाड चाव म परी पर ब्याह के समय कगानी रही ब्याह पाछे बाकी भाग जगै पर भाग के चमकते ही बजपात है गयो । बिनके सामई छोरो विधवा है गई । विधवा की जीवन का होय ? समाज मे विधवा का तरिया देखी जाए ? बि नै याकी खूब अनुभव ही जवानी म विधवापन कितेक दुखदायी होय । याकी अनुभव तो बूझ कर सक जाकी विवाइ फटी हाय । अब चदा की नया कसे पार लगगी ? गाडी कम आगे ढरकगी या मोच फिकर मे बिनकी भूख, प्यास, नीद सब उड गई ।

अऊ मे चकोर की ठोर ठोर के चरचा भई । बाक गुनन कू गात गात अऊ वारे अघाते नाय । चकोर न अपने सद्व्यवहार सौ सवन की मन जीत लियो । जा चकोर कू गाम बारेन सौ बदली लने चइएओ बान बिनका सत्कार कियो । सम की फर बताय के सबके मन की मैल दूर कियो । गाम के ताइ नई नई योजना बनाई । सब सोचिबे लगे, अब बाकी विधवा के ताई गाम कू कछू करनी चइए ।

गाम बारेन नै तै कियो, चदा कू अऊ लायी जाए । बाकी मकान सब गम् वार मिलक बनाव । बाक खेत कू बाकू सोप । वे अपने प्रस्ताव कू लक चला के पास पहुँचे । चन्दा न सवन की सुनी तौ भभक के रोय परी । बान अऊ चलबे की बात तौ स्वीकारी पर जो कछु बाकी पति कह गयो जाकी दान कर गयो बाए कसे अ गज लती बाके कह भए बचनन न कसे मेट दती । बाने हाथ जारि क गाम वारन तौ कही जो सहानुभूति दिखई है बाके ताई मैं सवन की आभारी हू पर जो कछू व गाम बालन कू दान कर गए अब बाप मेरो अधिार नाए । समाज की अधिकार है बाए उल्टी लक मे पाप की भागीरदार नइ बनूगी, बिनकी आत्मा कू कस्ट नाय दउगी । गाम वारन की मोप छत्र छाया बनी रह । गाम बारे मोय अपनी मान इतक मेरो बिनती है । गाम बारे चदा की नीति की बात कू मुनिके चुप्प है गए । भारी मन से वापिस लौट आए ।

चकोर क सिगर त्रियाकम बिधिवत करायक चाखे न बिटिया क सामई पात राखी, बिटिया अब अपन घर लौट चलबे म सार है ।

चन्दा बोली, "अपनी घर तौ अब कह रह्यो ही नाए । जा दिना मेरे पीर

हाथ किए बाहो दिन ते पीहर अपनी घर नाय रह्यो । सातरो ही तो मरो घर बनाय दियो । अब पीहर ए अपनी घर कसै कह दऊँ ।’

या बात ऐ मुनिक चोख अरु राधा कौ गरौ भर आयो । आबन सा जासुन की धार बह निकसी । इतकू चदा की हिचकी बध गई । बा समै तीना अपनी अपनी आखन सी गगा जमुना बहाते रह । एक दूसरे सी लिपट कै राते रहे । नवजात सिमु मूक चितक की नाई दिखाई परी । बू का समयती दुनिया काए, दुनिया म सुख-दुख काएँ । थारी देर तक वे तीना प्राणो बा जालीसान भवन म सुख क सब साधनन के वाच छटपटाते भए कइना भरो विलाप करते रहे । फूलन की जो बातावरन कछ दिना पहल बनी बू सूलन सी ज्यादा पीडा दब लगी । धीरै धीरै एक दूसर क आसून नै पोछते भए सान्त भए । एक गहरी चुप्पी छिन भर कू छा गई । नवजात सिमु नै राय के सवन की घ्यान बढायो ।

धारी देर पीछै चन्दा नै मौन तोरी पिताजी आपन जो बछ्छु बियो मेरे भले क तई बियो अब आप चा दुखी होओ ? मोई कू अपने पायन प ठाडी होनी है मरे मामई कम छेत्र परी है । अब आप अपने घर कू सम्हारो मोय मेरे ऊपर छाडो ।’

‘बेटी तोय बीच भँवरन मे छाडि के हम कहाँ जाएँ ? हमारी बेटी अरु हमारी वेदा जा कछ है सो तू है । बा घर म हम कस रह पाइ गे । हमारी जीवन आधार तू ही तो है । अब हमारे घर म सुख कौ साज नाएँ । पर ई ट पत्थरन कौ घेसुआ तो है । बा घेसुआ प तेरीई तौ अधिकार है । बाए हम कोन कू छारि क जाइ गे ।

चोखे अरु राधा चदा कू सब तरियाँ सी समझायक हार गग, पर राक गरे वात नई उतरी । बू खूब समझ रही चकोर बाए जा घर म छोरि गयो है बा घर म बू ज्यादा दिना नाय रह सकै । पर बाए ई ऊ पतौ क सरकार की ओर त बाए जो महापता मिलेगी बाकी एक कुटिया बनाय कै अपने बंदा कू पारेगी । मरवार चकोर की एवज म बाकू जो छोटी मोटी नौकरी देगी बाम अपनी गुजारी करगी ।

या बीच मे चकोर कौ यार राजेन्द्र अपने कतव्य के निवाह म लग गयो । बा । रोड्बो-फिफायबो छोडिक अपने करबे वार कामन कू सम्हारो । सबसे पहल बाी चोखे की मया अ ची कू सम्हार कै राखो । फूस सी बुढिया अ ची ना नीखतो ना भारती । चोखे अरु राधा अपनी बितिया अरु जमाई सी मिलिब गए हैं या बात कू जरूर जाननी । राजेन्द्र अ ची के पास रह्यो बाकी रोटी पानी कौ जुगाड बढायो । अ ची कू ई बान बताय दइ क चन्दा कै छोरा भयो है । दोनो जन जच्चा अरु बच्चा बू सम्हार रह ह । अ ची मनइ मन मगन है रही पर बाए ई का पतौ क बाकी जवान नातिनी विधवा है गई है ।

राजेन्द्र अची की सार सम्हार तो करई रह्यो, बू जिनापास्त सौं मितिके, ताते-घायन मई चन्दा बू नौवरी ते लगयाइये की जतन कर रह्यो। बू कबळ डीग जाती कबळ भरतपुर आतो। बू एक छिचे मित्र की भूमिका निभा रह्यो। बू जानती जत्र, सौं कागजन की पेटी नाँय भर जाय तब सौं ढोळ बात नाँय जन। अधिनारीन नें चन्दा क प्रमाण पत्रन की बापी चाही तो वे ल जाय केँ सामई धरी। चकोर की मृत्यु की प्रमाण पत्र जब सौं डाक्टरन ते प्रमाणित नद होय तब सौं कौन मानये वारी। इन सब कामन क ताई दोड धूप जरूरी ही। राजेन्द्र नें मौन साधय की नाई सब करकेँ दिघापी। सब कागज जहा केँ तहा पहुँचाए। राजेन्द्र चन्दा बू भाभी व्हकें पुरार ही। बाए भाभी की भावी की चिन्ता ही।

बू चन्दा कू धीरज बँधातो, 'भाभी भया चकोर तो अब आवे त रह्यो। अब तो चकोर की या धरोहर की रच्छा करनी है। याकूँ ऐसी बनानी है जासोँ ई, चकोर सौ दो तिल घागें बढ जाए। सब चकोर केँ दुख ए भून जाएँ।'

चन्दा भावनान म कबलीं बहुती। बाए तो कठोर धरती प उतर केँ जीवन वितानी। दुनियादारी हू निभानी। मया-बाप की भरतपुर चलव की हट बाए नैवहू नाय मुहा रह्यो। बाए पती क कूहू बू मया बाप केँ सग भरतपुर चली गइ तो ग्राफिस बारे जो बाकी नौकरी केँ ताई दौड धूप कर रह हैं बाए छोड दिगे। सब ठडे पर जाइगे। मया बाप की वान पास ठहरवी कबलीं हे सनें। ई विचार चन्दा बूँ सनझोरतो। कबळ बाए अपनी बूढी दादी की याद आती। बू विचारी अपन दिनान न कस फोर रह्यो होगी? दूसरे छिन विचार आतो वावे मया बाप चले गए तो बू अकेली रह जाइगी। अपने अकेले छोना ए लम्बे चौडे भोन म कैसेँ रख पाइगी? भोन की ई ट ई ट टावे कूँ दौरगी। बू अकेली घाड मारकेँ मर जाइगी। बाकी बुद्धि काम नाय द रह्यो। कबहू साचतो आप काज महाकाज, आप मरे स्वग दीघ। मँवर म परे भए पत्ता की भाँति बाकी हालत है रह्यो।

अखीर म बू एक तोर प जाई अपन पिताजी अरु मया म त एक कूँ भरतपुर भेज दे। एक वाके सग रहे, जो बाए सम्हार एक बाकी दादी कूँ सम्हार। मया बाप म कौन बाके पास रहैगी? याहू की त करनी हती। सोच विचार केँ या निरनय प आई क पिताजी दादी बूँ देखें अरु मया बाक छोरा कूँ पार। या बात कूँ मानकेँ चोखे भरतपुर कूँ चल दिशो। राधा चन्दा केँ पास रह गई।

चोखे नें भरतपुर पहुँच क मया सौ राधा क नाय जाइये की कही। अची असमजस म आ गई। सोचिये लगी जब नथिग चन्दा केँ छोरा ए सम्हारवे कूँ है तो राधा की रह गई? चोखे ज ची कूँ कसेँ समझातो। बू भेद ए कब तक छुवातो।

अखीर म कच्ची चिट्ठा खोलतीई परी। अ ची नें सुनी तो मन्न रह गई। बू रोई फिकाइ। रोटी पानी छाड दिए। चोखे न जितेक वाकूँ समझायो बितेकई बू

भभक भभक कं रोई । कई दिना तक बाके धाँसू नाय धमे । बू बिचारी बा करती राज रो लती बरु रोज राकै रह जाती । जाकी फुलवारी बाई के देखते-देखत उजर गई बाप रोवे कं मिवाय जीर कामी ?

राजेद्र दिन की भोजन बरु रात की नीद छाडके चंदा की नौकरी कं लाई जो जान सौं जुटी भयो । बाने भग्नपुर त बागज निकसवाय कं जयपुर भिजवाए । कागज पंखा तौं दिए पर बिनको उत्तर नई आयौ । बाकी समय मे देर तं छाई व जब तक बागज के पीछ नई लगी जाइगो तब तक बां नई खिसक सक । कागज कं पॉम लगाए जाएँ । कागज कं पख लगाए जाएँ । बागजन क पॉम अरु पख लगाइब के तौर तरीकान सौं राजेद्र खूब परिचित ही । कागज के नीच हरे हरे छप भए भारत मरवार के कागज लगाए जाएँ । काऊ बडे आदमी कौ दवाब चिट्ठी त डरवायो जाए, क बाकू लाइकेँ मिफारिस बरवा जाए । कबरु जता कौ जोर हू वाम आ जाए । जमानो सक्ति को रछौ है । हमेसा सक्ति पुजी है । काऊ तरिया की सक्ति होय । बिना सक्ति व काम नाय होय । सक्ति अय की होय, बुद्धि की होय चाहे देह की होय । सदा सौं लाठी वारी भंम ए लै जातो रह्यो है ।

राजेद्र नै अपनी बुद्धि को प्रयाग करौ । अफसरन की चिरोरी करी, मनुहार करी । जहा आँख दिखाब की जहरत परी आँख दिखाई । बाकी पाली भाँति भाँति के लोगन सौं पर्यो । ऐस लोग हू मिले जो बिना छपमान के कागज ए निकास ही नाय सकै बिनके चाहे कोऊ पटटा बठी राड ची न हे जाए बिन अपने टका सौं ही काम है । ऐसे हू लोगन सौं पाली परी जो भए काम म राडा अटकाब । एम लोगन सौं हू मित्रिबो भयो जो भूखे भेडिया की नाई लाल लाल आँख दिखाब । ऐसे हू लाग सामई आए जा हुकम मोर नई फरी फोरें नही । राजेद्र नै सब बछू करौ पर अपने सिद्धान्तन सौं नई गिरा । नौतिवान मानसन कू पग पग प काटे लगै । पँड पँड प पापड बेलने परे । राजेद्र न नब महत कियो पर बाजी जीत कं लौटो ।

चंदा कू पचायत समिति डीग मे ई मामल ऐजुकेसन आफिसर के जादेस जव राजेद्र नै लायक बाके हाथ म दिए तो बाकी आँखिन म आँसू झलक आए । वे आँसू दुख के नाँए एहसान के हे ।

उमग की राग

सम जात नही लागहि बारा की बहावल मदन क संग है । तू वान दूसरी है क बाऊ के दिना हुसी गुमी म आनन फानन सौ बट जाए । बाऊ क दिना रामत रोमते बट । हा बात को पढ़या रुक नाए । चन्दा के दिना बट तिल तिल बरक बट । छती पूनि क तांडि सम क सिवाय और कछु उपाय नाए । सम ही घावन न भरै ।

अब तानू तू एक आलीसान भवन म रह रही पर नए की ओ क जात ही वाए तू भवन खाली करनी परी । रही तो तू बाई भवन म पर पहली मजिल क एक कमरा वार जायास म आनी परी । गनीमत ई रही क बाए म्रपन टाड कहूँ और नई लागन पर ।

या तो चन्दा क जीवन म चरोर क जाए त अधेरी छ गयी पर अपन छोरा की बाए सहारो हो । वू ही बाक जीवन म उजियार नी किरन ही । अधेरी रात कू छाटिय बारी वू ही तो ही । याँ सौ गकी नाम रख लियो दिवाकर । चन्दा क आग दिवाकर क पालन पोसन को जिम्मेवारी ही । राधा बाक संग रहक बाए पारिवो सिखा रही ।

चन्दा कू जब सौ नौकरी मिली तबई सौ दिवाकर की देखभाल राधा प ही रहती । बाक मनमूतन न साफ करती बाए न्हवानी धुवाती सत्तान नै बलती बाकू दूध पिवानी । बाए खिलोनान सौ खिलाती । पर मया तो मैया ही होय । साझ कू चन्दा नौकरी सा बाही तरिया लौटती जस अलब्यार्थ गाय जगत के हरे भरे चारे कू छोडक अपन बछरा के ताई चली आव वाते लिपटब चिपटबे चूमब चाटब कू । दिवाकर ह दारि क बाकी गोष्ठी क ताई तुरानो चन्दा जात ही दिवाकर प नह की बौठार करती । नह की हाथ फेरती । सौ सौ बर चूमती । हँसती हँसाती । दिवाकर क ताई चन्दा हाँ माँ ही चन्दा ही वाप । चन्दा कू दोनो ही रूप धारन करन पर रहे । चन्दा कू दिवाकर ही आमा की केद्र ही । उडते पछी को अडा ही ।

चन्दा नै इ ऊ बात पढ राखी क माँ ही बालक की पहली गुन होय । मार्गी अरु मन्नेवी क जीवन कू चन्दा न पढी । वान ई ऊ पढी क जिवाजी कू शिवाजी बनाव बारी बाकी मा जीजीबाई ही । याही सौ चन्दा न हू नपन बटा कू बनादबे क ताई बमर

कसी । वू याहू बात कू जानती के आरम्भ की बिगरी भई बात बन नाय सके । यासा बाल भगवान की सेवा माहि लगी रहती । विचारी प हतक वाघो ? दिवाकर ई ती बाकी निधि ही । च दा साहस बटार क दिवाकर क विवास म लग गई ।

यो तो चन्दा प कारे बादर आए । बाके जीवन कू ढक लियो पर वान साहस क सामई नई ठहर सके । बाक सरूप वू मिटा नई सक । धीरे धीरे बादर छट गए फिर अमृत की बरसा भई । फिर बगिया म बहार आई । चन्दा न अंमुजन जल सीच सीच प्रेम देल बोई । अपन वेटा कू पालन पासन म लाड लडायो पर मोह नई दरसायो । थोरे दिना पाछे आनन्द फल जाबे नो औसर आगयो ।

राधा न हू दिवाकर क पालन पोसन म पुरी पुरी हाय बँटायो । राधा कबहू भरतपुर चली जाती फिर चन्दा जर दिवाकर कू सम्हार जाती । याही तरियाँ सी समय बीतती रही । दिवाकर तन ते मन त आचरन त माँ क कहे अनुसार सुसाँच म ढरती रह्यो ।

चन्दा अपन पति क मारग प नोकरी कर रही । जस घरेलू जीवन म रुचि लनी बाई तरियाँ नौकरी कू लगन के मग निवाह कर रही । जीवन क शकञ्जोरन नै बाकू सहयोग सहानुभूति प्रेम की पुरी-पुरी पाठ पढा दियो । चन्दा गाम गाम जाती घर घर बयरन सी बने नह नौ बतराती । विनके दुख दरदन कू सुनती । दुखियान क ताई सहानुभूति के दा बाल बोलती । वू जाक पाम बठती वाही की है जाती । गाम की बीरवानी तो बडी भोरी नारी होय । मन ते कोरे कागद हाय । विन जसी पट्टी पढानी चा नौसी ही पट्टी पढ ल । तवई ती वे बहकाए म आ जाएँ । आए दिना मुन अमुक बाबाजी अमुक ठौर प बैपरन न ठग क ल गयो । या बात कू मान क वे नानी हाय । लालची हाय । तवइ ती अपन गहनन न दुगनौ करावबे के ताई उतार क बाबाजी क दे आबे जीर फिर हाय मलती रह जाबे । बैपरवानी म भक्ति होय याही नौ लाभ कपटो तडे मुमटडे उठा जाएँ । चदा न नारी समाज कू भ्रम, अनानता रूढिवादिता लोभ लालच त छुटकारो निबान क ताई गाम गाम म अलख जगायो । गाम गाम म महिला मडन बना दिए । ताक प्रभाव सौ नारी जगत क नई विचारधारा मिली । नई ज्योति जगी ।

चन्दा नै सच्च समाज सबकन क सहयोग सौ घर घर म पढ़ाई की मत्र फूँकी । वान मैया भनन कू समझायो क व पढ गई तो घर कौ घर सुधर जाइयो गाम नगर सुधर जाइग अपने आप देस सुधर जाइगो । वान बतायो के माँ ऐसी साँची है जासो नए बिलौना बन, जिनसो समाज अरु दस बन बिगर । याही सौ चदा न गाम-गाम म प्रौढ विच्छा की पनाइ प्रारम्भ करवाई । जा छोट छोट छोरा दिन माहि पढव नई आ सक ह, विनके ताई सान क पढव नौ प्रवध कियो ।

कचन करत छरी

महिला मडलन की गम गम म धूम मच गई। गाम गाम म महिलान की मडली म बाल विवाह मौसर, दहज जैसी फुरीतीन प चरचा होती। सादा ब्याह अरु सामूहिक ब्याहन क ताई बातावरन तैयार कियो। चंदा सबन क सीमई कहती भगवान नै बेटा कू उमर दई ती सादगी सौ ब्याह करक दियाउ गी। छोट परिवार क ताई उदाहरण द दक समनाती। राम लखन, नगत समुज्ज नौ नए ही पर आज के जमाने म निलरु गाखल, जवाहरलाल नरू कौ उदाहरन दक अपनी कथनी प मोहर लगाती। दानव ज्यादा दब बम हाम। एक ही सूरज त रोसनी हाम। एक ही चंदा जघेरी दूर करे। अनगिन तारेन ते अधियारी नाँय मिटे। सख्य त राम नाँय चन मुनन त राम चल। बढती भद भीड त का का दुस्परिताम भुगतन पर रह है पाहू ए समनाती। चंदा की बानी म कछू ऐसी रस अरु प्रभाव हो क बाकी बातन कू गाम गाम म बडे चाव सौ सुनौ जाती। बाके इमारे प लोगलुगाई भरव मारव कू तयार है जात। न जान बू का जादू सी करती। कथनी अरु करनी के तालमेल सौ बाके कामन न देखिके सब कहते चन्दा दवी है दुर्गा है, अन्नपूर्णा है। बान न जानै कितेक गामन की काया पलट कर दई।

बाहर सौ घर आते ही चन्दा अपने बेटा कू सम्हारती। बाकी पढाई लिखाई की ओर ध्यान देती। दिवाकर कू चंदा घर हू पढाती और विद्यालय माहि नेजती। दिवाकर बुद्धि मे अपने बाप कू गंगी। अपनी क्लास म सबसौ आग रहती। गुरुजी सौ ऐसे-ऐसे प्रस्न पूछती क गुरुजी हू चक्कर म आ जाते। बाप उज्जवल जीवन की कामना करते और कहते, 'होनहार विरवान के होन चीकने पात। विद्यालय मे जब काऊ दिवस मनायी जाती दिवाकर जरूर भाग लैती। कविता पाठ म भापन के अनुरूप हार भाव दिखान्ती। लगती, कोऊ कवि ही बाल रह्यो होय। भासन देव ग वाने अच्छे-अच्छेन के कान काट राने। बाद विवाद म अपने विचारन कौ मडन अरु तकन सौ दूसर के विचारन कौ ऐसी खडन करती क दूसरे कौ म्ही बढ है जाती। लोग बाकी बाह-बाह करते। बाए बुद्धि कौ पूनरा बताते। बडे बूडे कहते है है ती बाई बाप कौ बटा।' याही कारन सौ दिवाकर सिगरे गुरुजीन कौ प्यार पाती, बू अपने बराबर वारेन सौ जादर पाती। सिगरे छोरा बाए भयाजी कहक पुकार है।

जब जब बार्सिक उत्सव मनायी जाती म्हा चंदा हू जाती। अपने दिवाकर कू मच प इनाम पाती देखती ती बाकी मन फूली ना समानती। अपने जाँखन म ब्राँसू भर लाती। मन म साचती कहूँ क हौते ती अपन बटा कू दयि कै निहाल है जात। अपनी देखरख म पढाते ती कछू ते कछू बना देते। कबऊ-कबऊ काली छाया हू सामन आ जाती आसी बाकी रोम रोम काँप उठती।

समय निकसती गयी। जीवन के ऊजरे भविष्य की चाह बाके जीवन रथ कू घर घर चलाती रह्यो। दिवाकर बिना बाप कौ हौ पर अपनी मेहनत अरु सवा सौ बाप वारेन सौ उडक निकसी। जमै बू पढवे लिखिबे म आगँ हौ खेत कूदवे मे हू सिरमौर

ही। फुटबाल टीम में कप्तान बनकर राजस्थान की प्रतिनिधित्व किया। सरकार की ओर सौं बाए खिलाड़ी को वर्जीफा मिलिव लगी। दूसरी ओर अनेक उद्योगपतीन नै बाकू भासिक बजीफाऊ बाध दियो। दिवाकर की नाम अखवारन में छपव लग गयी बाए देखिके चंदा सिहाती रहती अरु अपने भाग्य कू सराहती रहती। बातहू सांची ही-दिवाकर तन ते पुस्ट, मन ते सबल अरु चरिन सौ दूढ ही।

जसे पेड कू तो अपने बिवास ते ई मतलब होय बाए या बात की चिन्ता नाय हाय क कौन फल खायगी? कौन बाकी छाया माहि वैठेगी? कितेक मान्स अरु डोर डगर लाभ उठाइगे? बाते बाए कछू मतलब नाय होय। याही तरियाँ चंदा दिवाकर कू बढोतरी की ओर लै जा रही।

दिवाकर नै अपने बाप की नाई हाई स्कूल की परिच्छा प्रथम पक्ति में सबसेी उपर पास करी। वो सौ बधाई की तार आयी। फोटोग्राफर बाकी इटरव्यू लवे के ताई आ जमे। दिवाकर नै अखवार बारेने के सबालन की जबाब जा तरियाँ दियो बाए मुनिक सब दाँतन तरे ऊँगरिया दवा गए। चंदा के दरवज्जे प बधाई दवे बारेन की भीड लग गई। चंदा न सवन की म्हाँ मीठी करायो। आस-पास सवन कू मिठाई बाटी।

अय दिवाकर कू इजीनियरिंग के ताई डीग सौ बाहर जानी। वानै कंऊ ठौर फारम भरे। सौभाग्य सौ जहा जहा फारम भरे म्हा म्हा ते बाकू बुलावो आ गयी। चंदा नै सिच्छा के अच्छ स्तर कू देखते भए पिलानी ही चुनी। चंदा जापई एडमोसन दिवावे के ताई गई। बान म्हा सिगरे नियमन की जानकारी लई। वातावरण देखी। म्हाँ ते सन्तुस्ट है क आई। चंदा बिन मैयान म सौ नाही जो मोह के बसीभूत हैके अपने छोरी-छोरान न मरी बेंदरिया के बच्चा की नाई छाती सौ लगाए डालै। बिनकी बढोतरी के मारग में रोडा बन जाएँ। विदेसन की बुलावो आव ती या मारै नाय भेजै क का पती सागर में ते लौटिके आवगी क नाएँ। कछू या मारे नाय भजे क कहू म्हाँई नई बस जाए। कहू म्हाँई ब्याह नई करले। कछू सागर पार भेजिबो पाप समझे। चंदा ती समझदार ही। वू ऐसी माता नाही जो सोन के टुकड़ा मो राजी है जाती वू ती सोन कू आभूसन के रूप में देखनी चाहई।

चंदा न राजी राजी दिवाकर कू पिलानी में पढव के ताई भेज दियो। या तरियाँ सौ एक ओर बायी आसगन की नीव प सुख की दीवार उठती गई तो दूसरी ओर दुख की गड्ढा धीर धीर भरव लगी। अब चंदा कहव कूही अनेली रह गई। अब बाके आस पास क रहवैया बाके है चुके। वू हर घर की अग बन चुकी। काऊ के घर कोऊ करनी होती चंदा सबसेी पहल बुलाई जाती। चंदा हू अपना ओर सौ ऐसी निर्वह करती क सय देखते ही रह जाते। ना कोई की सकोच ना सरम। ना कवहू लन बन में पीछ हटती। हर एव की बढोतरी कू देखती तो सिहाती। आग त जाग बढक बधाई देती। जाकू जसी सहायता की जरूरत होती बसी ही करती।

अब च १ ममाज सवा मे और १ ग गद्, अब तक तो दिवाकर को व धन ही । वारी देवभाल क ताई वाए समे दनी परतो पर जा दिना सौ दिवाकर पिलानी गयो वा दिना सौ तो चन्दा कू सेवा करव को घोर घनी मिल गयो । जा समे दिवाकर क ताई जाती सो समाज सेवा म लगती । गाम गाम म जहा छोरी सयानी है रही, गरीबी के भार जिनको व्याह नाय है पा रह्यो परिवार म तासत बढ रही दनिक जीवन गिर रह्यो तनाव बढ रह्यो, दहज विना व्याह की समस्या म्हों फार खडी, म्हा चन्दा न महिला मडल के सहयोग ते घोर उदार दानी लोगन सौ मिलिक आन्स व्याह कराए । बहू अवेले म अरु बहू समूह मे चन्दा न मव सो पहल लछमनजी के मंदिर के पीछ डोग म 2। जोडान की सामूहिक व्याह कराव क आदस उपस्थित करी ।

21 जोडान के दोनो पच्छ डोग की छडेलवाल धमसाल म ठहराए । हर एक सो पांच पांच सो रुपया लिए । 21 बदी बनवाई गयो । वदिक डग सो यन भयो । फेरा परे ता पाछे 21 जोडान कू मच प बठारी । सबकू सामूहिक आसीस दियो । सामाजिक अरु राजनैतिक नेतान सो भासन दिववाए । जा काऊ न सामूहिक विवाह को मरुप दखी ताही न सराहना करी । व्याह क तामझाम सो उकताण भएन कू सामूहिक विवाह खूब भायो । यासौ एक ओर छोरीन को दुख दूर भयो तो दुजी ओर माता पितान को भार हल्का भयो । तीजे नई पीढी कू नई डगर दिखाई । दहज्वारेन की गरदन लटक गई । म्हो प कालिख लग गई ।

याही तरिया चन्दा न बाल विवाह के रोकथाम क ताई काम कियो । जिनको सम्बन्ध तै है गयो बिनसौ मिलिक बिनने समथाय क बिनके गरे बात उतार के बिन बाल-विवाहन कू रोको । जिन बाल विवाहन कू रोको, बिन बाल विवाह करव बारेन के सामई छोट छोटे छोरा-छोरीन कू बढाय क बिनके फोटो खिचवाय क अखबारन म प्रचार प्रसार करायो । सग मे बाल विवाह क दोसन कू हू छपवायो । दुनिया की या तरिया सो चन्दा तै जाख खोल दई ।

गाम गाम म ग्रोसधालय विद्यालय सत्सग भवन बनावायवे क ताई जन सहयोग मो धन उगायवो प्रारम्भ करी । यामे हू चन्दा कू मफलता हाय लगी । बान ई सिद्ध कर दियो के चन्दा दवे के ताई दुनिया तयार रहे । हाँ, एर तो सबक भल को काम होय दूसरे नीयत साफ होय । फिर कोन नट ? कोन पीछ हट ? चन्दा न चन्दा तो इकट्ठो कियो पर हाथ सो नई छुओ । जा गाम म चन्दा इकट्ठो कियो बाई गाम के ईमानदार लोगन की ममिति बनाय क धन बिनकू ई सोध दियो चन्दा न स्वजन पीडित असहाय बूढ सेवा सन्त खालिक तो कमातई कर दियो । जिन घरन म बहू अपन मास समुर कू पीडा द या बेटा भ्रपने मया बापन कू रोटी पानी अब म अखि तरेर बिन घरन के दुखियान कू राहत दिवाई । अनाथ अरु बिकलान कू जीवन निर्माण मस्था खोली जहा पढी और कमाओ । अपने पायन प खडे हीनो सिखायो । दुनिया बहवे लगी राम राज की अब तक मुनी पर चन्दा के कामन न राम राज लायके दिखा नियो ।

बितकूँ पिलानी मे दिवाकर नै दो साल म ही चारा आर अपनी बुद्धि की कीसल दिखायो । फूल की गंध बाँधी नाय जाय सक बू तो फलई फल । बाकी गंध प भौरा मडराबै । तितलीन को जमघट हबै लग । मधुमक्खी छा जाएँ । याही तरिया पिलानी मे दिवाकर को यस चारो ओर तैरबे लगी । कॉलेज के छोरी छोरा प्रोफमर दिवाकर के व्यक्तित्व सौँ प्रभावित भए धिना नई रह सके । खेल के मैदान मे धाक यारी जमाई । फुटबाल की टीम को क्प्टिन बनकै मैसूर खेलवे गयो । अपनी टीम कू जिताय कै लायो । सालाना जलसा मे विडला भयान न हू दिवाकर की खुलकै सराहना करी । अखवारन मे दिवाकर के कामन की खबर जब च'दा सुनती ती मन वासन उछलती । बाके फोटू दखिकै चकोर को स्मरन है आती ।

दिवाकर के वडप्पन के कामन कू दखिकै बाके यारन नै चुनावन के सम बाकू प्रेसीडन्ट के पद प पडो कर दियो । दिवाकर न मुक्तेरी मना करी, पर बाके साथी नई माने । एक न तो यहा लौं कह दई यासौँ व्यक्ति की महिमा नई बढ़गी पद की गौरव बढगी यारन की बात मानकै दिवाकर कू फारम भरनी परी । दिवाकर क वढते भए यम कू देखिक कछू कुढवे लगे । कछू जरबे लग । कछू पजरबे लगे । दिवाकर कू ज्यादातर छोरा चाहे हे पर जिनक मन मे मल ही वे होठन सौ बाह बाह करे हे । पर मन म आह भरकै रह जाते ।

प्रेसीडेन्ट के पद प दिवाकर ने सामई ठाडो हबौ काम रखयो पर पिछली साल की भरत सामई आ ही गयो । देखते ही देखते बू चौडे म आयकै दिवाकर की बुराई करवे लगी । बाम छेन बतावे लगी । अनेकन लौना लगाइवे लगी । बाकी गरीबी की हसी उडावे लगी । बाके कपडा लत्तान प फली कसवे गयो । बाके बाप के ना हबे की कमजोरी बताव लगी । ज्यौँ ज्यौँ भरत बाकी बुराई करती त्यौँ-त्यौँ दिवाकर के समयक और पक्के हबे लगे । भरत नै अपने सगी साथीन कू लकै एक दिना दिवाकर कू बाकू कमराम समाझयो । दिवाकर सा अपनी नाम बापिस लबे क ताई लोभ-लालच हू दिगी पर दिवाकर पै कछू अवर नई परी । वानै इतेक जरूर कही क मोय नाम बापिस लबे म कोऊ उजर नाय पर मेरे समयकन कू आप मना लेओ । मरो ती भार कम है जाइगो ।

ताही सम न जान कहा सौ दिवाकर क समयवन कू सूसर लग गई । वे दल-बल के सग दिवाकर के कमरा म जाधमके । भरत बिनकू देखक हक्की बक्की रह गयो कमरा म गहरी चुप्पी छा गई । दिवाकर ही बोली भैयाओ मेरी बडौ भया मेरे सामई एक प्रस्ताव लक प्रायो है क मैं प्रेसीडन्ट के पद को अपना परचा बापिस ल लऊँ । मैं हू कमवादी पद को लोभी नाऊँ आप जसो चाहो वसो करी ।'

या बात कू सुनिकै सज पुसर पुसर करव लगे । कछू कमरा सौं बाहर निकस गए । भरत सव समझ गयी । वाने दखी सीधी अ गरिया धी नई निकसगो । वान आँख वदली । वान दवे दवे सव्दन म सवकू जतायो व बात नई मानी तो परिनाम भुगतन परिगे । दिवाकर नै भरत सी अनुरोध कियो क वू अपने भयान की अनदेखी नाय कर सकै । फिरऊ और विचार करवे की कही । ता पाछै भरत कमरा म नई रूकी । भरत अरु बाके साथी चलते-चलते ताहन मार गए, ' लालश्री अच्छी तरिया विचार कर लेओ । '

अब कमरा मे दिवाकर के समक ही रह गए बिन साफ-साफ कह दई, नाम वापिस नइ लियो जाइगो । आज के युग म कोऊ अपनी देही के वल प काऊ की आवाज कू नई दबा सक । ' दिवाकर नै एक पोत फिर सबसे भरत की बात मानवे की कही, भयाश्री भरत हू अपनी भया है, पिछली साल सो वू सवा करती आ रह्यो है । बाकू एक पोन और जीसर दियो जाए । बाए एर चरस को अच्छी अनुभव है । '

सिगरे साथीन नै सुनी पर कह दई "रहट्ट उतर चाहै बट्टा नाम वापिस नई लियो जाइगो । कहूँ बिनकू गुडाभिर्दी को ज्यादा घमड है तो सठम साठये ममाचरेत वारी बात होयगी । समयकन की बात सुनिक दिवाकर न भरत कू नाम वापिस लब मे अपनी असमथता की सूचना द दई । भरत या समाचार कू सुनिक आग बबूरा है गयो । बाके मगी साथी ऊटपटाग बकवे लगे ।

नाम वापिस लबे की तिथि निक्सते ई दोना पच्छ अपने अपने प्रचार मे जुट गए । भरत बडे घर को छोरा ही । बाके साथी हू बडे घर के । पिछली बेर भरत पन्सा के बल प ही जीतो । पर बाके ब्योहार सौ सब आती आ गए । भरत फिर बाई इतिहास कू दुहरानो चाह रही । पिछली बेर तो भरत की चढ बनी । नयो चेहरा हो । भाति भाति के वान प्रलोभन दिए । कछू भय मे आ गए । कछू कन्नी काट गए । पर एक साल के कामन नै भरत की मिगरी पोल खोल दई । काठ की हाडी एक पोत चढ चुकी । वाने जातिवाद फलाया । हर क्षेत्र मे दादा टाइप के छारान कू चुनो । बिनकू ही ब्याबो दियो । गभीरता अरु गरिमा को ध्यान ही नाय राखी । आए दिना हडताल करव पढाई ठप्प कर दई । सवा के नाम प सवकू जगूठा दिखा दियो । हा अब बाए प्रेसीडे टी की चस्का लग गयो । हर जलसा मे ऊचे मच प बडे बडे लोगन के सग वठिबो हाथ मिलावो फोटू बिचिवायबो चाहे जहा एजाब दिखायबो बाए भा गए । याकी लोभ बाए सतायबे लग गयो । याही सो फिर बाक म्ही म पानी आ रह्यो ।

ज्या ज्यो चुनावन के निना निवट आ रहे त्या-त्या प्रचार धुआधार हैबे लगे । भरत क नाम क पोस्टर दीवारन प पमर गए । सडकन प सफदी त वोट फोर भरत चमकतो दिखाई परी । भरत क नाम क बज छोरी-छोरान की छाती प छा गए ।

भरत की ओर सौं दाहू, कम्बर, साइकिलन सौं बोट उगाइवे की धम मच गई । पइसा पाती की तरिया बहायी गयी । ठौर ठौर पै खाइवे गीव की छोरी छारान कू खुली छूट दई ।

इतयूँ दिवाकर के पास पइसा कहा हौ ? बाकी मया अपन वेतन म ते बचा बुधा के पूरा पार रही । कबऊ कबऊ इत वित ते लने और पर जाते । दिवाकर क हिमायतीन के पास दमखम तो हती पर धन नाथी । फिर प्रचार म कौन पइसा लगाती । लगाती तो कहा ली लगाती । याही सौं बाके साथी प्रचार के ताई कछू ताम ज्ञाम नई जुटा सके । दिवाकर न प्रचार-प्रसार के ताई बनर, पम्पलेट पास्टर अरु सडक जर दिवारन प लिखवे के ताई मना कर दई । तक ई दियो सब पढे लिखे हैं । सब ज न फिर बनावटपन सौं कहा होय ? दिवाकर की बात धाक साथीन न सुनी पर जब भरत की हल्ला गुल्ला अरु जमौ भयी अखाडी देखी ती दिवाकर क समयवन प नई रह्यो गयी । धीरे-धीरे स्पया इकठोरे करक गेरु ल आए । हांडीन म गेरु घोर लिया । कछू हाडीन मे सफेदी घोर लई । राता रात सडकन प सफेदी ते अरु दीवारन प गेरु ते बोट फोर दिवाकर लिख दियो । पर भरत की प्रदसनी के आगे दिवाकर की दिवावी नैकज नइ टिक सयो । सांची बात है कहा राजा भोज अरु कहा गमू तेली ?

हा दिवाकर की प्रचार डोर टू डोर रह्यो । दिवाकर के साथी बिना कोऊ लाभ लालच के अपनी धम-कम ममझ क प्रचार के काज समपित है गए । प्रतिष्ठा को प्रश्न समझके जुट गए । भरत के साथीन की उमग ती देखते ई बनती । दिनक पाम धरती प नाथ टिक रहे । वे नी-नी हाथ उछर रहे । खूब चढ चढ के बात कर रहे । मीछन प ताव द रहे । अपने घासना पत्र म खूब चमक दिखाई । भांति-भ ति की घोसना करी । बोटरन कू भांति भांति सौं फुसलायो । दिवाकर कू भीगी बिल्ली उजड़इ, ना समझ और न जान का-का उट पटाम सम्बोधन दिए ? बिना दिवाकर की छवि धूरि मे मिलायवे क ताई कोई कार कसर नई छाडी । चुनाव जीतवे के जितेक ह्यकडे अपना सक ए सा मव अपनाए । दिवाकर न न कबऊ बड़ चढके बात करी न भयान कू कोऊ ओधे-सू धे प्रलोभन दिए । भरत वे ताई कोऊ एसो बोल नई कहाँ जो बाकू बुरी लगी हाय । जब कबऊ मिले भरत कू बडी भया कहके राम राम करी पर भरत ने सूधे म्ही राम-राम हू नई लई । या चुनाव कू देखि के पिलानी वारेन ने कही क अब की चुनाव राम रावण की युद्ध है । एय ओर राजा है ती दूजी बार बनवासी । या चुनाव म छोरी छोरा ती रुचि ल ई रहे पर गुरूग ऊ लागायित है क दख रह्यो । गुरू बगै की झुकाव दिवाकर की भाऊ हती पर कोऊ कछू कहु ना सक ही । मवन न अपनी-अपनी इज्जत की प्वाल ही । साचत स्पॉप के विल मे कौन हाथ डार ।

चुनाव सी दो दिना पहलै भरत की अन्धी छासी जुलूस निकमी । धूम धडक्का दौड धूप, ज जकार खूब रहे । कछू समयक ती जुलूस मे हते, कछू भय के मार सग लग रहे । कछू प्रलोभन के मार जय हो जय हो कर रहे । भरत के जुलूस से भरत की जीत

प मुहर लग गई। दिवाकर के समथवन की तो बधिया बठ गई। छत्र छूट गए। हालत पतरी पर गई। हाथन क ताता उड गए। इन सब बातन को दिवाकर प काज प्रभाव नई परी। बान जमान चिंता नई करी। तनाव नई बढ़ायी। बान ई बात सिद्ध कर दी क अधड म तरु, गुलम अरु लता झिल पहारन प का प्रभाव परे। बान हिम्मत नई हारी। भाग के भरास हू नई बठी। ज्या ज्या भरत के हृद बढ़ते गए दिवाकर की कमान तनती गई। 'चरवति' को मय और गहराती रह्यो।

दिवाकर की सरलता अरु विनय को लाभ उठाय कै भरत के साथी उल्टी सीधी सुनायव लग। चेतावनी हू दी गई। इन सौ दिवाकर न एक पाठ पढ़ लियो क भरत की पार्टी सौ सचेत रह्यो जाय। दिवाकर के साथीन न हू दिवाकर कू अवेली नई छाडो। बाके सग छाया की तरिया लगे रहे।

चुनाव क दिना चांगी तैयारी है गई। भरत क समर्थकन कू कलऊ के ताद मिठाई अरु नमकीन आ गयी। भाजन के समै नाजन आ गयी। दिवाकर के पास वा धरयो ? बाकी फौज तो चनान के सहारे जुझ रही। पिलानी म पहली पाठ ऐसी चहल पहन नई। दोनोन के खेमे म भागम भाग देखवे लायकी। कई बोर दोनो दलन म तनाव की सी स्थिति आ जाती पर दिवाकर की सूख बूझ अरु विनम्रता सौ टकराव बच जाती। काऊ तरिया दिन भर की गहमागहमी सत्रि कू चार बजे जाय कै यमी।

चार सौ पाच बजे के बीच एक घटा की सम और बाज डारव वारन कू बचो। अपनी-अपनी सूचीन मे देखिक ई मालुम करी जाय रही कै बोट दब ते कौन रहे। भाति भाति के धुंआ के गुब्बारे दिखाई पर रहे। एक एक बोटर क पीछ चोटी सौ एडी तब की पसीना बहा रह। एक बोटर कू आती देखते तो दानो दल टूट परते। एक बाए अपनी ओर खींचती तो दूसरी अपनी ओर। वाक बपडा ऐसे खचे जाते क बाकी जानआपत मे आ रही। बू बिचारी आती आ जाती। दोनोन ते हा हू करती चुनाव के कञ्ठ तक पाँच कै हां चन की साँस ले पातो। मतदान केन्द्र प रस्साकसी की सौ वातावरन दिखाई पर रह्यो। या तरिया एक घटा निटून सौ बीती।

पाच बजते ई उफान एक सग बठ गयो ज्वार उतार प आ गयो। गरम दूध प मानी ठंडे पानी के छीटा पर गए होय। अब काऊ बोटर सौ बात करवो तो दूर बाकी ओर देखवो हू पाप समझ रह। जस काऊ टोटका धरक पीछ मुड क नाय दखे बस ई काम निक्स जावे क पीछ बोटरन की आर काऊ दू कऊ नाय रह्यो।

एक घटा पीछे बाटन की गिनती हैब कू ही। एक घटा सवन कू या बात कू दियो क सब सुस्ता ल। अपनी थकान कू मिटा ल। भीत तो इत बितकू छँट गए पर जो गीच छत ह, बिनकी सुस्ताबी कसो ? ब तो म्हाई छाए रह। चील बीआन की कचन करत खरी

नाई मडराते रहे । वे तो ई चाह रहे क एक घंटा पलक झपकत ई निकस जाए पर सियारीयान की उलायती ते बेर नाय पकै । फल तो समै प ही आव । घडी की सुई ना काऊ की आतुरता देखे ना काऊ की छटपटाहट । समै तो अपनी गति सौ सरकै । हा मान्स सुख मे समै कूँ भागती भयो अरु दुख मे ठहरती भयो अनुभव कर ।

खर, काऊ तरिया छ बजे । कालेज के विसाल सभागार मे बिजुरी जुर गई । मजन प गिनती करबे वारे जम गए । दोनो पच्छन के प्रतिनिधि चौकसी क ताई आख पसार के डट गए । यो तो सबन कूँ सिगरी सीटन कौ परिनाम जानब्र की चाह ही पर, प्रेसीडेण्ट कौ चुनाव काट कौ भयो, सबन की निगाह प्रेसीडेण्ट के परिनाम पही । सबन की टकटकी मतन की गणना के ताई ऐसे लग रही जस बगुला की मच्छी प हाय । सबकी आख निरनय सुनिबे के ताई, ऐसे लग रही, जैसे करवा चौप प उपासी बयरन की आख चन्दा माऊँ होय ।

पहलै ओर सीटन की मतगणना भई । एक एक करक और सीटन क परिनाम निकस गए जीते भएन के जकारे लग । जीते भए वाहर है गए बिनकूँ फूल माला चढाई गई हारे भए चुपचाप खिसक गए । अब बरी आई प्रेसीडेण्ट के मतन के गिनबे को । दोनान के भाग के डिब्बा खुलबे लगे । बोटन की गिडडी वन गई । नाम पुकार-पुवार के बोट बाँटी गई । पहले डिब्बा म भरत ही भरत चमकौ, दिवाकर कौ नाम आयो पर कम आयो । भरत क साथी चमक उठे नाचबे लगे । बाहर भागक ऐलान कर आए । भरत क नाम के जकारे लगावे ला । दिवाकर के समयकन के मन भर गए । बुझे बुझे से माथो पकर क रह गए । भरत वा कमरा म ई जमो भयो जाम बोट गिनी जा रही । बाके होठ नाचबे लग । आँख नाँचबे लगी । दिवाकर तो पहलै ई अपने कमरा म चली गयो । बाके समयकन मे ते एक न जाय कँ जब पहले डिब्बा के समाचार सुनाए तो दिवाकर के चेहरा प ना कोऊ उतार आयो ना माथे प सरवट परी ।

मतगणना क कच्छ मे दूसरी डिब्बा खुली पर अबकी बेर पाँसो ही पलट गयो । जब की बेर दिवाकर ड दिवाकर कौ नाम सुनाई परी । भरत कौ नाम इक्का दुक्का ही रह गयो । भरत क समयकन के चेहरा उतरबे लगे । तौऊँ और डिब्बान प घास लगाए जमे रहे । और डिब्बा खुले तो भरत की कई डिब्बान म ते नामई गायब मिली । बाकी करेजा धक धक करब लगी । पाँयन के नीचे ते धरती खिसकबे लगी बिनके हाथन कँ तोता उड गए । भरत म्हों फारे रह गयो । जो मौछन प ताम द रहे बिनके चेहरा लटक गए । 80 और 20 की औसत देखिके भरत की आसा निरासा म पलट-गइ । कछू तो भरत ते बिना मिले ही खिसक गए । दिवाकर कँ समयकन के चेहरा प भोर कौ ललाई नाँचब लगी । मुरझाए भए पौघान कूँ पानी मिल गयो । तेल चुके दीपक म तेल पर गयो । अगले डिब्बान नै तो भरत के पामइ तार दिए । भरत नै कमरा कूँ छाडिबो ठोक समझो ।

परिनाम कच्छ में दिवाकर के साथी दिवाकर के कमरा प ते जवरन उठा लाए ।
 मयी । ता सम हू दिवाकर एकदम सात ही । दिवाकर भारी बहुमत सौ विजयी घोसित
 रह्यो, पर कोऊ अभिमान की रेख नाई । बाके यारन न वाकू बघाई दाई । काऊ न
 हाथ मिलाए, काऊ न गोदी म भरी, काऊ न हिए सौं लगायो । वछून न ब्राकू अपने
 कधान प उठा लियो । जो लोग माला लकै आए बिन वाकू मालान सौं लाद दियो ।
 वछू भरत के ताई माला लाए पर जब बिन दिवाकर की जीत देख लई तो मन के भाव
 दबाय के ऊपरले मन सौ अपनी दूसरो चेहरा बढाय के दिवाकर के गरे मे ही माला टार
 दई । फोटोग्राफर न अपनी कला दिखाई ।

जसे ई दिवाकर माला पहर के वाहर आयो वाके नाम की जय जयकार हेवे
 लगी । काऊ न फून माला डारी काऊ न गुलाल लगाइ । थोरी देर मे ही भीड न एक
 जुत्सु कौ रूप धारन कर लियो । सडक प दिवाकर की जय जयकार के नारे गूजब
 लगे । "जीत गयो भई जीत गयो भाई दिवाकर जीत गयो ।" दिवाकर की जय
 हो" जसे नारे पिलानी मे गूज उठे । दिवाकर की आँख भरत ते हाथ मिलावे कू ललक
 रही । पर भरत तो अपने कछू साथीन के मग मन मारे एक कमरा म जा बठो । ओर
 माथी बाए वसे ही छोड गए जसे क मरे डोर कू कलीला छोड जाए । भरत के कमरा म
 मातम सी छा गयी सबन के चेहरा प हवाई उड रही । बडबोला भरत के साथी कहवे
 लगे, 'अमुक धोखो दे गयो अमुक न पीठ म घुरा भाकी है, अमुक न एन टम प लीम
 डीपन कियो है । भरत हू निदाल परो चुपचाप सुनली रह्यो । कहती तो का कहती ?
 वाए अपनी तोहीन कौ ऐसी अनुमान नाथी । तू तो जीतवे के पाछे मधुर सुपने सँजोए
 बठो । बाके मसूवे मर गए । ब्याली गुलाब धरे के घरे रह गए । सब सुपने बह गए ।
 बिनम ते एकाध दिवाकर कू गारी गुप्ता करवे लग्यो । एक बोली न जान कहा ते
 बीच म ही बबर परी । दूसरो बोली 'सब मालुम पर जाइगी प्रेसीडंटी कस करी
 जाए । तीसरे न कही 'अजी प्रेसीडंट बन गयो है तो काए, हम बाए चन ते नइ
 बठन दिग । चौथे न कही, 'अजी हमारी बात नाथ मानवे कौ बाए मजा चखानी
 परगो । पाचवे न कही वान हमारी नाक नाट दई है हम याकौ बदली लक
 रहिगे ।'

दिवाकर के खेमे म जीत की धूम मच रही । उल्लास की वातावरन छा रह्यो ।
 मवन क चेहरा प गुलाल जर उल्लाम की खानिमा नाच रही । होठ मुस्करा रह ।
 कमरा म मिठाई बँट रही दिवाकर को म्ही मीठो बरायी जा रही । दिवाकर न अन्त म
 सवन कू धयवाद दियो वाने कही ई भरी जीत नाए तिहारी जीत है । तिहारी महनत
 रग नाइ है ।' सवन के ताई आभार प्रवट करके विदा कियो ।

रचन बरत घरी

वाके कमरा म रह गयो बाकी लंगाटिया पार राकस । बाने दिवाकर कू या सम अकेली छोडिवी ठीक नई समझी । दिवाकर के मन म ती कोऊ मल नाजी ना काऊ आसका ही पर बाके साथी बाते कान मे कह गए क सचेत रहनौ है । फूँक फूँक के पाँम रखनौ है । ऐसी नई होय क रिसियाए भए चोट फँट कर जाएँ । दिवाकर न सबन की सुनी और अनुसुनी कर दई ।

सबन के जायवे के पीछ दिवाकर के मन म बिचार उठे लग । भरत कूँ काऊ भेडियापन नई कर दे । काऊ नै कहौ है गुडा बडे परमेसुर ते पर फिर दूसरी बिचार आती पढ़े लिखे है बिना बारण वोऊ ऐसी बात नाँप कर सक । हाँ कछू कहनावत सुनावत करिगे तो सुन लिगे । चुप्प लगा जाइगे । एक चुप्प सौन कूँ हरावे । इनई बिचारन म हूवती उतरती दिवाकर सो गयो । कई दिना की थकी भयो । बिना दबोर नोद आ गई । ऐसी नोद आई क सबरे आँख खुली ही नई । भोर ते पहलई बधाई देव बार जा गए बिनै हा हुल्ला करक दिवाकर कूँ जगायो । जा बोट डार क चले गए, बिनकूँ अखवारन सी सब पती चल गयो । अखवारन क सबते पहले पना प दिवाकर का फोटू छपी । बाए देखिके दिवाकर के समथक धिल उठे । विरोधी पजर गए । पिलानी म कई दिना तक दिवाकर क नाम की चरचा रही । कॉलेज म दिवाकर की धूम मची रही ।

भरत अरु बाके समथक कऊ दिना तक म्ही छिपाते रहे । मनई मन कुदत रहे । बिनकी बदले की भावना धीरे धीर जार पकरती गई । ब जान बूझक लखे गगरवे के बहाने डूँढवे लगे । दिवाकर न कोऊ आँसर ही नई दियो । एक दिना राकेस कूँ सगलके भरत के कमरा प पहुँच गयो । भरत नै दुनिया दिखाइव कूँ मन म घुसेँ चोर कूँ दबाय क स्वागत कियो । बधाई दई । दिवाकर नै आभार मानी अरु सहयोग की आर्काञ्छा प्रकट करी । उपरले मन ते भरत न सहयाग दब की कही पर मन की मैल दूर नई भयो । खीरा की सो रूप ही बाकी, ऊपर ते ती मन मिली भीतर फाक तीन ।

चुनावन कूँ भए पन्द्रह दिना बीत गए । मामली सब सान्त है गयो । दिवाकर के मन मे त मका धीर धीर निकस गई । एक दिना दिवाकर पिलानी बस स्टण्ड की रात के नौ बजे क जास पास कालेज होस्टल की ओर लौट रह्यो । मुख्य दरबज्जे के भीतर घुमवे बारी ही हौ क दस बारह छोरान न बाप भयकर हमला बोल दियो । दिवाकर सम्हर ऊ नई पायो । ना बछू वह पायो ना सुन पायो । हक्की-बक्की देखती रह गयो । ऐसी लगी मानी चक्रव्यूह के डार प निहत्थी अभिमन्यु दुस्ट कौरदन के घिराव म आप गयो होय । बिनमे ते एक छुरा भोक क भाग गयो । बाक सग और सब सिर प पाँम रख क भाग गए । दिवाकर छुरा लगते ई गिर परो । इतनी ई वह पायो भयाभी अचछी नई कियो ।” बाने साहस करवँ सबसे पहल पाव प घोती कसक बाधी फिर कालेज हास्टल चलवे की ठार मरुपताल चलवे की साथी । हिम्मत करक

नडखडाती बस स्टैंड की ओर सरकी। तागे बारू कू पुकारी। बाते छुरा लगव की बात करके तागे मे चढायवे की कही। तागे वारे न मदद करी अरु फुरती सौं बाए इमरजसी म ल गयी। तागे मे इ दिवाकर अचेत है गयी।

तागेवारी हत तो मुसलमान हो। पर दुख के समे जाति पाति काऊ नाय देख। बाने दिवाकर कू गोदी मे उठायौ और इमरजसी रूम म ल गयी। इमरजसी कच्छ मे डाक्टर अरु नस हस रहे। मस्ती मार रहे। चाय की चुस्की चल रई। लग रही इमरजसी कच्छ, इमरजसी कच्छ ना हैक कोऊ रेस्टोरट होय। तागेवारे न गोदी म लेके दिवाकर कू लिटायौ। डाक्टर अरु नसन न मायो ठोक लियो। मस्ती म खलल पर गई। बडे नाज नखरेन ते उठे। तागेवारे न कही, "डाक्टर साहब कालेज को छोरा है" तब डाक्टर सावधान भए। फिर तो फुरती आ गई। दिवाकर टबिल प लिटा दियो जा समे बाकी कमरपेटा खोली निबाकर अचेत ही हो। डाक्टर न फोन सी कालेज क प्रिंसीपल कू फोन कियो। होस्टल के वाडन कू फोन कियो। जासी कोऊ साग सम्हार करवे वारी आब। बाजार जो दवाई लाव। कमरबद खोलते इ खून बह निकसी पाव भीत गहरो। खर इतेक रही न छोरा, छुरा कू घुमा नई पायो। डाक्टर ऊ घबडा गए। जोर डाक्टर बुलाय गए। दखते ई देखत रात मे प्रिंसीपल होस्टल वाडन, होस्टल के छोरा सब अस्पताल मे इकठौरे है गए। डाक्टरन न जाच पडताल करक घोसना करी घाव गम्भीर है, हालत अच्छी नाय। दिवाकर के मया बाप बगि सी ही बुला लिए जाएँ।

जा काऊ न सुनी सन्न रह गयो। प्रिंसीपल न दिवाकर कू जपुर ल जाब की वही तो डाक्टर बोले अपनी जिम्मेदारी प ल जा सकी रस्ता म ही कछु हैगो तो जिम्मेदार नाय। सब गहरो चिन्ता मे डूब गए। प्रिंसीपल न सबसौं पहल लाइटींग बाल लगाय के डींग मचना दई। चन्दा बिचारी मौ रही। रात म फोन की सुन क करेजा धक धक करवे लगी। ल दके भगी भगी गई। कापते हाथन त टलीफोन कू उठायौ। पिलानी की नाम सुनत इ चन्दा काप गई अरु जसे ई सुनी, दिवाकर की तबियत खराब है बेग ते चली आघो। तो याए सुनत इ चन्दा हिल गई। काप उठी गहरो वारी छामा के भय न झक्झोर दई। रात म अकेली कैसे जाए? पर बाई छिन बाए याद आवी परोसी अपने इ तो हैं। फिर या सम नाम नई आइत तो कब नाम आइत। बान बमरा म ते कछु बपडा अपनी टोबरी म रहे। कछु श्वैया पइसा बांधे। आस-पास क लोग तुगाई जिन सुनी व भागे चले आए। चन्दा क मग चलब कू हर एक तयार है गयो। सयन न निरजन एम डी आई कू सग कियो। निरजन परिश्रमा निष्ठावान अरु समझदार है। बेंग ई जीप बरक भरतपूर पहुँच गए। रात कू ट्रक पकर क जयपुर पहुँच गए। जपुर त फिर बम पबर न पिलानी पीचे। निरजन न अनुमान त अस्पताल ही पहुँचयो उचित समझो।

रचन बरन गुरो

पिलानी के अस्पताल के सामई छोरान के ठठठ जुर रहे । दिवाकर के बारे म बातचीत कर रहे । हर एक चिन्तित दिखाई पर रह्यो । चन्दा नै धडकते मन सौ जो कोऊ सामने आयो बाई सौ दिवाकर की पूछो । गम्भीर हालत जानक चन्दा के पाम टूट गए धडकन बढ़ गई, लम्बी सास चेहरा पं हवाई उड रही, तेज उड गयो । छोरान नै अनुमान लगा लियो दिवाकर की मया आ गई है । बाए देखिब छोरा इकठोरे है गए । निट्ठन ते बाए भीर म ते निकास क दिवाकर के वच्छ तक ल गए । वा सम दिवाकर कू आक्मीजन दियो जा रह्यो । वा समै कोऊ वच्छ मे नई जा सक हो । डाक्टरन न पूरी तरिया सौ भीतर घुसवे तक की भना कर राखी । चन्दा कू हू रोक दियो । च वा न डाक्टरन के हाथ जोर पाम पकरे पर डाक्टर नई पसीजे । चन्दा माथो पकर क बठ गई । बाए पसीना आ गयो । भावी आसका सौ दिल की धडकन और बढ़ गई । चन्दा समझ गई हालत गम्भीर है । बाते बात छुपाई जा रही है ।

दिवाकर के साथीन नै चन्दा कू मुकतरो धीरज बधायो पर ज्यो ज्यो धीरज वंघायो त्यो त्यो चन्दा की मन भारी हैवे लयो । आखन के आगे अधियारी छा गई । आंसून की धार बह निवसी । चन्दा की हिलकी बंध गई । डाक्टरन नै देखी क चन्दा प कोऊ भारी आघात नई पर यासो कही क दिवाकर चेत म आ गयो है अरू खतरे सा बाहर है । या बात कू सुनिके बाकी जान मे जान आई । मुरझाई बेल कू पानी मिल गयो । वान डाक्टरन ते फिर बिनती करी, वू नेकहु नई धोलैगी । होठन नैऊ नई खोलैगी । आसू हू नई गिरावैगी । नक देर कू नैनन के तारे ए दख तौ लन देओ । डाक्टरन नै आधे घंटा पीछे मिलवे की आग्या दई ।

आधे घंटे चन्दा कू भारी पर गयो । आधे घंटा पछ चन्दा दिवाकर के जोर पहुँची तौ देखी सिलाइनवाटर की बोलत चढ रह्यो हैं । दिवाकर चित्त लेटी भयो । दिवाकर नै जसै ही मैया देखी हाथ जोर कं राम राम करी फिर पाँव छूवे के ताई उठवे लयो पर बाक साथी राकेस नै बाकू रोक दियो । नस नै कडक कं लेटे रहवे की कही । चन्दा दिवाकर कू देखि क वच्छ नई बोली पर बाके नैनन सौ आंसून की बूँद वरव लगी । दोनो ओर आंसून की बरसात देखिक, देखिबे बारे हू पसीज गए ।

दिवाकर न मदे मुर मे कही 'अम्मा तू आ गई ?

'हाँ । बेटा मैं आ गई अब चिंता मत कर ।' चन्दा नै दिवाकर के माथे प हाथ फेरते भए धीरज बधायो ।

दिवाकर 'अम्मा 'अम्मा' कहती रह्यो अरू चन्दा अपनी आँखन म घ्रात भए आंसून न रोक क, मेरे बेटा मेरे लाल तू ठीक है जायगी कहती रही ।

दियावर सौ मिलिके चंदा बाहर याई तो देगी बालेज के छोरान वी भीड़
भीर बढ गई है। भीत से तो चन्दा के दरसनन के ताई आए। बिन्न चंदा के समाज
सविका हैब की बात सुन राखी। वे वा मैया कू देखिबे घ्राए जाई ऐसी ताल जायी है।
मिलिबे वारेन म वे हू छोरा हते जो हमला करबे बार ह।

चंदा सौ दिवाकर क साथी बाले अम्मा तू चिन्ता मत कर हमारी नया
ठीक है जाइगो।" सहानुभूति क बोल सुनिक चन्दा फफक करे परी "बटाओ
दिवाकर मेरे जायी भयो अकेलो बेटा है पर म्ही बोले तुमहू ती मेरे बेटा ही। जब इतेक
बेटा सग रहरह है, तो मोय चिन्ता नाएँ, पर हाँ, माय तो बल्लई ऐसी भाय पर गई के
बछू अनहोनी हैबे कू है। मोय ती बल्लई ते रोटी पानी अच्छी नाय लगी। बुरे बुर
सुपने दीख रहे।

चंदा की बात कू सुनिक छोरा काप गए, बिन्न चंदा त कही, अम्मा जो बछ
हानी सौ है गयो अलाबला सब टर गई पर तू चिन्ता मत कर हम हमला करबे वारेन
त बदलो लेके रिहगे।'

या बात कू सुनिक चन्दा एकदम गम्भीर है गई। सागर की ज्वार एक सग
उतरिगो। सवन कू समझाते भए कही, बेटाओ! बदलो कौन त लेओये? कौन पै बार
करीगे? अपने भयान प। अपने भयान की लहू बहाओगे। कालेज म जितेक छोरा है
सब मेरे बेटा की नाई है। तुम मेरे बेटान पइ बार करीगे? ना ना बटा ऐसी बात मत
कहो। ई घटना ती नासमझी मे घट गई है। का तुम और नासमझी करोगे? का कीचड
ते कीचड साफ करीगे? बेटाओ तुम सब पढे लिखे हो। जिनसो गलती है गई है वे
दुख दके सुखी हुगे वा? वे हू पछता रहू हुगे। मोय मिल जाँ तो मैं ती बिन गरे
सो लगा लऊँ प्यार करूँ प्यार सौ समझाऊँ।

या बात कू सुनिक दिवाकर के साथीन प बछू प्रभाव परी क नई, पर हा
एक दो हमलावर जिन्न इन बातन कू सुनो व अपने धिनौन काम प मनई मन पछताव
लगे। बिन चंदा म अपनी मैया के दरसन किए।

घोरी देर लो चुप्पी छाई रही। चंदा न इ मोन तोरो, कही, 'का साच
बिचार मे पर गए? मैने कछू अनहोनी बात नाय कही। एक मैया के मन की पीरा कही
है। नक ठण्डे मन त सोचो तुमने काऊ तरिया बिन बेटान को पतो चलाह लियो
जिनसो ना समझी भई है और तुमम ते काऊ न बिनके हाय पाम तोर हू दिए तो
का हाय आवेगो? पर जाके लाल की कुहाल करीगे बाके मया बाप प का बीतगी? का
बे मेरे नाई नइ रोइ ग का? का तुम काऊ लाल के मया-बापन न दुखाभोग? सोचो,
समर्पो अरू मोय वताओ।' हिंसा त हिंसा उभरगी क मरैगी?

कचन करत खरी

या वान कूँ सुनिवै हमलावरन के मन मे जाई कै चन्दा के पामन कूँ पकरल पर सबन क समाई सकोच, लाज अरू भय के मारै व भीड मे चुपचाप खिसक गए पर विन्ने अपने मन मे कछू निहच कर लियो ।

ब भागे छूटे भरत के पास गए । विन्ने दिवाकर की मया के विचार बाके सामई रखे । भारत अचम्भे म धा गयो । विन सबन की मन पभीज गयो पर विनै पुलिस को डर ही । पुलिस कूँ प्रिन्सीपल ने रपट कर दई । पुलिंग जी जान ते राज मे लगी भई । बाए सुराग हाथ ना लग रह्यो । हमलावर पुलिस के उण्ढा के डरत वान कूँ छिपाये की सोच रहे पर चन्दा व विचारन न विनकूँ बक्यार दियो । वे चन्दा सौँ छमा चाहवे कूँ आतुर है रहे ।

सोच समझ क दस जने चन्दा सौँ छमा चाहवे पहुँच इ गए । चन्दा कूँ दिवाकर क साथी हृदय धेरे रहते । एक छिन कूँ हू डील नाय दे रह । विन दमन न चन्दा मौँ एकांत मे बातचीत करनी चाही । दिवाकर के साथी समझ गए क जपराधी पुलिस सौँ डरक सरन म आ गए हैं । व दसहूँ चन्दा सौँ अवेस मे बात करवे लग अरू बितकूँ एक दी याकी खबर देव दिवाकर के पास पहुँच गए ।

चन्दा न सबन सौँ प्यार सी बाई तरिया बात करी जस दिवाकर ते करई । सबसौँ पहल सबन न अपनी-अपनी परिच दियो । परिच पायकै चन्दा की आँख भरत प टिक गई । वान भरत ते कछू कहे मुने बिना हो बाकूँ गरे त लगा लियो । भरत न चन्दा के पाम पकर लिए धीर बही मैया तू दिवाकर की ही मया नाए तू तो हम सबन की मया है । तेरे सँ विचारन न हमारो हियो बदल दियो है । जो कछू गलती भई है वू हमारी भई है याकी हम सब छमा मागिबे आए है ।

या बात कूँ सुनिव चन्दा गद्गद है गई । जाँखन म सनेह के आँसू भरक बोली 'बेटा छमा मागिबे की बात कहक तुमन अपनी महानता की परिच नियो है । बच्चान ते गलती हीती रहे । मया तो मया इ होय । ई तो इतिहास मे एक नकई ही ऐसी है गई जासौँ मातुपद के माथे प करौँच लग गई, वान इतिहास कूँ सृठला दियो । आखीर म बू हू पछताई । बटाजी ! छमा होठन ते ना तो मागी जाए ना होठन मौँ दई जाए । ई तो मनते मागी जाए धरू मनत दई जाए । जब तिहारे मन न अपने मन म कछू निहच कर लियो अरू जब तुम सबन न अपने मन की बात मेरे मन तक पहुँचा दई सबई मेरे मनकूँ अनुभूति है गई । मेरे मन मे बाल्स्व्य के भाव उमड परे । बेटाजी ! तुम मोय पराई मत मानो अपनी मया की नाई समझो । गलती है जाये प तुम अपने मया के पत्ते पकर क अधिकार के सग कही करो कँ मया मात एसी है गयो, मैने एनी कर दियो बस ई मैया ब्योहार करो ।'

इन बातन सौ भरत के साथीन कौ मन कौ मंल पुव गयो । वे पानी पानी है गए । बिनने अपने म्ही सौ कही, 'मया तोकू धन्य है ।' बिनम ते एक ती रो परी बोली "मया अब जो कछू है गो सो ती है गौ अब दिवाकर हम भया ते हू वडक है बाते हम और छमा चाहिगे । च'दा नै सबन कू प्यार कियो सबन न चन्दा के पाम छीए । च'दा न सबकू छमादान दकै सबकौ मन ओरते ओर कर दियो । काऊ न कही है, 'छमादान सबसौ बडौ दण्ड होय । या लो प्रभाव तन ते बडक मन अरू आत्मा पे होय

जब च'दा अरू भरत के साथी बात कर रहे दिवाकर क साथी भाति भाति सौ सोच रहै । हाँ बिन बिसवास है गयो कँ भरत अरू बाक साथी दिवाकर सौ छमा मागवे आए हैं । जैस ई भरत अरू भरत के साथी चन्दा कू छोडि के गए सिगरे च'दा के पास इकठोरे हैकँ ललचाई बाखन सौ पूछव लग । च'दा न सूधे सुभाव सौ सिगरी बात वह दई । बान ई ऊ कह दई क बिनने का कियो बिनके मन नै कियो जब मन ई बदल गयो ती फिर का लवो दबो ?

'तो वा मया तनै सबन कू छमा कर दियो ?' एक न पूछी ।

वेटाग्री ! छमा किए ना जाएँ । छमा मागिगे बारे क सामई मा स अपने आप झुक जाय सो हाल मेरो भयो । च'दा बोली ।

दिवाकर के साथी मन मसोस कँ रह गए । भाव उठे । ज्वार आयी पर उतर गयो ।

दिवाकर नै सिगरी राम कहानी सुनी । बान हू अपन साथीन सौ कही भया पापन ते घिरना करी, पापी ते नई । स्याप म दोस ना होय जहर मे दोस होय जहर की पोटरी निक्स जानी चइए ।

दिवाकर के साथी चाह रहे व अपराधी कू पूरी सजा मिलनी चइए । कौआ मारकँ टाकनो चइए जासो सबन कू बाख है जाए । जिनने हापन सौ पाप कियो है बिनक हाय काट दिए जाए । जिनकी प्राखन न बुरी बात करी है बिनकी भाँख फोर दई जाए ।

दिवाकर न और समझाए भयाओ गरम पानी म म्हीडो नाय दोख ठण्डे पानी म म्हीडो दीख । हिंसा ते हिंसा भरूक, घातक परिनाम निक्सै । फिर बीछू जब अपनी सुभाव नाम छोडे ती साधु बाए वचावे कौ सुभाव कसँ छाड दे ।

या बात कू सुनिव एव न कही मया स्यापन कू कितवऊ दूध पिवायो जाए व ती जहरई उगलिग, पासी ई अन्छी है क बिनकू दूध ना पिवाय क बिनकी पूषरो कुचली जाए । कुचलकँ छाडे नई जाए जराय क राख म मिला दिए जाए नई ती पुरवाई हवा सी घघमर हू जाबित हैकँ बर निवाम ।

क बन करत घरो

दिवाकर न कही "अपने विगत इतिहास कू देखो दयानन्द, ईसा, मोहम्मद, गांधी नै वा कही । महावीर के वानन मे छूटा ठोक दिए । बुद्ध की आलोचना पँ आलोचना भई पर अखीर म जीत बिनकी भई ? किनकी नाम पुजो ? फिर मोऊ ए तो सोचनी चइए मँकीनसी मया की बेटा हू ? मेरे पिता कैसे भए ? का सबन नँ भूल क नीति पथ कू छोड़ दऊ ? स्याप की जो बात कही है, हम कोऊ स्याप थोरई हैं हमम बुद्धि है, हम हानि लाभ जानै, भली बुरी पहचानै । सुधार घर मानसन कू ही तो बने है, स्यापन के ताई थोरई है ।

बीच मे ई एव न बात काट कै कही "अरे भया मास तो स्यापन सों हू बढक है गए है । स्यापन की तो मालुम तोऊ पर जाए पर आस्तीन के स्यापन की पती ई नाय चले । न जान कब चोट फट कर जाए ।"

दिवाकर नँ फिर समझायो जो आस्तीन के स्याप है बिनकूँ नरक म हू ठोर नाए जो जा हाडी म खायें बाई मे छेद करे, बे दीन के रहे न दोजख के । बे समाज की नजरन मे गिर जाए । बे जीब पर बिनकी जीब मे का जीबो । बेहा जीब बुरे हवाल ' बारी बात होय । हाँ, एक बात जरूर है जो बुरे काम करके हू सुधार जाए, बिन्नी दुनिया पूज । सबेरे की भूली साझ कूँ घर आ जाए तो भूली नाय कहाब । या सों भरत के स्यापी न कूँ जरू भरत कूँ गरे ही लगानी चइए । अरे ! काऊ ए तरवार ते चो मारी फूलन सों मारी । ऐहसान की बोझ भीत भारी होय । और अन्त मे बिनकी करनी बिनके सग, हमारी करनी हमारे सग । जो जसो बोबगी वसो ई कटगी ।"

दिवाकर के अकाटय तकन कू सुनिकै सिंगरे साथी ढीले पर गए । दिवाकर की सराहना करते भए बोल ' ई ब्यौहार तो इनके माता पिता की दन है ।'

ताही सम भरत हू अपने साथीन के सग दिवाकर के पास आयो । वाने माते ई हफ करी ना धकक दिवाकर के पाम पकर लिए । अपनी गलती के ताई छमा चाही । दिवाकर न अपने पगम सिंकोर लिए वान हाय जोरि कै बाए अपने पास बठायावे की कही, ' भरत भैया मोसों छमा चाह रह्यो है । अरे ! यार भोय चो लज्जित कर रह्यो है ? हम दाना भया सग-सग रह रहे । भावावेस म कछू बात है गई तो है गइ । याकौ मतलब थोरई है क हम बेरी है गए । तू तो या बात कूँ जानै दूध उफनै नाये ई धन उफनाय दे । ई धन के बुझत ही दूध अपनी ठौर प आ जाए । अरे हमारे देस की तो ई सस्कृति है क भाई भाई लरे भले ही टूट सके का नातो ? हम बरी हू है जाएँ तो हू या बात को ध्यान रहे क जब कबऊ मिलेँ तो निगाहन मे नई गिर ।

भरत बोली, भयादिवाकर हमसो भारी भूल है गई, पर अब हमारी आँख खुल गई है । तिहारी मया न जो प्यार उ डेली है, बाके सामई हम झुक गए हैं । और एस खिचे चले आए हैं जसे लोहे के कन चुम्बक की ओर आपई आप खिचे आबे ।

मया तिहारी मया पूज्य जोग है। तिहारी मया तो परम है है। तिहारी जसी मया है जाएँ तो मसार म ते अपराध अपन आप दूर है जाएँ। हमने तिहारी मया सौ छमा माग लई है, अब हमारे पहार मे पाप कू तुम हूँ छमा कर देयो।”

दिवाकर न भरत के म्हौं वे हाथ रखवें कही, 'मया हम मय मा स है। मासन ते भूल होय। मा म ही मुघारो करे।' दिवाकर ने सत्रकूँ सूधे मुमाव सी परे लगायो। सब सौँ कही हम कुम्हार की माटी क पटा पोरई है मुनार के सोन के गहन के समान है। टूट कं हूँ जुरे।

भरत कूँ पूरो विसवास है गयो क दिवाकर ने बिनकूँ छमा कर दियो है। भरत दिवाकर सौँ छमा माग क प्रिमीपल के पास पहुँचो। प्रिमीपल न सुनी तो पहल तो बाकी पारो चढ़ गयो पर जब कोऊ अपराध मान रह्यो हाय छमा चाह रह्यो होय तो कौन पत्थर हियो होयगो जो नई पिघल। मान्त की हियो दूसरे के हिए की घडवनन न मुने। भरत ने प्रिमीपल कूँ ई बता प्रियो क वान दिवाकर अरु दिवाकर की मया सी हूँ छमा चाह लई है। या बात कूँ सुनिकं प्रिमीपल और हूँ पिघल गयो। बाऊ न भरत अरु बाके साथीन कूँ छमा कर दियो। बाऊ ने चन की सास लई। बाकी चिता दूर भई। बाकी तनाव दूर भयो। भरत जो भच्छक बन रह्यो अब रच्छक बनक रह्यो। पसीना की ठौर लहूँ गिरावैगो। या बात कूँ जानके एक अच्छी वातावरन बनी।

दिवाकर की अस्पताल म चिकित्सा होती रही। दिवाकर के साथी तो सवा मे लगे ई रहे। भरत हूँ सेवा मे दिनरात लगे रहयो। या मेल कूँ देख क पिलानी की गली गलियारे घट पनघट, तिराहूँ चौराहे सब ठौरन प दोनोन के मेल की चरचा ई चरचा सुनाई परी। दोनोन के फोटा अखबारन क पहले पना प छप। पिलानी के रहबया या मेल कूँ देखिक दातन तरे अ गुरी दवा गए।

पन्द्रह दिन पाछे दिवाकर कूँ अस्पताल सौँ फुट्टी मिली। चंदा ने चाही क वू दिवाकर कूँ अपने सग डोग ले जाए। प्रिमीपल अरु छोरा चन्दा सौँ हठ पकर गए क दिवाकर कूँ अच्छी तारिया रखिगे पर चंदा ने जलवायु के बदलाव अरु सबसौ मिलत जुलबे की वही तो चंदा की बात सबन ने मान लई। सब समझ गए मया की हियो तो मया कोई होय। चंदा जब दिवाकर कूँ लक चली तो सिगरी कालेज उमड आयो। भरत क सग सबन ने चन्दा के पाम छिए। बिदाई क समे सबन की आँखन मे पानी तरबे लगे। वान चलते-चलते सबन ते वही बटाओ जो बीत गई गई सौँ बात सम सदा एक सौ ना रहे। सतयुग प्रेता, द्रापर अरु कलियुग समय सौँ नाय होय ये तो हर पल हर छिन हमारे जीवन म घटे। युग तो मास के करमन अरु ध्यवहार सौँ होय। चरंवति 'चरंवति' की हमारी लच्छ हीनोँ चडए। तुमने सुनी ए व्यक्ति होय चाहे समाज—कछू पडे सौ रहे हैं, बछू अगडाई लक बैठ गए है कछू ठाडे है गए है बछू चल पडे है जा ना कचन करत खरो

प्रवस्था में होय वाए वाही युग माहि विचरन करतो भयो मानो । हम अपनी अतीत की सस्कृति कू भुलावै नई जीवन में उतारै ।”

या बात कू सुनि कै छोरान की रंगन में नई चेतना की अनुभव भयो । बान चलते चलते कही, ‘बेटा जो, हम सुधिरमे युग सुधरगो याहू ए ध्यान रखियो । इन बातन कू कहकै चन्दा दिवाकर कू लकै चल दई । विदाई दवे बारे और सौं और हे गए । सबन के हिए में सात्विक भाव जाग गए । मन कू ऐसी प्रेरना मिली कै सब नई उमगन सौं भर गए । गाडी में दिवाकर नै अपनी पूरी कहानी मया कू सुना दई ।” दिवाकर डीग आयो तो वाए देखिवे कू मेलो सौं जुर गयो । चन्दा के सिंगरे हितसी मेह की सौं बाट देख रहे । दिवाकर कू स्वस्थ दखी तो सब खिल उठे । सबन नै भगवान कू सराहो । काऊ ो कही चन्दा के पुण्य आडे आ गए । काऊ ो कही “भैनाप्रो पुरखान के भाग सौं छारा बची ।” सबन ो अपन अपने ढंग सौं कहक सतोस दरसायो ।

दिवाकर दस बीस दिनान में ही आराम करकै भलो चमो हे गयो । बाकी घाब चोखी तरीया पुर गयो । बाके विरोधीन कै हू मन की घाब पुर गयो पिलानी सौं बराबर पाती आती रही । बिन पातीन के संग बाकी मन उडान भरतो रह्यो । कबहू कबहू तो भरत की पाती कू पढ़कै दिवाकर भाव विभोर हे जातो । कई कई पोत पढ़तो । आखिन में आसू भर लातो । भरत की पाती कू मया कू पढ़कै सुनातो । मया हू पढ़कै भावन में बह जानी । इन पातीन सौं दिवाकर तन ते डीग में मन ते पिलानी के अतीत क बातावरन में चलो जातो । कबऊ-कबऊ तो पिंजरा के पछी की नाई पखन नै फडफडातो । मन करतो उडक पिलानी पढ़ू व जाए । जब दिवाकर पिलानी चलबे की घरचा चलाती तो चन्दा काप जाती । चन्दा बाक स्वास्थ्य के ताई रोकनी चाह रही पर अखीर में कतव्य क पथ प आरुढ़ हे कै नठोर हियो करनी परी चन्दा के वात्सल्य कू दिवाकर के निहच के आगै झुकनी परी । कतव्य की बिज भई ।

चन्दा दिवाकर ए करव एक पात फिर पिलानी पढ़ू चो । सब दिवाकर की याद में सूख कै जबास हे रहे । वाय पाय कै सब हरे हे गए । नई बहार आ गई । धी ने दिए जुर गए । दिवाकर की मया क दरसन करकै फिर सबन नै अपन भाग सराह । चन्दा जब दिवाकर कू पढ़ू चाय क लोटवे लगी तो सबन नै कही ‘अम्मा चिंता मत करियो जसो ई तिहारी अकलो बेटा हे बसई ई हमारी अबली भया हे ।’

पिलानी सौं चन्दा लौटी पर या सम बाकी झालत वा गया वा सौं जा बछडा वू घूटा प बाधि कै घास व ताइ जगल कू जाए ।

पिलानी में आयकै दिवाकर छात्रन व हित क क ताइ जुट गयो । राम अनुशासन समय अरू नियमन के साचे में ढरक कम में पथ प आरुढ़ हे गयो । सम-सम प छात्र यूनिपन की बठक करानो बिनके अधिकारन को भान करानो संग में कतव्यन वो हू

भान कराती। बान अपनी मेहनत सी कालेज की पढ़ाई को स्तर उठायी। खल कूद की सुविधा जुटवाई। वाचनालय-पुस्तकालय म संग्रह करब माग साहित्य खरीदवायी। बान छात्र हित के करनीय अनेकन काय किए। छात्रन अरू गुरुजनन व बीच दिवाकर सतु बन गयी। यासी गुरुजनन को सिर दद दूर है गयी। कालेज प्रसासन कू छात्र सहायग भरपूर दिवायी। सब विघटन, सगठन मे बदन गयी एवता म अनेकता समूल नष्ट कर दई। यूनिजन के उदघाटन समारोह ते लकै जितने उत्सव अरू सांस्कृतिक नायत्रम भए बिनम एक सालीनता अरू उपादेयता के दरसन भए। छात्रन को बरस भर हितई हित भयी।

दिवाकर के कायकाल मे ऐसी सूत सी कती ऐसी कालेज को नाम भयी क देम के अनेक प्रातन के प्रतिनिधि मडल याक क्रिया बलापन कू देखिबे आए। यहा के बातावरन कू देखिके निहाल है गए। ऐसी भाईचारी, ऐसी ठालमेल ऐसी सहयोग ऐसी अनुसासन, ऐसी पढाई-लिखाई ऐसे खेलकूद देस म दू डे तऊ नई दिखाई परे। य अपने-अपने कॉलेज मे पिलानी कालेज को सी बातावरन बनादबे को सबल्प लकै गए। इ सब भयी दिवाकर के काय अरू स्यवहार सी। बान मामाजिक पच्छ कू ती सम्हारी ही अपनी पढाई को हू ध्यान रखी। परीच्छा म अपने बाप की नाई अब्बल माय के सोन को बिल्ला पायी। बी ई म प्रथम माय क कालेज कू गौरव दिवायी सग म अपनी अरू अपनी मैया को नाम उजागर कर दियो।

ऐसी करनी कर चली

दिवाकर के इंजीनियर के कोर्स को पूरा करनेई चंदा के घर में बेटीबारेन के ग्राइव की तानी लग गयी। गाम बसोई नाबी मयता पहल ई आ गए। दिवाकर जैसे घर को अपनी कन्या देवे मे अपनी यक्ष अरु कन्या की सोभाग्य समझ रहे। दिवाकर जब मौ पिलानी म पढ़ रह्यो तवई ते बेटीबारे पीछ पर रहे। तब तौ उनते ई कह बई जाती के अबई छारा पढ़ रह्यो है। नोकगी ते लगन दओ। पर, अब नौकरी हू लगवे म देर नाहीं। चनाओ, अब चन्दा काऊ ते वा कहके मना करती।

धोरे दिना पाछे ही भरतपुर की एक प्राइवेट कम्पनी ते दिवाकर को जीफर आ गयी। दिवाकर ने रनजीत नगर भरतपुर म रहबो सिरु कर दिया। चन्दाऊ रनजीत नगर आ गई। अब दिवाकर के ब्याह की चरचा नई करबो समाज के मन म सदेह पदा करबो हो। दिवाकर के पास या सम गदवी प्रतिभा प्रतिष्ठा मब कछु हुतो। बेटी बारन की ऐसी लन डोरी लग रही क दो जा रहे अरु चार आ रहे। जाए देखिक हूँमी उछावे बारे कहते एक अनाए सो बीभार बारी बात है रही है। कयनी त करनी की बात आ गई। ठौर ठौर पे चारचा हैव लगी। अब मालुम परगी कयनी करनी की कछु कहते, "अजी हाथो क दाँत खाइवे के और होम दिखाइवे के जोर होय।" कछु कहत घर आई चच्छमी कौन को बुरो लग।" या तरिया जितेक म्हों वितेक बान सुनाई परई।

चन्दा के सामई कोई धन की पोटरी लेने आती, तो काई रूप की एलबम। चन्दा को आपबीती याद आई। बाप की गरीबी क दिन याद आए। बाके बाप को घर माही दिनरात कुचरके लगते और घर के बाहर गरीबी दख के कोऊ सुध म्हों बात नाय करनी। बाक ब्याह में ना का बाधा आई बाए मव याद हो। न तौ चकोर जसो भली, उदारमना, सादगोपस, सुहृदय होतो और ना बाकी ब्याह है पानी। बेटी बारन क दुख दरद को बाने भागी। बू या पीडा को समूल नस्ट कर देवे क तार्द अपने हिए म निहल कर चुकी।

चकोर के चल बमबे के पाछे चन्दा ने गाम गाम म महिना महल बनवा क रहेन लग क विरोध म मोगध खबवाई। दहन के ब्याहन को त्याग की वान कही।

सादगी सी ब्याह के नारे लगवाए। जब चंदा के सामई कसौटी के छिन आ गए। हाँ सिद्ध और योगी प्रलोभन म नाय आवें। साधक प्रताडना सौं भय नई खाबें। बान प्रलोभन दवे वारेन कू विनय के सम समझा दियो। ब्याह वम को नाम चलायवे कू जल्दरी है पर और आडम्बर विरया है।

कछू लोग, दिवाकर कू नौकरी देब बारी फक्ट्री के अघ्यच्छ के पास दबाव डरवायवे कू गए। अघ्यच्छ नै कह दई, "नौकरी बाप दया करके नाय दई। बाक गुनन नै अपने आप ल लई है। फक्ट्री जाइन करके बान फक्टरी प किरपा करो है। यतें बाकी गौरव नाय बढ्यो हमारी फक्ट्री की प्रतिष्ठा बढी है। कछू बेटी वारेन नै दूसरेन ते चदा पे पहुँच करवाई। चंदा नै सबकी सुनी। दखती रही। परखती रही।

चंदा के सुधे सुभाव कू देखिके कनुआ पडित बाके पास पहुँच गयो। लगी बीना विराट क माधे प चंदन लगायवे कू पहुँच गयो होय। कनुआ के एक छोरा और तीन छोरी। छोरा को ब्याह है गयो पर बू निकम्भो निकस गयो। एक छोरी को ब्याह है गयो। तीना छोरी गौर वण, सुदर, सुशील, सुसिच्छत पर विन पइसा सब सुन बारी बात है रही। विना पइसा के कोऊ महीऊ नाँय छूती। सुधे म्हाँ कोऊ बात नाँय करती। साची बात है दमडी के आगँ चमडी की का चल? गरीब समझ के कोऊ पास तक नाँय फटकन दती। काया अरु बगाली की रासि मिल जाए तो यो समझी करेला नीम पे चढ जाएँ। काम की बनवी टेढी खोर ही नई गुलर को फूल अरु गधा के सोग है जाएँ।

बू बिचारी दहेज कहाँ ते दँती। बडी छोरा बहू कू लकँ असग है गयो प्राइवेट नौकरी म चार पाच सौ रुपैया मिल हे। बात अपनी काम ल दके चलातो। कनुआ छोरा त पानी माँगतो तो बाकी छोरा बाते अमृत की कामना कर यो। कनुआ पडित ऊ हिन्दी साहित्य समिति म नौकरी कर यो। अट्ठावन पूरे कर चुको। नौकरी दवे वारेन की किरपा प जी रह्यो। बाकी गरीबी कू देखिके दो बरस और बढा दिए। या तरियाँ सी बिचारी गुजर बसर कर रह्यो पर या गरीबी मे हू बाकी छोरी मेहनत ते पढ रही। दूसरी लडकी रजनी नै बी ए कर लियो। तीसरी एस टी सी की टैनिंग कर रही।

रजनी पढ़वे के सग सग घर के सिगरे काम काज के धमरगज कू पीटती। अपने मैया बाप के दुख कू देखिके मन मसास के रह जाती। तन तोरिख काम करई मन लगाय के पढ ई। घर के बाम काज को कसौटी प कसक कचन है गई। हाँ गरीबी के मारे और काऊ बेटावार कू नाँय भाई।

कनुआ चंदा को नाम सुनिके ती चली मायी पर भीतरई भीतर धुकर पुकर है रही। साथ रह्यो कहाँ राम राम कहाँ टाय टाय। कहाँ राजा भोज अरु कहाँ गणु बचन करत घरो

तेली। कोऊ यो नाय बहु दे ई म्हीं अरु मसूर की दार। पुर ई समय कै, कै ओखरी म
सिर दियो तो मूमरन की का डर ओर बाजी याब ना करेगौं तो का घर नाय ग्रान
देगौ। कनुआ चदा के घर आ ही गयो।

चन्दा कनुआ सौं भली भाति परिचित ही। कनुआ के सेवा भावी सुभाव सौं
प्रभावित ही। जब बू पढई तबई ते कनुआ की सेवा भावनांन सौं परिचिन ही। पुस्तका
लय मे पुस्तकन कू लबो दबो ललक क युकि कै, हाथ जाँरि कै अभिवादन करवो,
हाथो हाथ पुस्तक देवो सवन कू भाती। कनुआ बतनभोगी की ठौर सेवा भावी अधिक
हो। चदा ऐस समाज सेवा, मास की तो हिए ते बेरी ही। जसई कनुआ बार घर पहुँचो
चदा नै विनम्रता सौं अभिवादन कियो। आसन दियो। मीठे वचनन सौं बोली—

‘कहाँ पडितजी कम आए ?’

‘आपके दरसन कू।’

‘दरसन तो आप जस महानुभावन के हैं। मैं तो आपके पाँमन की धूमि हूँ।
जो कछु हट्टु सौं आपक सहयोग के कारन हूँ।’

‘राम राम ऐसी चीं कहौं। आपको यस तो चारा ओर फल रह्यो है। हम
तो आपके गुन गाते गाते नाय ग्रधावँ।’

‘पडितजी ई सब आपको महानता है। आपके मन के भावन की परछाई ह।
हाँ तो अपने आइवे की नारन तो बताओ ?’

चन्दा के सद् ब्योहार सौं कनुआ की साहस बढ़ो। फिर बाने अपने मन की
बात सकोच सौं कही।

‘निवेदन ई है क अपनी ब्रिटिया रजनी के ताई ।’

‘हाँ हाँ पडित जी बोलो हिचक क्यों रहे ही ?’

‘निवेदन ई है क अपनी रजनी कू आपकी सेवा मे अरपन बरखे आयो हूँ।’

‘पडित जो पहलें यो तो बताओ आपकू अती पती कौन न दियो ? या
उत्तर कू सुनिकं कनुआ सन्नपका गयो। पसीना आ गयो। बाए अपनी ओकात याद है
आइ। अपनी भूल की अनुभव भयी के गलत आ गयो है पर तौऊ सम्हर क बोलो—

अती पती कौन दती। प्यासे कू जलासय कौन बताई ? पीडित कू पीरा को
ज्ञान कौन कराव। गज बाबरी होय। जाकी गज हाथ बू सौं रस्ता निवास क
सुदामा की भाति अपन जाग झारिका पहुँच जाए।’

‘पडित जी आप कहा कह रहे ही ?’

“अजी, फूल की गंध बंद नाय रहे। हवा के पथन प उडि के पहुँच। पू जी, प्रतिभा ग्रह यस जलासयन म तूमा की भाति तरै।”

“पडित जी हम तो भीत बोने है। एक छाटी सी इकाई है।”

“भगवान की आपण कृपा है। भगवान न आपकू सब बछू दियो है। हाँ आपके सामई तो मैं पासग म हू नाऊँ। बड़े सकोच के सग आयो हूँ। बुरी वावरो आपके सामई हू। माय जाच लेजी परप लेजी।”

“पडित जी सोने की परीक्षा काट के, घिस क तपाय के करी जाए, बृच्छन की फलन ते और याई तरिया सिगर पदारथन की परीच्छा छूक, दाखक, चाखके सुनिक करी जाए पर मान्स की परीच्छा बाके ब्योहार सों हाय। जीवन भीत लम्बी है। याकी लम्बाई कू ध्यान मे रख के निरखी पर्यो जाए।”

“हुलवाई अपने दही कू कब छटटी बताव। मालिन अपने बेरन नें कब छटटे बताव पर मैं ई त्रिसवास दिबाऊँ क मेरी बिटिया गरीबी म परो है। गरीबी मे ही वाने बो ए कियो है। आपनै जैसे तन मन और धन सों दिवाकर कू बनायो है मैंने हू तन मन सी बाए बनायवे म कोऊ कोर कसर नाय राखी।

पडित जी बटी की तो मैंने बछू नाय देखा पर मैं आपके ब्योहार सी भीत प्रभावित हू। मैं ई चाहू दिवाकर कू सुयोग छोरी मिल जाए। दो इकाई मिलके दोना परिवारन की समाज की ग्रह दस की कथान कर।”

“यही मेरी चाह है पर अब बात जागे कस बढ ?”

बात तो बढी बढाई है। छोरी छोरा की जोडी ठीक बन जाए। दोनो एक दूसर सों बात बरलै। दोना राजी है जाएँ बस फिर काऊ रुकावट नाए।”

चंदा की बात सुनते ही कनुआ क प्रान हरे है गए। तडफडाती मच्छी कू जल मिल गयो। बू उमगती उमगती घर लौट के आयी। घरबारी कू सिगरी बात बताई बाकी घरबारी के गरे बात नई उतरी। जो इ-जीनियरिंग करक आयी है बू गरीब की छारी कू काइकू अगेजगी।

दूसरी ओर और बेटीवारेन नें जब मालूम परी तो ब भजे दोरे चंदा क पास पहुँचे। अपनी बडाई के पुल बाधवे सगे। प्रलोभन दबे लग। चंदा नें सबन की सुनी पर वाने अपन मन म निहच कर लियो।

चंदा क सकेत पे भरतपुर म बिहारी जी के मन्दिर म पडित कनुआ अपनी बिटिया रजनी कू ले आयी। उतवे चंदा अह दिवाकर आ गए। चंदा नें रजनी त बात कगी तो रोम रोम खिन उठी। चंदा ग्रह रजनी क योग सी ठडक आ गई। अमृत

की सी बरमा ढ़ेबे लगी । रजनी के चेहरा ते भोरोपन झलकती । हँसई ती पून झर हे । रजनी अरु दिवाकर न एक दूसरे सौं बा न करी । दा नो एक दूसरे कू पाय के ऐस ल ग मानौं दोनो एक दूसरे कू भौत दिनान ते जानत हो । दिवाकर न रजनी सौ बडौ सालीनता सौ पूछी—

‘कहो रजनी हमार सग रहोगी ?’

रजनी न उत्तर दियो रजनी ती दिवाकर की सदा सौ पिछलग्गू रही हे । याए मुनिक् दिवाकर को मन भर गयो । चन्दा न हू पायो के रजनी अरु दिवाकर मणि काचन याग हे । लगी सोनो अरु मुहागो मिल रहे हाय । बाइ समे न दोना मन ते बध गए । बस देर रह गई ती अग्नि कू साच्छी करवे की ।

दिवाकर अरु चन्दा दोनोन न कनुआ कू अपनी स्वीकृति द दई । कनुआ अरु बाकी धरवारी की सुपनो साकार हे गयो अघे के हाथ बटर लग गई ।

ब्याह की पक्की होते ही ब्याह की तैयारी की बात चल परी । जिन लागन न सुनो ब भौचक्के से रह गए । जो चन्दा कू परखनी चाह रहे बिनकी आख खुल गई । बिनकी सका दूर हे गई । दरिद्र कू कुबर न गोद मे बठा लियो ।

चन्दा न कनुआ कू बुलाय के सिगरी बात समझा दई । ब्याह सादगी सौ हायगी । 25 बरानी हु ग । ना तासे वाजे की धूमधाम हायगी ना रोसनी अरु फुलझंडीन की चकाचौंध । एक-एक रुपया के नेग हु गे । अपनी भारतीय सस्कृति के अनुरूप सिगर काम हु गे । सादो हे ती सादो ही रहेगी । कनुआ न सब बातन की हा कर लई । अघे कू चइए ई दो आख सौ कनुआ कू मिल गई । लोगन न कनुआ ते कही ‘खूब तीर मारी पडित जी चन्दा प का जाडू कर दियो का मतर फूक दियो ?’ पडित जी सहज मुभाव सौ बोली ‘म नाय बजा रखी मेरी ती करतार बजा रखी हे ।’

जिन लोगन न ई चरचा सुनी बिनमे ते कछु चन्दा की नासमझी प हसे । कछु भाग के खेल प हँसे ।

ब्याह की सागी मुझाय के सब अपने अपन काम म लग गए । कनुआ न पीरी चिट्ठी भेज दई । चन्दा न भात नीतिव के ताई दो चार बयरवानी लई अरु भात नीत घाई ।

भात नीति के चन्दा ब्याह क दूसरे कामन म लग गई । अपन कहव क अनुसार सिगरे काम किए । ब्याह कू सादगी सौ सपन करायी जाए बाकी पूरी ध्यान रखी गयो । ब्याह सौं एक दिना पहल चन्दा न भात पहरौ । चाख न ता चन्दा अकली जनी बाकी कोई मा जायो भया नाओ । चोख न मामा पूफी क दो चार भया और दो चार गोपालपड क छारा भेज के भात पहरवायो ।

दूसरी छार ननुआ के घर हू याही तरिया रगत भगल सी काम चल रहे ।
ब्याह सी पहिले रजनी के रूप मे निखार लोइवे क बाए उबटन सी नवाह्यो गयो ।

रजनी की नाई दिवाकर क हू उबटने ते नवाह्यो गयो ।

दूह्हा बनके बरात कू जब दिवाकर घोडी प बठन चली तो देखतई
वनेओ ।

दिवाकर की बरात मे देई गिनती क पच्चीस बराती निकसे । बडी सालीनता
मो बेटी वारे के दरवज्जे पहुँचे । रजनी नगर सी चौबुर्जा तक भरतपुर की भरतपुर
म पहुँचे मे आधा घटा लगी होगी । सब जाने पहचाने लोग । कनुआ न खूब आवभगत
करी । दरवज्जे पे बिधि विधान सी तोरन भयो । मत्र पचिन नै बोलै । वयरवानीन नै
भगल गीत गाए । आरतो भयो गीत गायो—

‘वारे पमक की बरसगो मेह ।’

बारीठी के पाछे ब्यारू के मम गीत गाए गए मीठ-मीठे । मीठी मीठी गारी गाइ
गई—

‘राम रग बरसगो ।

रग बरस अरु इमरत बरस अरु बरस वस्तूरी

रग बरसगो ।

ऐसी गारीन नै सुनिकऊ बराती जमतें रह अरु मन ही मन मुस्करामते रह ।
फेरा परे । तबहु गीत गायो । जावो जीवन दरसन छठे फेरा की बतायो—

‘छठौं फेरा, अबहु बेटी बाप की’

चंदा न जसी कही वसे ही सादगी सी ब्याह सम्पन्न भयो । असभव सभव है
गयो तो कछू चन्दा अरु दिवाकर की सहजता प रीझ गए सराहना करवे लग । आदस
की बडाई करवे लग । अ ध बिषवासी निंदा करवे लग । पाम कुम्हाडी दत है मूरख
अपने आप । चन्दा न ब्याह कू सहज भाव मो स्वीकारो ।

रजनी धार्मिक परिवार सा आई धार्मिक मस्कारन म दरी । चंदा क रीति
नीति मय आदस व्यवहार को सग पाइक और निखर उठी । रजनी अरु दिवाकर क
एक दूसरे कू पायक एक दूसरे के प्रेरक बन गए । अच्छी जोडी बनी । एक दूसरे क
पूरक बने । रजनी मोतनता की प्रतीक अरु दिवाकर ताप और जाज सी भंडार ।
विचार और भावनान की सुखद सयोग भयो ।

रजनी क सात वार और नौ त्योहार । व्रत की ठौर प व्रत अरु उत्सव की ठौर
प उत्सव । बाबा राखे धम को हू निर्वाह करत भए रजनी को धार्मिक जीवन समुसार म
हू चलतो रही । दिवाकर कू भोजन करायक भोजन करवो, अपनी साम क माज कू पाम

दाबबो घर कू सफाई मौ रखबो, घर म सामान कू यथा स्थान रखबो दीपक, दियासलाई, सुई डोरा सदा एक स्थान प रखबो, अ धेरे म हू हाथ डारी जाए तू चाही भयो सामान आसानीतौ मिल जाए। ऐसी नीतिपरक जीवन देखिके पास परोस वार रजनी के काम की अरु चन्दा के भाग की सराहना कृत।

दिवाकर जा फक्ट्री मे नौकरी करतौ म्हा अपन काम घोर ल्योहार सी चमक उठौ। सामाजिक कामन म खूब हाथ बटातौ। परिवार नियोजन के कैम्प लगत बिनमे तीमारदारी खूब करतौ। एक पोत फक्ट्री की महिला क्लब नू विकलांगन कू उपकरण बाटे। समाज सबीन न निहत्थन कू हाथ, कट परिवारन कू टांग दई। दिवाकर नै हू अपनी और सो एक विकलांग कू हाथ दिया। फक्ट्री मे कोऊ सांस्कृतिक कार्यक्रम हौतौ तौ दिवाकर बिनम भाग लतौ। योग आसन की सिबिर लगी तौ योग सिबिर के सचालक मनहर कू पूरो पूरो सहयोग दिया। आए दिन अखबार म दिवाकर की नाम जातौ।

दिवाकर अकेलौ ही काम करतौ हाथ, सो बात नाही। जा तरिया जलासनन सी जल लके बादर बरसा करे याही भानि दिवाकर अपन सखान की मडल बनाम क समाज के दोन हीन पीडितन कू मदद करतौ। पिनकू मन्ताम और सान्ति दतौ।

घर माहि चन्दा अपनी सद्आचरन बारी बहू कू पायके निहाल है गई। दिवाकर की सहयात्रा कू एसी सहचरी मिली के बाक जादस रूप क देखिके भरतपुर बार बाकी सराहना करते। सेठ बरसाने लाल की मील प मंत्र सिबिर लगी बाम दोना की सवा देखिके सिंगरे जन धन धन कह उठे। जिन गरीब गुरवान की कोऊ नाथी बिनके दिवाकर अरु रजनी ह। बिनक मल मूतन कू उठाबी दवाई दारू देवा, रात कू बिनक पाम दाबबो जस कामन कू देखिके लीग लुगाई हिए ते घाभीस दते।

भरतपुर म जो नवयुवक मडल काम कर रहा बापे तौ दिवाकर, अरु रजनी नै जान डार दई। चकोर के यार राजेन्द्र कू दिवाकर न हर वाम म पूरो पूरो सहयोग दिया। दहेज प्रथा के विरोध मे मौहल्ला म नुबकड मीटिंग करबो अन्तरजातीय ब्याहन के लई प्रोत्साहन दबो, बाल ब्याह रूकियो, विधवान की ब्याह करबो जैसे कामन म दिवाकर अरु रजनी की पूरो पूरो सहयाग रहनी। ब्याह के दो बरस पाछ रजनी के पाम भारी है गए। चन्दा नै फल सी पहने फूल की अनुमान करक अपन घर माहि दाहद क गीत गबवाए।

‘पहलो महीना लागिए

बाकी फूल गह्यो फल लीजिए।

प्रभु की किरपा त मिशन की सुभ कामनान त अरु गुरुजनन क जासीमन सी रजनी क छोग भयो। मुडगेली प चत्क वासी की बारी बजाइ। चन्दा क घर म एक

कचन करत खरो

पूल से खिलीना आयी बू फूली ना समाई । बच्चा जब छे दिना को भयो तो छटी पूजी । रजनी नै नवजात सिमु कू गोद म लैके देवी देवतान ते धन सम्पत्ति की कामना करी, गीत गायके सीता अरु उरमिला को सुमरिन बियौ-

छटी पुजन्तर बहू आई सीता
 छठी पुजन्तर बहू आई उरमिला,
 छठी पुजन्तर कहा फल गानै,
 अनु माग धन मागै अपने पुरखन की राज मागै,
 वारी जडला गोद माग ।

धोरे दिनान पाछ बच्चा को नाम वरन सस्कार भयो । जच्चा के घर ते छोछक आयी या औसर प जच्चा नै अपने मया बाप के घरते जाए समान कू देखिके खुशी मनाई ।

मगलकारी गीतन के माहि चौक पुरामी पीहर ते आए भए कपडान कू पहर क रजनी के सग दिवाकर बठी । हवन भयो । नामकरण सस्कार भयो । छोरा को नाम निकस्यो प्रभान । नाम घर के अनुरूप रह्यो । अघेरी दूर भयो । घर म साच माच को प्रभात आ गयो । दिवाकर अरु प्रभात को सुखद मयोग होय । सबन नै चंदा अरु दिवाकर कू बधाई प बधाई दई । या औसर प जमन जूठन भयो । गरीब गुरवान कू दान पुन्न दियो । साझ क जुआ पूजन भयो जामे खूब लोकगीत गाए गए । खूब नाच कूद भए बयरवानीन न खूब अपने मन की निकारी । सबन न खूब मनखत मनाई ।

चन्दा की मनचाही पूरी भई । छोटे परिवार सुखी परिवार मान क भाग सराही । जच्चा बच्चा दोनो स्वस्थ हे । दादी और पिता तन मन ते खूब स्वस्थ हे । रजनी राज प्रभु को ध्यान करती भगवान कू धन्यवाद दती । अपने स्वभाव के अनुरूप व्रत रथोहार, उत्सव, पब विधिवत मनाती । कोऊ माह ऐसी नई जाती जाम रजनी व्रत नई रहती ।

सामन क पीछ भागै की महिना आयो । जमास्टमी क दिना चंदा दिवाकर और रजनी तीनो व्रत रहे । रजनी नै हाथ धोय क व्रत को सामान बनायो । धनियो जूजो । नाम वूरो मिलायो । पचाभृत बनायो । मिमी पाव बनायो । जल म नीबू शर नै सबकर मिलाय क च न अरु त्रिबाबर कू पिबाय क व्रत राग्यो । भगवान को मठप सजायो । प्रभु क ताई पूल माला गूथी । झंडी लगई । तिन भर तीनो प्रभात सो मलत रह । हुसत रह । हुमान रह ।

रात रेहियो प मधुरा त ज मण्ड को बायन ग्यो हाल मुन रह । बबऊ शरिवाधीम क मन्दिर त, बबऊ वृष्ण जमभूमि त वृष्ण को ज मात्सव को हान मुनायो

जा रही। रात के बारह बजते ही द्वारिकाधीश के मन्दिर में सब बने पूजारी अर्पण पंडित क मनोवाचन भए। नई मंडी भरतपुर के मन्दिर सांलियास में हूँ सांलियास वज उठे। लोग लुगाईं छारा छोरी जो रटियो प आनद ले रहे वे मन्दिर की धारा चल पडे। दिवाकर अरु रजनी हू हाथ म कटाग लक प्रभु को प्रसाद लवे कू निकस परे। दिवाकर की आयन मे नीद चुकि रही। तन मे उपवास की सिधिलता मन म प्रभु दरसन की लालसा। रजनी पीछ पीछे चली जा रही एक मोड प जम ही दाना मुटे दूसरी ओर सौं तेजी ते आते भए टुक वी चपेट म दाना आ गए। भयकर एकसीट्टे है गयी। दोना बीच सडक प ढेर है गए। लहू वह निकसो। सडक लाल है गई। दोनोन नै एक दम दम तार दियो। टुकवारी एकऊ छिन नाय रकौ। टुक ए लकै फरवट है गयी। दिवाकर अरु रजनी ना हिन ना डूले। सदा कू सो गए। जीवन म एक रह अखीर म अलग कैस होत। दोनोन के सामइ, परसाद कू लायी भयी कटौरा जीधा परी रह गयी।

भादों की कारी रात मे परमान लवे बारेन को जाइवा जाइवी है रह्यो। दसनार्थीन नै एक्सीडट की सुनी और अपन सामई दो लोग लुगाइन कू मरी भयी देखो तो कछ तो घबरा गए। कछू झपट सौ बचवे के मारै इत बितकू है गए। कछून प नाय रह्यो गयो। जोरे जायक आख गढ़ाय क देखो तो समयवे म नैकऊ देर नाय लगी। अपनी ही वस्ती रनजीत नगर को जानो पहिचानो दिवाकर हो। देखते ही हूवके बक्के रह गए सग म रजनी कू मरो देखक और हू व्याकुल है गए। रनजीत नगर की एन भली जोडी अचानक चल बसी। जामाठे को दिना अरु एक नही दो दो जवान मोत। देखव वारे काप गए कछू भगे भगे वाके घर गए। वाकी मया ते जाय कै कही तो बाकी मया कू विसवास नाय भयो। पाच मिनट पहलेई तो दोनो बात जलग भए। ई कने है सक वू प्रभात कू लक भाजी गौरी तिराह प पहँची। मासन व ठठठ जुर रहे। बाफ मन धक धक कर रह्यो। भीर कू चीर क भीतर जाय कै दखी तो देखती ही रह गई। जाख फार कै रह गई पछार खाय क गिर परी। ताई ममै वाके प्रभात कू एक परोसन नै सम्हारो। चंदा रुशन करवे लगी 'हाय मेरे लाल, हाय मेरे बेटा अरी मेरी वहू अरी मेरी विटिया' कहकै विलाप करव लगी। अरे! मरे छोना मोय कौन के सहाये छोड गयो, मरी फूल सौ सुकुमारी तू कितकू चली गई। हाय राम ई का है गी अरे! विधाता तनै ई वा कर दई। तोय एमोई करनी तो एक कू तो छोरतो या प्रभात प दया करतो। अरी मेरी वहू या प्रभात ए कौन प छाड गइ-ई कौन ते मया कहैगो। जर बेटा! मोकू अपन सग ल जातो। मैं तो ताई कू देखिके जी रही अब कौन के सहरे जीऊ गी। जरे निठुर विधाता तनै ई वझपात कसी कर दियो। हाय राम! मोय ई पती होतौ तो म बटा तोय ची भेजती। मैं ही जा जानी। अब मैं कौन कू दखिके जीऊ गी।

चंदा के विलाय कू सुनिके सुनवे वार हू भूभाटन ते रो परे। मिगरी वस्ती म हाहाकार मच गयो। मंदिर जाइवो, परसाद लाइवो व्रत खोलिवो सब भूल गए। सजन की भूख प्यास उड गई। नीद उचट गई।

लोग दानोन की लागन कू लर, चंदा क घर आए । चंदा कू बड़ी निट्ठन सा लाए । चंदा क घर म लाग लुगाईन क ठठठ जुर गए । चंदा दहाड मार मारक राती रही । बाए जितक समयाव हू वितकइ विद्वत है क रुदन करनी । रुदन चीं नाय बरती बाकी ती दुनिया उजर गई । लका लुठ गई । प्रभात विचारी एक साल की ती हतद थी । कछू नाय समझ पा रहा । तू ती इ समझ रह्यो बाक मैया बाप चादर तान क सा रह है । बाए ई का पती क व ऐस साए है जा कबळ उठिग ही नई । तक्रडा म वयर जाक घर रात भर बठ रह रात निवामवा भारी पर गयी ।

भोर हीत ही काठी कपकन ती प्रवध करक दानान की सग सग जरयी उठाई । जरयी उठत समे चंदा अरयी त तिपट गयी । कबळ एक कू पकरनी ती कबळ दूमरी कू । बाकी ती दोनो ही प्राब ही । बयरन न चंग बड़ी निट्ठन त अरयी त छुड़ाई । बाक एकन समझायो 'चन्दा ये अब तेर ना रह । तर हीते ती तोत बोलते । तरी इतकई दिना को सग ही । धीरज घर । चंग कैसे धीरज घरनी अरथीन क जान ही और जोर-जोर त रुदन करव लगी । पछाड खायक गिर परी । अछीर म अचेत है गई । त्रन की भूथी प्यामी ताप रात भर को रुत । हातत घराब है गई । किरन नसिग हाम पास म ही ही । डाक्टर बुलायी गयी । बड़ी निट्ठन त नब्र सभ्हारी । पातल चढाई गई । चन्दा बेहास परी । बयरवानी बाक आस पास बठी रही । प्रभात कू सभ्हारी बाकी नानी न ।

दिवाकर अरु रजनी कू फू कि क जब चंदा क दरबज्ज प आए ती मालुम परी क चन्दा की बातल चड रही हैं । भौन स भया बाए सभ्हारवे कू रुव गए । रतजीत नगर की बस्ती म मातम छा गयी । कई घरन म ती बूल्ह तक नाय जरे । जरते ती कैसे जरने विनकी बस्ती की एक एमी जारी चल बसी जो सबक दुख ददन म आँ ही प्राग रहती । चंदा कबळ नक आखन न टिगटिमाती ती बड़ी बूढी बाक प्रभात कू बाक गर त लगा दती । बू फिर आखन न बंद कर लती । साब तक या ही क्रम चलती रहो मोहलना बारे हू बारी बारी सी सभ्हारत रह । साझ समे जब बाए होस आयी ती दिवाकर जोर रजनी की हाथ धक लगा देई डाक्टर नै मुक्तेरी मना करी क बुदिया अत्र चित्लाव नई रोब नई । बयरवानी हू बाए मुक्तेरी समझा रही । पर बू समझ नाय पा रही । बाके पेट मे ती आग लग रही । घर मे ते एक सग दा ज्वान मौत । विक्साग की मानी दोना बसाबी टूट गई हाथ । सबर बाधती ती कस बाधती । पच्चीस बरस पहल चकोर के चल बसवे क पीछ दिवाकर कू छाती ते लगाय क सबर बाधो । अब ती दुरभाग्य सी दूसरी चोट और हू जबरदस्त परी । कस धीरज घरनी । रोती रही रोती रह, तब लो रोती रही जब लो दुमारा अचत नाय है गई ।

मोह्लावारन न रात कू बारी बारी त चन्दा कू सभ्हार की त करी । चंदा क नातदारन की और बुरी हाल ही । चंदा क पीहरवार यारे परसान ह, रजनी क पीहरवार यार । विनकू सबर बधाबी और हू कठिन पर रह्यो । चकार क मार

राजेन्द्र ने बड़ी टहल चाकरी करी। जाबूँ जैसे जैसे सम्हारी जा सक ही ब्रमे ब्रम सम्हारी। दो दिना पीछे चन्दा की हालत सही भई। बाके रोवे ते फिर हालत बिगर जाती। खायाबो पीबो वान बिल्कुल छोड रायी। दो दिना म्नुकोज की वोटल आर चढी। समझाय बुझाय क बाबू चाय पानी दियो। मुक्तेरो चन्दा कू समझायो पर घाव ए तो समे ई भर।

12 दिन पाछ दोनान के वारह वामन किए। जो नातेदार आए वे अपने अपने घरन बूँ चल दिए। वे अपने काम बाज कूँ छोडिक् बध तक रहते। सब अपने अपने रामन ते चगे। घर मे रह ई चन्दा अरू एक बरस की नाती प्रभात। दुभाग्य की दूसरी बिस्त मानके चन्दा न प्रभात कूँ गरे ते लगायो। विधि की विधान मानक परिस्थितीन सो समझौता कर प्रभात कूँ बनाइवे की कमबोर मवला न निहच कियो। जीवन की गाडी कूँ फिर ते हिम्मत बध के जागे बढाव की निरनय कियो। वान चरबति की मय दुहरायी। प्रभात कूँ दिवाकर की नाई पारवे की दुः सकल्प कियो। चबोर अरु दिवाकर की आकस्मिक दुघटना की मृत्यु सो ई निरनय कर तिया के चन्दा लौटिक अऊ जाइगी। चकोर क अधूरे कामन कूँ प्रभात सो पूरे करावेगी। अऊ जाइक वैज्ञानिक ढग सो खेती करगी। गाम मे जलख जगावगी।

चन्दा की घोरे दिना पीछे पिसन है गई। बू बीमा ग्रेचुटी अर बम्पूटमन की मवा लाख रुपया पायके अऊ गाम पहुँच गई। बाने 10 बीघा जमीन खरीद के एक फारम बनायो। वैज्ञानिक ढग सो खेती प्रारम्भ करा दई। बाई फारम प बुक्कुट पालन मूत बत्ताई पापड बित्ताई, बासी बागजन के लिफाफे बनबाई मसाले पिमाई जस कई काम प्रारम्भ कर दिए। गम की बैयरवानी कूँ काम मिल्यो। झगरे दूर भए। गरीबी गाम ते दूर हैवे लागी। चकार जा ठौर कूँ वाचनालय अर पुस्तकालय कूँ द गयो पू खोल तो दियो पर मरी सो परी। बागे अच्छी अच्छी पोथी अखबार मँगाय क जान डार दई चन्दा ने। सिगरी गाम चन्दा के चेताएत चेत गयो। नइ चेतना आ गई। अऊ जादस गाम बन गयो।

प्रभात कूँ गाम क स्वस्थ वातावरण मे पहल तन ते स्वस्थ कियो फिर बाके मानसिक रूप सो सुवल कियो। मम सम प बाके बाबा गप अर मया के करमन की कहानी सुनाय क करम करध की प्रेरना देती। कच्छा आठ तक अऊ म पढाई करायक जाग पढव कूँ डीग के ताइ भेजी। चन्दा न अपने जीवन के अनुभवन की निचोर प्रभात कूँ उँडेनी। पढवे की सही तरीका, लिखिबे की उचित ढग अपनी बात कूँ निर्भीक हैक कहवे की कौसल सबकी ऐसी अभ्यास करायो क प्रभात दिवाकर कूँ हू पीछ छोड गयो।

प्रभात साइकिल सी मवेरे डीग पढवे जाती। घापर कूँ लौटिके जाती। चन्दा कूँ प्रभात की चिंता लगी रहती। कबअ दुघटना की घामका, कबअ छोरान की सराई

बन्धु छोरान नै उडाय क ल जाय वारे बाबाजीन की याद आ जानी । जब तक नू लौट क नाय आ जातो । चिन्ता मे दूबी रहतो । तीन मीतन नै बू जरजर कर देई पर वान हिम्मत नाय हारी । हाँ प्रभात कू जाये म देर है जाती तो मन बाकी धुकर-पुकर जरूर करब लग जाती । सही वान है दूध की जरो छाछ कू फूँक फूँक क पीव । बू धापर कू अलव्याई गया की नाई रंभाव लग जाती ।

डीग क स्कूल म प्रभात की नूती बोलिबे लगी । हर भत्र म प्रभात ही प्रभात दिखाई परब लगी । प्रभात कू प्रतिभा मिली, दिवाकर अरु रजनी त पर चंदा क वातावरन नै बाकू सान प चढाय क निखार दियो । किताबी पढाई सी ज्यादा करके सोझयो, अनुभव बटारयो चंदा न ई सिपायो । बाकी चतुराई कू देखिके बडे-बूढ कहते, 'चंदा तेरो नानी तो अपन बाबा और बाप मोनो क सस्कार लके आयो है ।' एक पोत डीग क स्कूल म छात्र सभ के चुनावन क सम प्रभात कू जब छडे करब की बात आई तो चन्दा कू दिवाकर के चुनावन की सिगरी चित्र ध्यान मे आगयो । कीऊ दूसरी होती तो बाए बबऊ छडो नाय हौन देती । पिछले आघात की ध्यान करक रोक लती । पर वान भावी आसका कू निकास क प्रभात कू स्वीकृति द देई । प्रभात नै अध्यक्ष पद की चुनाव लडो । अपनी प्रतिभा काय अरु व्यवहार से एसी जादू कियो क प्रभात नै विजय पाइ । प्रभात लौनी ध्यो क लौदा की नाई छाछ म उभर क आ गयो ।

एक दिना प्रभात और दिनान की भाति अऊ सो डीग जा रह्यो । साइकिल सडक के किनारे किनारे चली जा रही । बाए कार अरु बसन प पडे भए नम्बरन कू पढव की चाब हो । जो कीऊ वाहन जागे ते आती तो बाकू नम्बरन न पढतो । पीछ ते आतो तो नम्बरन कू पढतो । बा दिना एक कार बाके पीछ ते आइ । फर सी जागे निकस गई । धोरी दूर जाय के बार पल भर कू रुकी । बाबै बाबे ते एक मान कू बाहर डकैलतो देखी । डकका दब बारन नै सोची पाप बटो हत्या मिटी काम बनो । पर विन ई ना पती मरते भए सुग्रीव कू बचाव कू राम ठाडे है जो सुग्रीव कू बचाव क वाली कू मार्गिग । प्रभात नै बा कार की नम्बर पढ लियो । वान कार सी डकैलत भए आदमी कू देखई लियो साई वान पडल तेज मारे । पास पहुँचो तो देखी आदमी छून सी लथपथ है रह्यो है । गुंडा छुरा भौक के चले गए । बू मान्स अबई चेत म हो वान इतबई बतायो क बू बैक सी साठ हजार रुपया लेक आयो गुंडा बाक रुपयान नै लक भाग गए है । प्रभात न अपनो कुरता फारक लह बहब की ठौर प कमक पट्टी बांधी । सयोग सी दूसरी ओर डीग त साईकिल त थाव वारे अपने पार कू बाए डीग लाइबे की काम सौपिके बाप साईकिल सी डीग टेलीफोन एवमचज पहुँची । बार नम्बर बताय क बार की रग बताय के टेलीफोन दिल्ली राड प कामा, अरु अलवर राड प नगर कू करा दिए । सग म पुलिस कू बायरलेस हू करा दियो । या भाति चतुर प्रभात न गुंडान की पूरी नक्कबंदी करा दइ । गुंडा कामा तक हू नाय पहुँच पाए नक्की रोक दियो । सफर कार दिकिके कामा की पुलिस न कार अरु बारवारे हिरासत म ल लिए । बदमासन क छक्का

छूट गए। हक्के बक्के रह गए। बिन बदमासन नै मुक्तरी सफाई दई नम्बर मिलायब की कही पर पुलिस लीटायक कार कू डीग थान मे ल आई। पुलिस ने कामा ते डीग कू टेलीफोन कर दियो, व जान टलीफोन करायो है बाकू डीग थान म ल आव । आधा घंटा म कार डीग थान म आ गई ।

प्रभात बाई ठौर प वंठा गखो । कार के आदमी जसँ ही कार मे त उतर बिनकी सकल मूरत गुडान की सी लग रही । बिनकी पहिचान करब की बात वही प्रभात सी । प्रभात न साफ साफ कह दई आदमी व हलै कै नाएँ या बात कू नाय कह सकूँ पर ही इतेक जरूर कह सकूँ व कार बुई है ।' वान कही, 'नम्बर प्लेट बदल दई है कार की तलासी लई जाए ।' गुडान नै प्रभात कू आँपई आँखन म डरायो पर प्रभात ती ऐसी टापी की नाती हो जान निरभीकता सी अपनी बात कहवो सिखायो । बाई सम कार की तलासी लई गई । जा नम्बर की प्रभात नै टलीफोन करायो व प्लेट गद्दी व नीचें छुपी मिल गई और मिल गए 60,000/-रु साठ हजार रुपया । पुलिस की बन परी । गुडान के होस उड गए । हाथ जोरि क पाँयन मे गिर परे । गिडगिडावे लगे । घुसर-घुसर शरम्भ हुई । प्रभात सब समझ गयो । वू घटना कू मँजिल पे पहुँचाव के ताई चटा की नाइ चिपक गयो । प्रभात की चतुराई की सब बडाई करवे लगे । चारो ओर प्रभात की चरचा सुनाई परी ।

वितकू जा साइकिल बार बार कू वा घायल कू सोपिकेँ आयो वू वा घायल कू बस सी डीग अस्पताल ल जायो पर वू अचेत परी । बाकी इतेक लहू निकस गयो के वू मरनासन है रह्यो । बाकूँ बोतल चढ रही । वू घोल न सकओ । डाक्टर बाए बचाव की चिंता म दाड धूप कर रहे । बाकूँ खून की दो बोतलन की जरूरत ही, पर कोई द ना पा रह्यो । प्रभात ती अपने दल बल के सग ही । सबसे पहलें प्रभात नै लहू की बोतल देब की कही । लहू दान करय कू दूसरे छोरानेँ कही तीसरे छोरानेँ कही फिरती लन लग गई । बिनकू गुरू मानसिंह नै औरन कू रोक क पहली नम्बर अपनी लगा दियो । डाक्टर हेरान हे गयो । कौन त ले कौन ते नई । लहू की घुप मिलवाय क दो बोतल लहू चढायो गयो । रात भर घायल अचेत रह्यो पर सबेर वू चेत मे आ गयो । वान अपनी अती पता दियो । बतायो, म बूडली गाँव की रहवे वारी हू बक त साठ हजार रुपया लकँ आ रह्यो । भरतपुर म कुम्हेर बस स्टण्ड के चौराहे पे एक सफेद कार रबी । कार वारेन न बस के किराए म ही डीग तक लाइब की बात कही । मै बैठक चली जायो । कुम्हेर तब ती मात गुडान नै कछू नाँय कही । पर कुम्हेर क निक्सते ही मोत पूछताछ करब लग । मन मुक्तरी बना करी मोप कछू नाएँ पर बिभ्रँ मोकूँ जवरन पकरक 60,000/-रुपया छुपा लिए । मै रोव फिफाय लगी ती अऊ क पास मोम द्वारा मारकँ तौर कार म ते धक्का दक डार गए । एव साइकिल वारे छारा न अपनी कुरता फारक मरे घाव प बाची । बाके पीछ का भयो माय पतो नाँए । बात पूछी, 'अगर व गुडा बाके सामई लाएँ जाए ती वू पहिचान लेगी व नाय ? वान छापी ठोक क हाँ

कर लई। बाकू ई ऊ वताय दियो के बाके 60,000/-रुपया बच्चे म जा गए है गुंडा पकर लिए है। याए सुनिक बाकी जान म जान आ गई।

चंदा न अपने नानी के माहसिक काम की कहानी सुनी तो गब सी फूल उठी। बाकी रोम-रोम खिल उठी। वान प्रभात कू अपनी छाती सी लगा लियो। वाली, ब्रगा धत्र है तन अपने क्तब्य की निवाह करके मोकू आस्वस्त कर दियो है व त् दिवाकर की नाम उजागर करयो।”

पुलिस गुंडान कू सवेरे अस्पताल पहिचान के ताई लाई। घायल हालत म हू बुडली गाय बारे न दोनो गुंडान कू जरू ड्राईबर कू पहिचान लियो। वाई दिना अखवार म खबर निकसी 'एक अग्यात मान्स के 60,000/ रुपया छीनके अरु घायल करके दिल्ली जाबे बारे गुंडान कू पुलिम नै बहादुरी सी पकीर लियो है। कामा पुलिस थानेशर कू या काम के ताई आई जी न एक प्रमाणन द दियो। डींग त् टैनीफोन करव बारे कू एक ध्यो कौ पीपा जरू पाच सी रुपया की इनाम दियो गयो। पर वा प्रभात जरू डाक्टरन की कहू नाम नाओ जित्रे अपनी चतुर्गई अरु सूचबूच सी अपने प्रानन की बाजी नगाय क जारदार भूमिका निभाई।

हा डींग स्कूल के प्रिंसीपल न प्रभात के माहसिक काय की प्रायना स्थल प भूरि भूरि प्रससा करी। बाकू स्टैज प बुलाय के बाकी पीठ अपथपाई। अखवार म दुसरे दिना पूरी ब्योरा दियो गयो। मवन कू असलियत मालुम परी क प्रभात दौड धप नइ करती तो कछू नई होती। प्रभात की बहादुरी की सूचना वलक्टर कू मिली तो वाने राज्य सरकार सी वीर बहादुर बच्चान म बाकी नाम लिखवायव की भरपूर कोसिस करी। वलक्टर कू या काम म सफलता मिली। 26 जनवरी कू वीर बहादुर बच्चान की सूची मे प्रभात की नाम पहले नम्बर प आयी। चन्दा की खुशी की ठिकानो ना रह्यो। बाए लगे माध्या की पहली सींगी मिल गई हो।

26 जनवरी कू प्रभात जब राष्ट्रपति सी पुरस्कार लव गयो तो चन्दा संग गइ। डींग स्कूल की प्रिंसीपल नारायन स्वरूप हू संग गयो। एक भव्य समारोह म राष्ट्रपति न वीर बहादुर बच्चान कू माला पहराई। पुरस्कार दियो। फोटू खिचे। टी वी पे बिनकी रील बनी। रात कू टी वी प प्रभात कू भरतपुर की जनता न देखी तो लगे जस बिनकी छोरा ही इनाम पा रह्यो हाय।

जब प्रभात दिल्ली ते लाट क आयो तो डींग म बाकी जुनूम निकसी। 'प्रभात की जय जयवार नई। पून माला पहराई। ठीर ठीर प दरबजे बनाय क स्वागत कियो गयो। याही तरियाँ अऊ गाम म स्वागत कियो गयो। मवन न इ स्वीकारो क या सबकी खेय चंदा कू है जान प्रभात कू ऐसी अच्छी सिच्छा दई है। काऊ काऊ न तो ई कह दई क ऐसी सबला नारी ही तो एक नई जनक प्रभात बन सक। नव जागरन जा सक। प्रभात के ताई चंदा के पास बहुतरे बधाइ पव जाए। चन्दा कौन कौन कू

जवाब देती। बान अचवार म वधाई देवे बारेन कू आभार प्रकट करके अपने सहयोग की कामना करी।

बात टह्राई तक नाय रही प्रभात की ब्रह्मादुरी चतुराई अरु सहासिक नाय की कहानी टलीविजन प उतारवे के ताई एक टीम अऊ गाम आई। टी वी प प्रभात क घर की चित्र रिकाड कर्यो गयी। फारम प त अपनी दादी क पर छके साईकिल ते चलबी दरसायो गयी। अऊ ते डीग की सडक प चलबी पीछे ते सफेद कार कौ आइबी, कार के नम्बरन कू प्रभात मी पढिबी घायल कू कार त ढकेलबी, प्रभात की घायल के पट्टी बाधबी साईकिल से दौरे क टलीफून करबी, कामा के पास कार कू पकरबी, गुडान की डीग मे पहचान कराबी गुडान कू जेल भेजबी प्रभात कू पुरस्कार मिलिबी ज्या की त्यो सिगरी कहानी टलीविजन वारेन न रिकाड करी फिर याकू इतवार के दिन दिखायो गयो। घटना की सही स्थिति बान अरु आखिन क माध्यम से मन के कोने कोन म समा गइ। सबन के म्ही त निवस परी मा स बी चाम नहीं काम प्यारी होय।

प्रभात स्कूल की पढाई पूरी करक डीग के कालेज म भरती है गयो। दादी अरु नाती गाम म कहवे कू अकेले हे पर हर घर क सदस्य बन गए। चंदा की फारम अरु चंदा की घर सबके ताई खुली। सबके दुख दरद चंदा क दुख दरद ह। चंदा ने प्रभात कू एस साच म दारो क प्रभात-प्रभात की बला सी ह ज्यादा सुखद लगवे लगी। कालेज म प्रभात की कथनी करनी ए देखिके प्राफेसर हू अपन छारा छोरीन न प्रभात की नाई बनायद की साचत। सब कहते प्रभात की दादी ने वाकू पढायी ही पढायी नाए वाकू गुनायो ह है।

प्रभात की कथनी करनी को एक उदाहरन देखिके ती और हू दग रह गए। डीग की भारतीय कला सस्थान ने एक पीत कॉलेज म निबध प्रतियोगिता कराई। निबध की बिस रपो गयी मानव धम। डीग कालेज म सबरे 10 वजे की सम दियी गयी। प्रभात रोटी खायके दादी से पूछि क सबरे साडे नो बजे डीग कू चली। कालेज के पास बान एक बुडढी दखी जो सडक क सहारे परी परी कराह रह्यो। कोऊ साईकिल बारी छोर वार्म टक्कर मार गयो। बिचारी प्यास क मार भबरा रह्यो। पानी पानी चिल्ला रह्यो। पर कोऊ कू इतेक टम कही ही जो बुडढे की आवाज प ध्यान द ती दो घूट वाकू गरे म डार द ती। हर एक छारा कू निबध लिखिब की पर रह्यो। सब साईकिल प हुबा है रह। सपन न लग रह्यो दस बजे पीछ पहुच ती फिर बिन कोऊ बमरा माहि नाय घुसन दयो। सबन न मानव धम पे निबध जो लिपनी ही।

प्रभात न बुडढे कू देखी बाकी आवाज सुनी। बू एनदम साईकिल से उतरी। वाकू घोटन त लहू बह रह्यो। बाने रुमाल से बुडढा क लहू कू पीछो। बुडढो पानी कू चिल्ला रह्यो। बू पास त कही त पानी लायो। बुडढे कू पानी पिवायो। बाकी जान म जान आइ। प्रभात बाए साईकिल प बठाय व अस्पताल तब ल गयो। अस्पताल म भरती करायो ता पाछ कालेज पहुचो। ता सम माडे दस बज गए। जस ही बू कालेज पहुचो परिवीच्छकन ने वाकू बमरा म नाय घुसन दियो। बात बह दई सम निकस

गयी है। बाने ररिचीच्छवन कू सौची सौची बान बतार्ई पर नियम म बंधे परिवीच्छव मुट्ट खंच गए। प्रभात विचारो निबध लिखिबे ते रह गयो। पर बाए सन्तोस ह्री क बाने अपनी मानव धम निभायो है। बुड्डे कू सुख दियो है। वू बंठी बंठी टुकुर-टुकुर देखतो रही।

धोरी देर पाछ प्रिन्सीपल साहब आए। वे प्रभात कू भली भांति जानते ह। प्रभात कू बाहर बठो देखिके पूछी ' ह्यो बंठी है ? निबध प्रतियागिता म भाग चो नाथ ल रह्यो ? प्रभात ने देरी हैवे को सिगरी चिट्ठा कह सुनायो। प्रि सीपल मुनिक द्रवित ह गयो। बाने प्रभात को पीठ थपथपाई। सब छोरा निबध लिखिके बाहर भाए। प्रभात कू लेट लतीक बहके हंसी उडाते भए फर साइकिलन ते निवस गए।

निबध की कारी जची। चौथे दिना परिनाम सुनायो गयो। परिनाम मुनिक सब अचरज म आ गए। प्रथम स्थान प्रभात कू मिल्यो। सब छोरा हा हुल्ला करवे लगे, साब प्रभात ने तो निबध लिखो ही नाहें। प्रि सीपल न सबको बात सुनी फिर सबकू सात करके बात बही ' छात्रो मानव धम बिस पै आपन तो निब ध लिखी है। प्रभात ने निबध के बिस कू धपने जीवन म उतारो है। कालेज क ग्राहर गैल मे परे बुड्डे कू कोऊ टक्कर मार गयो। बाने पानी कू आवाज लगाई पर कोऊ न मानव धम नय निभायो। प्रभात ने बाकू पानी ही नई पिवायो बाकू अस्पताल हू पहुँचायो। या तरियाँ सौ प्रभात ने मानव धम जीवन मे उतारके दिखायो। पीथीन म जो कछू लिखो है रट के मुनाव कू नाएँ जीवन म उतारवे कू है। जीवन मे नई उतार सके तो पढबो लिखिबे विरथा है। जैसे धी दूध म रमी भयो है। ऐस ही ईसुर घट घट बासी है। सब व्यापी है। ऐसै कहवे बारे तो भीत हैं पर दूध मयक लोनी के लौदा ए निवासवे बारे बिरले हैं वही काम प्रभात ने कियो है। मानव धम मे आचार पहल विचार पीछ है। याको निवाह प्रभात ने कियो है।

या बात कू मुनिक सबके म्हो लटक गए। जीभ तरए त लग गइ। साँच कू आँच कहा। कछू कुसमुसाते रह गए होठन सौ बडवडाए पर हिए त स्वीकारी के प्रभात न मानव धम निभाय के साची निबध लिखी है। जो छोरा टक्कर दक गयो वू हू बा समे म्हाई खडो। बान सिगरी राम कहानी सुनी तो बान हू अपने मन मे कछू विचार लियो। गाठ बाँध लई।

चन्दा न या घटना कू सुनी तो प्रभात कू गरे ते लगा लियो। अब चन्दा प्रभात की ओर सौ निश्चित है गई। बाए सतोस है गयो क बाकी काम पूरो भयो।

अब चन्दा की बुढापो बडी तेजी के सग आबे लगो पर भत म साहस, उमग भर उस्ताह मे काऊ कमी नाही। आखिरी दिनान मे बान अपन फारम व एक कला विद्यालय खोती। बस तो म्हा सरकारी स्कूल हती, पर बान अपन ढग सौ स्ूल

छर्चा को सवाल ही पर दान दातान की कमी ना बताय क चंदा न करव दिवायो । चंदा के पास पइसा दरसवे लगी । दानदाता आवे लग । व अपनी नाय सराहव ल । जिनको पइसा चंदा न स्वीकारी ।

काम ओर बढव लगी । बालिकान कू घरेलू उद्यागन की ट्रेनिंग दई जाव लगी । अऊ गाम म गलीचा बुनवे, आसन बनाइव द त मजन सावुन, सफ, तल, अमू दारा जसी दनिव वस्तुन कू बनाइव की ट्रेनिंग दई जाव लगी । कछू महिला चंदा कू सहयोग दवे अपने आप आव लगी । बछून न बालिकान व जीवन निर्माण के ताइ अपन कू समरपित कर दियो । धीर धीर बालिका विद्यालय की सरूप फलती गयो । अब बाकी नाम बालिका विद्यापीठ है गयो ।

दान दातान न अपने अपन नाम क बालिका विद्यापीठ म कमरा बनवा दिए । एक दान दाता न दस बीघ जमीन की चाहर दीवारी करवा दई । एक न विसाल दरबज्जी बनवाय के बाप माट ओखरन म अऊ बालिका विद्यापीठ लिखवादियो काम इतेक फल गयो के चंदा वाए सम्हार नाय पा रही बाकी बुद्धायो जु आ रह्यो । याही सौ वाने एक ट्रस्ट बना दियो । वान सब काम ट्रस्टीन कू छाडि दियो । लगनशील, इमानदार सवाभावी ट्रस्टीन के हाथ म काम सौप के चंदा न छुटगी पाव की प्रायना करी पर एसी कैसे है सक औ । ट्रस्ट न चंदा के सामई ई बात राखी क वू आजीवन विद्यापीठ की सरक्षिका रहेगी । चंदा नाम त नई काम त सरक्षिका ही । वू कउपिन के अनिमान सौ दूर कमवादी बन रह्यो, पर वान कही वू तो पकी पान है नदी किनारे की रख है न जान कव चलदे बागो या काम कू सम्हार के बन की साम लई ।

सयोग सौ भले मांस विद्यापीठ कू मिलत रहे । बालिका विद्यापीठ की काम जोर अच्छी चल निकती । प्रधानमंत्री न राष्ट्रीय साक्षरता मिसन की एलान कियो । दस कू साक्षर करवे के ताई गाम गाम म प्रौढ सिच्छा की विगुल बज उठी । स्वच्छिक सस्थान कू केन्द्र चलायवे के ताई न्योती दियो गयो । अऊ बालिका विद्यापीठ कू 300 केन्द्र मिले । 15 लाख रु सालाना मिलिवे लगी । बालिका विद्यापीठ न 300 केन्द्र छोले 30 जन शिक्षण नितियम बनाए जहा प्रौढन कू पुस्तकालय बाच नालय खेल कूद पढवे की सामग्री रखी गई । बालिका विद्यापीठ की काय क्षेत्र बढती गयो ।

धीर धीर प्रभात न बी ए कर लियो । चंदा चाहती प्रभात बजानिक तरीकान त खती कर बालिका विद्यापीठ व काम कू देख । बाकू ट्रस्ट की सदस्य बना दियो । चंदा की बात कू मानक प्रभात या काम म लग गयो । चंदा जब धीर धीर तरीर त जर जर है गई । इन्दी सिथिल है गई । बुझाप की बीमारी सबकी बुरी बीमारी होय । आखिन सौ दीखरी कम है जाए । मुनिवा मद पर जाए । जनक राय घर ल । खानी सुरी वारे । हाथ पाव चार मग नाय द ।

जान जनम लियो है बाकी एब ना एर दिना तो भाज ही है। बहान अनब बन जाए। बाऊ काऊ बीमारी ते बाऊ काऊ बीमारी त चली जाए। सदा की नियम है जो फून यिलो डे बू एक दिन मुरझायगी। जरब वारी दीपक बुझ जरूर है। छाइ वात चन्दा क सग भई। और दिनान की भाति सबेर चार बज चन्दा जस ही बिबार खोलिब कू उठी। उठत ही गिर परी। पावन नै बाझ नाय सम्हारी। चन्दा हू नई समझ पाई व ई वा भयो। बाकी प्राधन क भागि अधेरी छा गयो सिर म चक्कर जाव लग पाव लडछडाव लगें। वान प्रभात वू घावाज दई। प्रभात दौरा चली जायो पूछो दादी का भयो?" दादी कू उठायो पर पावन त जम सत निक्स गयो हाय। प्रभात नै दादी सूत्र उठाई पर पावन न बाझ नई सम्हारी। दादी बराहती भई वाली, बटा माय घाट प लिटा द। प्रभात नै बाबू गादी म लकै घाट प लिटा दियो। इत बित सौ सिगरी बासिका दोरी दोरी चली भाई। दादी अम्मा वू बहा है गयो? अध्यापिका हू शकठीरी है गई। मातुम परी चन्दा वू लकुआ मार गयो। चतुर प्रभात समझ गयो दादी की सध्या निकट आ मद्र है। दीपक बुझ बारी है। पछी उडब वारी है।

बारी देर म ही चन्दा की हालत बिगरेब लगी। गाम व लाग-लुगाईन न सुनी तो सब काम छाडिब चल आए। लाग लुगाईन की ताती लग गयो। लाग-लुगाई पूछबे लगी। चन्दा कौन कौन कू वा उत्तर दती। प्रभात न डाक्टर बुलायो। डाक्टर न ज्वाब द दियो लकुआ की गहरी जापात भयो है।

चन्दा न हू धीमी घावाज म बही, अब बुलायो जा गयो है। जाइवे के छिन जा गए हैं। जानी परगो लाब प्रिय समाज सविका कमवृत्ति क दरसनन वू ट्रस्टी आ गए दुनिया उमड परी। चन्दा नै हाय जोरि व ट्रस्टीन सौ बही, बिद्यापीठ तिहारे हाथ है याम ईमानदार मानस रखियो। सबन न समझा दीजी कोऊ धपने मग लव नाय जाय सब कू न्हाई छोड जाए। 'बाबे प्रभात के माऊ इसारी कियो, 'ई तिहारी गाद मह' प्रभात नै सुनी ता रा परी। चन्दा बोली बटा रा मत य सब ट्रस्टी तरे मैया बाप है इन सबन की सया करियो। नाम सौ पाछे मत हटियो। भाग्य, सस्कार अरू भगवान कम ब खेल हैं। परेसो भयो भाजन हू म्हाँ म नाय जाय। चली हू जाए तो म्ही चलाए बिना खायो नाय जाए। भगवान हू तो कम वू अवतार लें। अजु न वू हू तो कृष्ण न कम की स दम दियो।

चन्दा न ट्रस्टीन सौ फिर हाथ जा रि क एक वात कही देखी, या प्रभात की ब्याह काऊ पढी लिपी मुयोग्य छारी सो कर दीजी पर या वात की ध्यान रखियो क ब्याह सादगी सौ बिना दहेज वा हाय।' धीर धीरे चन्दा की घडी निकट जावे लगी। अब बाकी जीभ लडछडाव लगी। वान प्रभात कू इसार ते बही, मर निकट आ'

प्रभात बाबे ज़ीरे जा गयी चंदा न चाकी हाथ छपने हाथ म लियो अरु टूटत नए
आखरन म धीर धीर इतक कह पाई—

जब तुम आए जगत मे, जग हामी तुम रोइ ।
ऐसी करनी कर चली, तुम हाँसी जग रोइ ॥”

या बात वू रहती कहती चंदा मौन है गर्द । जाँख फटी की फटी रह गई ।
पछी उड गयी पिजरा खाली परी रह गयी ।



ब्रज भाषा अकादमी की प्रकासन योजनान में ब्रज शतदल' पत्रिका की नियमित प्रकासन तो हुई, ग्रन्थन की माला हू अपने सौंदर्य सों राजस्थान कू सुरभित कर रई है, ई प्रसन्नता की बात है। राजस्थान के जाने माने ब्रजभाषा के कवि अरु साहित्यकार श्री गोपाल प्रसाद मुदगल को ब्रजभाषा उपन्यास अकादमी को नयी प्रकासन हे। याकी सीसक 'कचन करत खरो' सूर के पद की सुरति करावै अरु पारस पत्थर को सदभ देय हे। उपन्यासकार नै नायिका चन्दा कू पारस के रूप म चित्रित करयो है। बान जाकू छुम्री है वार्द कू सोनी बना दियो। सग मे में या उपन्यास कू खरो कचन पा रह्यो हू। मुदगल जी की पारस रूपी लेखनी नै याकू कचन बना दियो है, ऐसी माय लग रह्यो है।

कचन करत खरो मध्यकालीन लोक भाषा के अभाव की पूर्ति—

राजस्थानी जैसी लोक भाषा अरु ब्रज जैसी साहित्यिक भाषा मे पद्यमय काव्य सृजन की जितेक लम्बी परम्परा रई है अरु काव्य साहित्य जितेक बिपुल रह्यो है बितेक गद्य साहित्य नाय रह्यो। वार्ता साहित्य (84 अरु 252 वस्तुन की वार्ता आदि) अरु पुरानन या योग वसिष्ठ जसे प्राचीन ग्रन्थन के अनुवादन तकई ब्रजभाषा को गद्य साहित्य सीमित हो। याही सों व्यक्ति व्यजक निबन्ध लघु कथा, व्यंग्य विनोद उपन्यास जैसी गद्य विधान को लोक भाषा अरु मध्य कालीन साहित्यिक भाषान मे अभाव रह्यो। या अभाव की पूर्ति ऐसे उपन्यास ई कर सकियें।

हिंदी मे आचलिक उपन्यासन की एक लम्बी परम्परा रही है। श्री फणीश्वर नाथ रेणु जैसे लेखकन ने अपने अपने छेत्र की सस्कृति अरु भाषा को पूर्ण प्रतिबिम्ब लिए भए जो उपन्यास लिखे बिनसों श्री रेणु ने हिंदी साहित्य मे अपनी अलगई पहचान बनाई। बेई उपन्यास आचलिक भाषान म लिखे जाते तौऊ बिन की उत्कृष्टता अरु पहिचान अलग ई हौंती। है सक बिनकी ख्याति इतेक नही है पाती है सक बिनकी प्रचार व्यापक छेत्र मे नही है पाती किन्तु भावनान की तीव्रता अरु लेखनी की धार तौ बेंसी ही रहती।

कचन करत खरो समसामयिक आचलिकता की सौंदर्य *

स्यात इन सब दृष्टिकोणन सौ मुदगलजी नै आचलिक उपन्यास हिंदी म न लिखि के आचलिक भाषा म यानी बाई अचर की भाषा मे लिखिवो अधिक पसंद कियो। या उपन्यास की दो विससता विससे उल्लेखनीय हू। एक ती याकी आचलिकता अरु दूसरी सम सामयिकता।

राजस्थान के ब्रजभाषी अक्षर म परी भई एउ छारी की प्रेरक जीवन यात्रा उपयास म चित्रित है। बाकी साधना, कर्मठता, प्रतिभा, लगन, त्याग तपस्या कोई, ई परिनाम निक्की के वान अगली तीन पीढीन तक अपनी तपस्या की जगमगाती ज्योति की उजियारी रेखा बिखेरी। या अक्षर के सामाजिक रीति रिवाज, समस्या, अरु अच्छाई बुराईन की उपयास मे भली भांति बरनन भयो है। पैरी प्रसंग "राजस्थान की छोरी" से सुरू भयो है। या तरिया तो प्रारम्भ भई मुद्रगलजी ने राजस्थान अरु ब्रजभाषा के अटूट सम्बन्ध की सरस सरल अरु सफल वाकी कराई है।

आंचलिक प्रभाव के सगई उपन्यास माहि समसामयिक स्थितीन की बडों अच्छी प्रतिफलन है। राजनतिक गतिविधि, सामाजिक कुरीति अरु परम्परागत रूढीन क कारन महिलान कू मिलिबवारे बघ्ट, रूढीग्रस्त समाज की दबियानूसी मान्यतान अरु उन रूढीन की तोरिबे को माहम दी अकुर फूटिबो इन सवन की सूधो साँचो प्रतिबिम्ब याम दखिब कू मिलै है। याके सगई आधुनिक युग क आगमन की झाकी समाज सुधार की संभावना याम उजागर भई हैं। लेखक जासावादी है या ही धी निरासावादी अरु धूमिल चित्र प्रस्तुत नाय किए हैं। कुरीतीन क निवारण अरु रूढीन क सुधार से समाज सुधारक अरु लगनशील मांस का तरियाँ सों धुध प्रविचारे म उजियार की किरण फला सके याकी अक्षरदार तानो वाकी उपन्यास म पूरी गयो है। चन्द्रा अरु चकोर की अतजातिब व्याह नवयुवक मडल सों वाकी समबन, कालेज जीवन अरु ग्राम राजनीति के सडयप के हीते भए हू लक्ष्य की की और प्रगति सब कछू यथाय अरु आदस की समन्वय करत भए चल है। अखीर मे कर्मठता सकल्प अरु निष्ठा का जीत होय। जेई लेखक को सदेस प्रतीत होय।

सञ्छेदार कहावत अरु आंचलिक मुहावरन को सटीक गुम्फन—

कथानक के सग सग चरित्र चित्रन अरु सिल्प हू सृजनात्मक उत्कृष्टता लिए भए हैं। लोक भाषा की टटकापन तो सती मे होनी नुभामिक हवो ई अी। लेखक न ग्रामवासीन के मुख से कही जावे वारी सञ्छेदार कहावन अरु आंचलिक मुहावरन को सटीक गुम्फन कियो है। कथानक के चरित्रन म व्यक्ति अरु देस को मजीब बरनन करक लेखक न चित्रायमता पैदा करी है। सनी की ये बिसेसता या उर शस कू एक अच्छे उपयास की पक्ति म ला बठार। एक उल्लेखनीय बात ई है क कथानक म सुभाविक गति है जासी पाठक उक्तताव नाहैं। सुनयता क सुखद भोर के पाछ दस म जो कछू है रह्यो है वाकी झाकी राजस्थान के ब्रजभाषी अक्षर म का तरिया परी हू याकी दसन या उपयास म स्वच्छ दरपन की भांति देखी जा सक। या कृति की स्वागत ब्रजभाषी जनता राजी राजी करगी याम तकऊ सन्द नाए। उपयास के लेखक तो अभिनन्दन क पात्र हैई, कथा साहित्य के या सुमन से ब्रजभारती को अचन करब वारी अकादमी हू जो याकी प्रकामक है, बघाई की पात्र है।

निदेशक, भाषा विभाग—राजस्थान

जब बबलू काँठ गद्य रचना पे कोऊ काम करे तो अपन ताई जोखिम मोल ले। इत्तफाक ते बू जन कवि हू होय तो ई जोखिम औरऊ बढि जाय। ई सुखद अक्षरज की बात है कि मुद्गल वा जोखिम कू झेलते भए स्वय कू ऊपर राखवे म सफल भए हैं। वे उपन्यास म कविताई के चाव सौ मुक्ति पायके गद्य वे सुभाव कू बनाय राखवे मे गद्यवारकी दायित्व निभाव सफल भये है।

व्रज बासीन के भाव-लोक की सफल चित्रन—

“कचन करत खरो” उपन्यास कू मुद्गल आचलिक उपन्यास कहै हैं कथा सूत्र डोग, अऊ भरतपुर अरू पिलानी तानू फले भये हैं। व्रज अक्षर की जीवन सैली या उपन्यास म बखूबी ते उभर क आई है। जाते आचलिक रचना घम की कथानक अरू चरित्र चित्रन मे एक अलग पहिचान बरबस मन कू भानदित करे है।

या उपन्यास की महत्व जा कारन ऊ आकी जाइगी क बू राजस्थान मे व्रज भाषा माहि लिखी भयो पली उपन्यास है। जसी सरल सीधी सादी व्रजभाषा है वसे ही सरल सीधे व्रजवासीन के भाव लोक कू मुद्गल उजाार करवे म सफल भये हैं। अगर मुद्गल की नजर ब्यौरान अरू स्थूल प्रसंगन सी हटिक भीतर की जोर धूमती तो चंदा अरू चकोर रजनी अरू दिवाकर क नाम रूपकन म काणू नए सकेत भरे जा सक हे किन्तु लेखक की ध्यान वा माऊ कम गयी है। अरू बिना दाव पच क सीधे अरू सरल ढंग सी अपने कथा सूत्रन कू अरू वाम सास लते, मधर्प करते लोगन कू स्थापित करी है। अगरचे धूतता, घोखाधडी, चरित्र हीनता कू ई यथाय न मानो जाए तो या उपन्यास की यथाय मानवता के साक्षात की यथाय रूप मानो जा सक।

धोरे मे भौत फहनी उपन्यासकार की अनिरिक्त सूत्र

आदमियत की जो बतनी लेखक ने या उपन्यास म गडी है बू मन बदल अरू मानवता म जास्था की बतनी है। समस्या-अंतरजातीय ब्याह, दहेज प्रथा, पिछडीपन अरू गरीबी ही हैं। एक खास अथ म इन समस्यान पे आज की पाठक इतनी उद्गीव नइ होनी चाहै तौऊ मुनप्यता के रिस्ते अरू समाजिन सद्भाव के सदन म ये समस्या बर-बेर उठनी रहिगी। चंदा के माध्यम सी या समूचे उपन्यास कू लेखक ने सघप गाथा के रूप म चित्रित करनी चाहै है। आदमी प विपत्ती आव जिनसौ बु टूट जावै तबई कोऊ दायित्व प्रेरना, कोऊ कतव्य बाए सघप के ताई सतत त्रियासील करदे है। चंदा माना याही विचार की प्रतिरूप है अरू जा तरिया बू कवहु न थकवे वारे जीवन के

प्रतीक रूप में चित्रित है पाव । जि सफलता लेखक की निर्विवाद है, पर तीन पीढ़ीन की कथा उठायवे में उपयास कू जा वहत्तर कलेवर की दरकार होय है यासों क वाम चित्रित चरित्र अपनी समूची आकार अरू विवास पाय सब बावे ताई या उपयास में कम अवकास बच पावे है । दिवाकर अरू रजनी के चरित्र व्यक्तित्व ती लेखकीय वाक्यो वतीन के अधिक आसित रहे हैं । कम छत्र सों विनकी तस्वीर बछू कम अभर पाई है । वू एक पीढ़ी की व्यक्तित्व अरू कथा सूत्र को विवास है । लगभग बुई सिल्प के स्तर प दूसरी पीढ़ी के व्यक्तित्व व कथा सूत्र को पर्याय है गयो है । यासों औपन्यासिक ढांच कोऊ सिल्प कौशल वाकी विसिस्टता कू रेखाकित नाय कर पायो । लेकिन ईऊ हाय क अतिरिक्त सिल्प कौशल के चाव सों या उपयास की सादगी बचो रह जाय है जो अखीर तक या कृति की ताकत ऊ है । पर ध्यान राखवे की मूल बात जि है के धाडे में भीत कछू कहकै लेखक ने अपने औपन्यासिक कौशल की छाप पाठक के चित्त में परोक्ष रूप सों छोड़ी है वू प्रससनीय के सग-सग लोक में रची पची भाषा में बखूबी ते उतरवे के कारन अनुकरनीय एव प्रेरणाप्रद बन गई है । मैं याकू लेखक की औपन्यासिक कला की अतिरिक्त सूझ नाम देनो ज्यादा उचित समझू हू ।

ब्रज के ठेठ आचलिक जीवन की सांस्कृतिक निचोड

ब्रज अ चर के सांस्कृतिक परिवेस की सफल निचोड मुद्गल या उपयास में जा भावना लोक की सृजन कर वाम विनके चरित्र, सदभाव अरू सेवा भाव के प्रतीक बन जाए याम कोऊ बुराई नाय । रचना में बुराई तबई आवै है जब सदभाव अरू सदासयता परिस्थितीन के साक्ष्य सों वचित है जाय है । दरअसल चरित्रन में पनपे द्रन्द्र अरू परिस्थितीन की विसमता सों जब सदासयता उग है तब वाकी प्रामाणिकता असन्निग्ध होय है । मुद्गल भावुक चित्रन के चलते या माऊ सटीक ध्यान दे है । लेकिन पाठक याए नोट कर क मुद्गल की जि पली उपयास है अखीरी नाए अरू ब्रजभाषा में गद्य रचना की कठिनाई कू जो लोग समक्ष है । ब्रज के लोक मुहावरे सों जो लोग परिचित है लेखन में अरू बेऊ रचनात्मक लेखन में रचना सदभ में लेखक की कठिनाई कू चीन सक हैं । अलबत्ता जि कहवे की जरूरत समधी जाइगी क मुद्गल न यदि इन तीन पीढ़ीन क सघप में राजनीतिक यथाथ प्रस्तुत करिव में सफलता पाई है यामे दो राय नाय है सक । लेखक ने ब्रज के ठेठ आचलिक जीवन विसयक कछू सांस्कृतिक परिवेस के लालित्य की निचोडऊ या कृति में प्रस्तुत कर्यो है । यथा ब्याह के औसर के मंगलगीत भात गीत, बढार के औसर प गायवे वारी रसीली गारी भात नौतबी दाहद के गीत याके सगई ब्रज के अनुपम पव, होरी के रसीले रूप की एक बलकऊ लेखक ने याम दिखायवे की कोसिस करी है ।

दु ख अरू पीडा मेऊ ब्रज की मिठास भावुकता अरू सरसता ब्रज छत्र की अपनी निजी विसेसता है । मुद्गल के चरित्र दुख अरू पीडा कू सहकऊ वाए बनाए रखै है । स्यात मुद्गल कू हू यई सर्वाधिक प्रिय है । येई वू आस्था है जासो खोट मित्यो

'कचन' खरी है उठे हैं पारस सौ सरक मे आयक कोऊ हू धातु कचन म बदल जाए है लेकिन खरी कचन हू काऊ के सरक मे आई वस्तु पे अपनो आलोक बिखरे है । मुदगल के चरित्र चाहे चन । हो या चकोर हो दिवाकर हो या प्रभात हो ऐसीई आलोक बिखरवे वारे चरित्र है ।

हिंदी उपन्यास मे सस्थान के माध्यम सौ मुनस्बता के निर्माण अरू परामश की आस्था रही है । प्रेमचंद को 'सेवा सदन' सस्था खुलवाम, फणीश्वर 'लोकनाटय" कू मच वनीहैं । मुदगलऊ कही याई आस्था सौ जुडके विद्यापीठ की निर्माण करै हैं । ट्रस्ट बनावें हैं प्ररू बेर बेर ईमानदार अरू सेवा भावी लोगन को गुहार हू करै हैं । दरअसल भाज जो कछू है इतेक क्रूरूप, इतेक विकृत है के बाके ऊपर कोऊ रचना ठाडी करनी है ती वा विकृति सौ ऊपर उठिनो होयगी । मुदगल अपने या औपन्यासिक सस्कार मे बाई विकृति सौ ऊपर उठवे की कोसिस मे है । पाठकन कू काऊ स्तर प वू अव्यावहारिक लग सक है । हा आस्था के स्वर प बाए जीवे की ललक मुनुस्यता की वसोटी है । मुनुस्यता म जिन लोगन की आस्था है वे मुदगल के सग हू गे ।

किस्साकोताह जि है के राजस्थान की धरती प गोपाल प्रसाद मुदगल ने देस के पाच करोड लोगन की जवान ब्रजभाषा म उपन्यास लिखकी ब्रजभूमि के मुहावरे, लोकोक्ती की जग जग सफल प्रयोग के सग ब्रजभूमि की आचलिक जन जीवन, धात प्रतिधात को सफलता पूवक 'कचन करत खरी' मे उतारवे की जो प्रयास कीनी है बाकी मे तागीफ करू हू ।

ब्रजभाषा अकादमी ने स्थायी महत्व को काम कीनी ह ।

में या उपन्यास के लेखन के ताई मुदगल कू साधुवाद देऊ अरू ई मान क चलू हू के जि दिनकी अखीरी उपन्यास नाय अरू राजस्थान माहि ब्रजभाषा म पले उपन्यास के पाठक की नाए स्वागत करू हू । राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी ऊ याके सग भारी प्रससा की पात्र है के इतेक अल्प समय मे बाने ब्रज गद्य की विभिन्न विधान मे दूँड के लेखक उत्पन्न कीने है अरू नये बिसयन प नये साच के सग लिखवायी ह । 'कचन करत खरी' याको ज्वलन्त प्रमाण ह । ब्रज भाषा अकादमी जा बात के लप सुधीजन की प्रससा पाती रहेगी क बाने रास्ट्रभाषा के समानातर ब्रजभाषा मे साहित्य की विविधविधान कू प्रकाशन देके स्थायी महत्व को काम कियौ ह । अस्तु ।

अध्यक्ष हिंदी विभाग जोधपुर विश्वविद्यालय जोधपुर

11421
9/5/82

‘कचन करत खरी’ उपन्यास की कथानक ब्रज सस्कृति को पूरी तरियाँ उजागर करिबे वारी है। भैया गोपाल प्रसाद मुद्गल ने या उपन्यास माहि हमारी आजु की समस्यान के सरूप के सग सग बिनकी साची समाधान हू प्रस्तुत करि दीनी है। बिन इन समस्यान के अतीत, वतमान अरू भविष्य तीनों सौ जोरिके व्यापक बनायी है, समाज की नई नई हलचलन को जोतो जागतो दिग्दसन करायी है।

लेखक को सबसे जादा ध्यान सामाजिक कुरीतीन प प्रहार करिबे प रह्यो है। हमारे देस को खोखली करबे वारी कुरीतीन की दीवार याम एक सग अर्राइने गिरि परी है। जवला नही जाइबे वारी नारी को लेखक ने पूरी तरियाँ सबला सिद्ध करि दीनी है। उपन्यास की नायिका चंदा प विपदान के पहार प पहार टूटि परे परि बु धरने कम पय त नेकऊ टस ते मम नाइ भई। चंदा अपने जनम त लके जोवन अरू बुदापे तानू जेधियार को पीके उजियारी लामती रह्यो।

कम अरू भाग्य को द्वन्द या उपन्यास माहि बडो वारीकी अरू खूबी सौ दरसायो गयो है। अत मे कम की मौन मुखरित भयो है। चंदा अपने आचरन ते ऐसी मारण दिखामती रह्यो जापे चलिके ते भाग की ठोर करम की महिमा सबक घट म बठि जाइ। चंदा को ऐसी ऊजरी आदस है जो भारत की नारीन को अपने पामन प टाडी करिके कम पय प जरूर अग्रसर करयो। जि उपन्यास मानुस जीवन की सार बठाइक बाय पाइबे की सृधी साधी राह दिखाइबे वारी है।

उपन्यास की पूरी कथा या अ चर के कथावत मुहाबरेन के तान बानेन ते बुनी गई है। मोइ जि कहिब म नेकऊ हिचक नाइ कि जि आचलिक उप न्यास ब्रज लोकोक्ति, मुहाबरे अरू सबदन को भरौपूरी पिटारी है। या रोचक उपन्यास के सिल्य अरू सवादन माहि ब्रजभाषा की माधुय अरू लालित्य सहज रूप सौ छलक्यो पर है।

28 फरवरी 1983 को कामवन के विहारी समारोह के औसर प ब्रजभाषा के सबल यम धी युगलकिशोर चतुर्वेदी ने ब्रजभाषा गद्य माहि साहित्य रचिब की जो चुनौती दई बु मुद्गल जो न सिरमाध लई अरू वाइ दिना बि ने या उपन्यास लिखिबे को बीडा उटायो। ब्रजभाषा गद्य माहि कहानी, रूपक रेखाचित्र सस्मरन रिपोतजि, यात्रा बनन, निब घ जह बातों साहित्य तो खूब लिख्यो जाइ रह्यो है परि उपन्यास लिखिब को मुद्गल न जो की जि अनुठी प्रयाग कितनी सफल है याय पढ़िब बार ही बतायिने। मरी समय य तो जन-जन की जीवन सुफल करिब की सदेसी अब वारी नीकी करनी को जि नीकी उप न्यास है।

16, आदस कोलानी भरनपुर (राज०)

श्री गोपाल प्रसाद मुग्दल सो ब्रजभाषा की साहित्यिक जगत सुपरिचित है।

‘कचन करत खरौ’ उपन्यास सो श्री मुद्गल ने एक औपन्यासिक कचन’ की रचना कीन्ही है। कला की चमचमाहट चाए कम होय, परि खरोपन पूरी है। मोय आसा है के मुद्गल जी आगामी उपन्यास मे कलात्मक चमकऊ लाइगे।

‘कचन करत खरौ’ माहि लेखक ने चन्दा की सिगरी जीवन कथा कही है अरु कथा की द्वितीय पीढीन तानू तानो बानो बुनो है। यति उपन्यास कथात्मक नेरटिव ज्यादा है गयो है, चित्रात्मक कम। किस्सागोई सो लेखक पात्रन के अन्तमन को उत्खनन कम कर पायो है ध्यान कहानी कहबे ‘फरि का भयो’ पर रह्यो है। अत मनोवैज्ञानिक गहनता की कमी उपन्यास कू पारम्परिक बनाय दे है।

लेखक ने पात्रन के व्यक्तित्व, प्रतिमानन अरु ढाँचिन कू ध्रुव निश्चित कर लीनो है। दू आदस चरित्र या Ideal Types की सृष्टि करनो चाहे ह अरु बाम बाय पूरी सफलता मिली है। चन्दा केन्द्रीय पात्र है जाके आदर्शिकरण कू लेखक ने बाय दुघटना क माध्यम सो विधवा धनायके वाके समूचे जीवन के दायित्वन को नरतय दे दीनो है जात बू अपने तपस्वी जीवन सो निभावे है अरु बू उत्तरदायी गहस्वामिनी की भूमिका की भव्यता कू चरम सीमा पर पहुँचावे है।

घरेलू जीवन के विम्ब अरु बातचीत मन कू मोहित कर ले है—

पर, औपन्यासिक कचन कू दुघटना की सहारी लेनी जरूरी नाय हो। नाटकीयता क काज ग्रामीण जीवन क द्वन्द अरु बदलते विकृत होते सवध-परिदृश्य अरु विसंगतीन म गहरे उत्तरब बिनकी चित्र देबे ते ई उपन्यास मे भास्वरता आ जाय अरु नवीनताऊ। तथापि जा रूप म लेखक न चन्दा अरु वाके पति वाकी सतान परपरा कू प्रस्तुत कीनो है बू म्वाभाविक अरु सहज लग है। दूसर या रचना म पात्रन म ग्रामीणता के भीतरे प्रामाणिक रंग ढंग है। बिनकू लेखक बग (चन्दा कू छाड़के) या टिपिकल पात्र बना सके हो अरु जि बौसल मामूली नाय। जाके काज लेखक म जा पात्रन के मुभाव की परिवेच्छन चइये बू लेखक म है। तबई बू चन्दा चकोर, चौखेलाल, रग्यो पंडित राधा जैसे पात्रन की चित्र दे सकी है। एसी है कं नगर जीवन क समानांतर अरु सग म वछु विन्दुन प (भरतपुर प्रमग) टकराती भयो ग्रामीण चित्रानन, प्रकृति अरु घरेलू जीवन के विम्ब एव बातचीत क वांक अन्दाज मन कू माहित कर ले है। वस्तुतः लेखक की सबाधिक सफलता पात्रन की अवधारना (Conception), बिनकी ग्रामीण छवि क चित्रन म मिली है।

ठेठ ब्रज बोली को पूरी रस वास्तविक जीवन की सरस झाँकी—

अरु लेखक प्रचलित में बाई गाम की ठेठ ब्रज बोली को पूरी रस ल लक प्रयोग करे है। अकेली ये प्रसंग उपन्यास कू पठनीय बनावे कू पर्याप्त है। चोके आधुनिकता में ऊँचे डूबे अतिशिक्षित, प्रशिक्षित महानगरीय पाठक जब या तरियाँ की रचनान कू पढ है तौ बू ई विरोधी रंग उभर है गोया जम्स जवॉयस को 'यूलिसिस' कापका को दुग' पढ़वे के पाछ आधुनिक जीवन की जटिलता सौ ब्याकुन सूरदास, भीरा, देव खाल, अरु गोपाल प्रसाद मुद्गल कू पढक लोकभाषा की अकृत्रिम बोली बानी पे मुग्ध है रह्यो हाय। या दृष्टि सौऊ गोपाल प्रसाद मुद्गल की जि रचना कलात्मक प्रयोग की जटिलता सौ रहित है, पर वाम प्रकृत, वास्तविक जीवन की ऐसी सरस झाँकी है के वाय पढते समय सहज मनुष्यता को रूप अरु रस चभरे है।

अकादमी प्रबन्ध कौसल की प्रससा करू हूँ—

मैं समझू हूँ के श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल ब्रजभाषा के साहित्य में उपन्यास की कमी केँ पूरी कर रहे हैं। अतः मुरु के प्रयत्नन को महत्व है जाय है। ब्रज भाषा में कविता की परंपरा अद्वितीय हैं पर वामे आधुनिक विधान को अरु सुभागरभ है रह्यो है। या दृष्टि सौँ डा० विष्णु चंद्र पाठक अध्यक्ष राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी को मैं प्रससा करू हूँ क बिनाकी प्रेरना अरु प्रबन्ध कौसल सौँ ई आसा बध रह्यो है कि ब्रज भाषा आधुनिक अरु समकालीन सजन एव चित्रन के छत्र में अन्य भारतीय भाषान की प्रतिस्पर्धा में पीछे नहीं रहेगी अरु अपनी अनंत सजनात्मक छमता के वारन ब्रजभाषा एक बेर पुन बूई स्थान महत्व अरु महिमा एव मूल्यवत्त प्राप्त करेगी जो मध्ययुग में वाय प्राप्त ही।

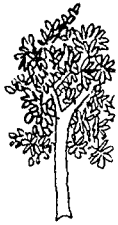
राजस्थान की अंतरात्मा डिगल अरु अरु पिगल की घूप छह सौ बनी है। अतः राजस्थान को आन्तरिक न्यक्तित्व राजस्थानी अरु ब्रज भाषा एव अय बोलीन के साहित्य अरु संस्कृति सौँ समृद्ध हायगो। श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल की जि उपन्यास याई दिसा में पली कदम है जो स्वागत योग्य हत।

गंगाप्रयाग ड/25 जवाहर नगर जयपुर।

11421
915692







‘कचन करत खरों’ उपन्यास में राज की सस्कृति क् भैया गोपाल आसाद मुद्गल नें पूरी तरियाँ उजागर कीनीं हैं। लखक न उपन्यास माहि हमारी आज की समस्यान क सरूप क सग सग बिनकों साघों समाधानऊ परतुत करवे कौं अतीत, यतमान अरु भविश्य क ताने धानन क सग उल्लखनीय प्रयास कीनीं हैं। समाज की नड-नड हलचलन कौं जीतौं जागतौं दिग्दर्शन याकी अपनी एक अलग चिन्सता हैं। सामाजिक कुरतीं एव कम अरु भाग्य कौं द द या उपन्यास में बड़ी वारीकी अरु खूबा सो दिखावौं हैं। पूरी कथा राज अचल क कहावत महावटेन क ताने बान त दुनी भड हैं। माय आज कइय में नैकऊ हियक नाय कि जि आधुनिक उपन्यास राज-लाकोवित अरु महावटेन कौं भरतौं-पूरौं पिटारौं हैं। त्रिलप अरु सवादन में राज भाषा कौं माधुय अरु लालित्य सहज रूप सो छलववौं हैं।

मोहन लाल मधुकर, भरतपुर